कुरिन्थियों की ओर वापसी

कुरिन्थियों की ओर वापसी

करिश्माई आंदोलन का बाइबल-सम्मत निरावरण

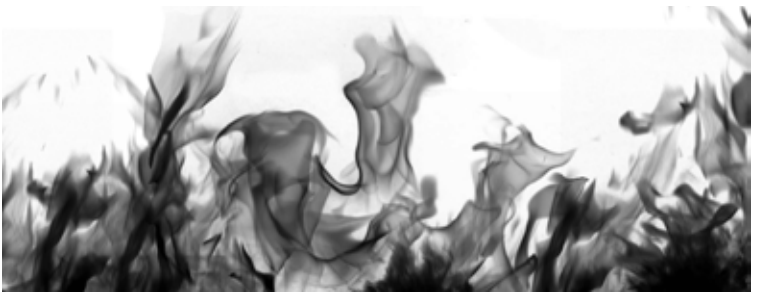

जे. हेरोल्ड टेलर

ALETHIA Publications

कुरिन्थियों की ओर वापसी

By J. Harold Taylor, Copyright ©2017
First Hindi Edition 2017.

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording, or any information storage and retrieval system, without permission in writing from the publisher.

This book is strictly meant for Bible Students, Teachers, Pastors, and Believers' personal use and edification, and is not to be used for any profit-making purpose. It is available free in print as well as in PDF format upon request by sending a request at the following email address. The views in this book are not necessarily the views of any other person, distributor, or the publisher. The author is solely responsible for his views that are strictly based upon the revealed Word of God i.e. The Holy Bible.

Questions, suggestions, and corrections for the accuracy and improvements for this book will be greatly welcomed by the author. He can be reached by an email to:
goxltp@gmail.com

All Scripture quotations are from the Authorized King James Version (KJV) of the Holy Bible containing the Old and New Testaments. The verses (text) in Hindi language are quoted from THE HOLY BIBLE, IBP © Copyright by the India Bible Publisher, and are used with their kind permission. Where portions of a verse are set forth in bold or are underlined, it is only for emphasis by the author and does not represent a revision of the text.

Translated & Published by
ALETHIA Publications.
Chandra Niwas Building, Bitco Point, Nashik Road 422101,
Maharashtra, India.
www.alethiabooks.com

ALETHIA Publications is the publishing division of
Alethia Publication & Training Pvt. Ltd.
alethiapublications@gmail.com

Translated by Jiwan Crawford Team
Cover Design: Gareth Franks

Printed and bound in India by
GS Media, Secunderabad 500 067
E-mail: printing@ombooks.org

विषय-सूची

प्रस्तावना 9
परिभाषायें 15
स्वर्ग के राज्य का सुसमाचार. 19
स्थानीय यहूदी से वैश्विक यहूदी बनना 27
प्रथम प्रभाग का परीक्षण 33
पुराना नियम कहां समाप्त हुआ? 41
पतरस और उसका खतने का सुसमाचार. 45
प्रेरितों के काम 1 एवं 2. 51
अन्यजातियों की ओर रूख करना 59
अन्य जातिः प्रवेश का समय 65
पौलुस का सुसमाचार 69
पौलुस का सुसमाचार 77
1 कुरिन्थियों की रूपरेखा. 91
1 कुरिन्थियों अध्याय 12-14 का परीक्षण 107
पवित्र शास्त्र के उल्लघनों का परिक्षण 125
पेंटिकुस्त की पुनःस्थापना करने के प्रयास में करिश्माई त्रुटि 126
स्त्री पासबान और तलाकशुदा पासबानों और सेवकों (deacons) के
विषय में करिश्माई त्रुटि 129
पवित्रात्मा की सेवकाई को लेकर करिश्माईयों की त्रुटि 133
पवित्र शास्त्र के अनुप्रयोग में करिश्माई त्रुटि 136
स्वर्गदूतों की भाषाओं को लेकर करिश्माई त्रुटि 139
आर्थिक प्रबंध के संबंध में करिश्माई - त्रुटि. 141
विश्वासियों की सहभागिता के संबंध में करिश्माई त्रुटि 146
चंगाई के बारे में करिश्माई त्रुटि 151
अभिषेक प्राप्त करने में करिश्माई त्रुटि 156
आज मसीह की सदेह उपस्थिति को लेकर करिश्माईयों की त्रुटि 161
पहली और अंतिम वर्षा के संबंध में करिश्माई त्रुटि. 164
ऐसे 25 प्रश्न जिनके उत्तर दिए जाने चाहिये 168
निष्कर्ष 170

जब हम आधुनिक करिश्माई आन्दोलन को परमेश्वर के वचन अर्थात बाइबल के प्रकाश में देखतें है, तब प्रतीत होता है कि, 1 तीमुथियुस 4:1,2 और 2 तीमुथियुस 4:3,4 की गंभीर चेतावनियाँ ठीक हमारे आँखों के सामने पूरी हो रही है। भावुकता से आवेशित ये आन्दोलन शारीरिकता को पवित्र आत्मा के प्रवाह में छुपाता है। यह संदेह न करनेवाले, भोले और नए विश्वासियों को धोखे में डाल रहा है, और सम्पूर्ण कलीसिया को धर्म परित्याग और सुनिश्चित दण्ड की ओर ले जाने का प्रयास कर रहा है (2 पतरस 2:1–3)। अनेक विश्वासीजन और स्थानिक कलिसियायें, परमेश्वर के प्रकट वचन के विपरीत इनकी झूठी शिक्षाओं, दावे और झूठे आत्मिक अनुभव से पथभ्रष्ट हो रही है, फिर भी कुछ ही पास्टर, चरवाहे और अगुवे हैं जिन्होंने इनके विरुद्ध आवाज उठाई है।

इस पुस्तक के लेखक पास्टर जेम्स टेलर, एक बाइबल शिक्षक और 26 वर्षों से अधिक समय से अमरीका में पास्टर है, वे आज कलीसियाओं पर आ चुके इन आधुनिक दिनों के धोखें के विरुद्ध निडर होकर चेतावनी देनेवाले प्रमुख और समयोचित आवाजों में से एक हैं। यह पुस्तक आधुनिक पेंटिकोस्टल करिश्माई आन्दोलन की त्रुटियों पर क्रमबद्ध चर्चा करती है और निष्कर्ष के निकट 25 सरल प्रश्नों को उठती है, यह दर्शाने के लिये कि यह आन्दोलन अपनी गलत शिक्षाओं के द्वारा आपको परमेश्वर के अंतिम रूप में प्रदत्त और प्रकाशीत (प्रकट) वचन से कितने दूर ले जाता है। इस पुस्तक में इस आन्दोलन की प्रत्येक बड़ी गलती का परिक्षण मनुष्य के पास उपलब्ध एकमात्र और परममानक परमेश्वर के वचन अर्थात पवित्र–बायबल के द्वारा किया गया है।

यह पुस्तक आपको स्मरण दिलाती है : "प्रियों, प्रत्येक आत्मा की प्रतीति न करो, परन्तु आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से है या नहीं, क्योंकि संसार में अनेक झूठे नबी निकल पड़े है।" (1 यूहन्ना 4:1)

किसी भी आयु, अनुभव और कलीसिया से संबधित ईमानदार और बाइबल का अध्ययन करने वाले व्यक्ति (छात्र) को यह पुस्तक अवश्य पढनी चाहिए। प्रत्येक बाइबल कॉलेज और सेमेनरी में इसके पठन–पाठन की नितांत अवश्यकता है। यह किताब निश्चित ही हमारे National Discipleship Training Centers (NDTC) भारत, में आवश्यक विषय होगा।

जीवन क्राफोर्ड
लेखक – Counterfeit Bibles और NDTC के संस्थापक

प्रस्तावना

वर्तमान करिश्माई आंदोलन के अत्याधिक विस्तार और प्रभाव के साथ प्रारंभ मे कोई भी व्यक्ति प्रभावित होगा, जिसमें आत्मिक बातों की थोड़ी भी समझ है। त्रिनिटी ब्राड कॉस्टिंग नेटवर्क के विस्तार और प्रभाव की गति टेड टर्नर को प्रभवित कर सकती है। क्या हमने विगत लंबे समय से मसीही होने के नाते स्वयं पर संसार के प्रभाव को अंततः स्वीकार लिया है? जैसा टी.बी.एन. का दावा है कि संसार के प्रत्येक देश से लाखों लोग मसीह में आ रहे हैं, सतही तौर पर लगता है कि यह बहुत बड़ी घटना है। वे देश जो लंबे समय से मसीह के विरोधी रहे हैं, अब अपने देश में टी.बी.एन. के प्रसारण के लिये बिना आपत्ति टी.वी. स्टेशन बनाने की अनुमति दे रहे हैं। वह कौन सी बात है जो आत्मा की इस महान आत्मिक–जागृति को बल प्रदान करने का साधन है? क्या वह पवित्र शास्त्रीय सत्य का उत्पाद है या फिर किसी और का उत्पाद है?

इस पुस्तक का प्रयास है कि परमेश्वर के वचन के समुचित विश्लेषण और अनुप्रयोग के द्वारा ऐसे प्रश्नों का उत्तर दें। इस किताब के अंग्रेजी संस्करण मे परीक्षण और तुलना के लिए सभी पाठ (संदर्भ पद) केवल और केवल अधिकृत किंग जेम्स संस्करण से लिये गए हैं। कारण स्पष्ट है कि इस संस्करण के साथ परमेश्वर की सामर्थ का प्रमाणिक इतिहास है।

जब आप इस नये आंदोलन की विषयवस्तु का परीक्षण करते हैं, तब एकाएक बहुत से मुद्दे प्रकाश में आते हैं जो उत्तर की मांग करते हैं। ये मुद्दे जो प्रकाशित सत्य के सर्वदा विपरीत जान पड़ते हैं, लगता है उनका अभिप्राय उन संदेशों के द्वारा जिनमें सुसमाचारों, पुराने–नियम, और प्रेरितों के काम के केंद्रीय विचार समाहित नहीं है, पौलुस की पत्रियों में कलीसिया को

दिये पौलुस के प्रकाशनों का निर्मूल करना है। इनमें से कोई भी संदेश पौलुस के लेखन की एकीकृत यहूदी अन्य जातीय कलीसिया पर लागू नहीं होते। ''समृद्धि का सुसमाचार'' जैसी धर्मशिक्षायें संकेत करती है कि परमेश्वर की इच्छा है कि प्रत्येक मसीही को धनवान और रोगरहित दोनों बनायें। ये दोनों धर्मशिक्षायें पत्रियों में नहीं है। सभी मसीहियों में महानतम पौलुस को उसकी सभी पत्रियों में 'निर्धन और बीमार' भी बताया गया था।

इस संपूर्ण आंदोलन में हम बहुत से ऐसे सर्वथा बेतुके दावे पाते हैं परंतु कोई भी उन पर आपत्ति नहीं करता है। उनमें से एक उदाहरण 'बेनी हिन' है जो इस आंदोलन के पथ प्रदर्शक सितारे है, जिनके विषय में बार–बार बताया जाता है कि वे पवित्रात्मा से इतने भरे है कि किसी भी व्यक्ति पर फूंककर उसे पवित्रात्मा का दान दे सकते हैं। पुराने और नये नियम के प्रामाणिक पवित्र शास्त्र (के समग्र प्रकाशनों में) में केवल एक ही व्यक्ति यीशु मसीह था, जिसने ऐसी सामर्थ का प्रदर्शन किया था।

यूहन्ना 20:22

22. यह कहकर उसने उन पर फूंका और उनसे कहा – ''पवित्र आत्मा लो''

क्या बेनी हिन स्वयं मसीह है? उसकी सामर्थ का ऐसा दावा यूहन्ना की पुस्तक में दिये अनुसार मसीह की सामर्थ की प्रतिकृति (नकल) है, और निश्चय यह किसी को भी ऐसा विश्वास करने का बल देगी, या उसे यही सत्य प्रतीत होगा।

जेन क्राउच और उसकी योग्यता कि वह अपने बचपन के दिनों में मारी गई एक घरेलू चिकिन (मुर्गी) को वापस जीवित कर सकती है, एक प्रश्न करने की मांग करती है। किसी व्यक्ति के द्वारा किसी पशु या पक्षी को पुनः जीवित करने का उदाहरण कहां मिलता है? पवित्र–शास्त्र में ऐसा कोई उदाहरण या वृतान्त नहीं लिखा है। क्या जेन में कोई विशेष वरदान है जो प्रेरितों में, या स्वयं मसीह में नहीं था, जिन्होंने ऐसा आश्चर्यकर्म कभी नहीं किया? उपरी तौर पर तो ऐसा ही दिखाई देता है। एक बात तो बिल्कुल स्पष्ट है कि मैं उसे लंच पर (दोपहर के भेजन पर) पॉपेय चिकिन खाने के लिये नहीं ले जाऊंगा।

कुछ समय पहले भविष्यद्वाणी के द्वारा एक प्रकाशन दिया गया है कि आगामी दो वर्षों के भीतर टेलिविजन पर मृतकों के पुनः जी उठने का सीधा प्रसारण संभव होगा। प्रश्न है, दो वर्ष की प्रतीक्षा क्यों? अभी (आज) क्यों नहीं? मसीह और उसके प्रेरितों ने आरंभ में ही यह कर दिखाया था तो फिर आज हमारे बीच यह सामर्थ अचानक क्यों विलंबित है? वास्तविकता यह है कि जब वे मृतकों को जिलाने की बात करते हैं, प्रत्येक विचार और कर्म का आशय रोटी कमाने से है। सूची लंबी है, जिसमें यीशु का प्रकट होना और बेनी हिन की सभाओं में किसी

के द्वारा बेनी हिन के पीछे यीशु मसीह को चलता हुआ देखना, इत्यादि शामिल है। क्या ये बातें पवित्रशास्त्र की किसी प्रतिज्ञा से मेल खाती है या उसके अनुरूप है?

प्रेरितों के काम 1:11

11 उनसे कहा, "हे गलीली पुरुषों तुम क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।

पवित्र शास्त्र के अनुसार अगली घटना जिसमें मसीह की सदेह वापिसी है, प्रकाशित वाक्य में बताई गई है, और यह कलीसिया के स्वर्ग पर उठाये जाने के बाद है।

प्रकाशितवाक्य 19:11-16

11 फिर मैने आकाश को खुला देखा, और देखो, एक श्वेत घोडा है, और उसका सवार विश्वासयोग्य कहलाता है। वह धार्मिकता से न्याय और युध्द करता है।

12 उसके नेत्र आग की ज्वाला हैं। उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं। और उसका एक नाम उस पर लिखा हुआ है जिसे उसके अतिरिक्त और कोई नहीं जानता।

13 वह लहू में डुबोया हुआ वस्त्र पहीने है, और उसका नाम 'परमेश्वर का वचन' कहलाता है।

14 स्वर्ग की सेनाएं श्वेत, स्वच्छ और महीन मलमल पहिने, श्वेत घोडों पर उसके पीछे पीछे चलती हैं।

15 उसके मुख से एक चोखी तलवार निकलती है, कि वह उस से जाति जाति का संहार करें। वह लौह दण्ड से शासन करेगा, और सर्वशक्तिमान की भयानक प्रकोप की मदिरा का रसकुंड रौंदेगा।

16 उसके वस्त्र और जांघ पर यह नाम लिखा है : "राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु।"

क्या यह वर्णन सुनने में लगता है कि यीशु ने बेनी हिन की सभा में आकर दर्शन दिये? हमें ओरेल रॉबर्ट्स का अनुभव पता है जिसमें उसने बिस्तर के पैताने यीशु को देखा था, परंतु तब यीशु लगभग 20 फुट ऊंचे दिखाई दिये थे। क्या पुनरुत्थान के बाद यीशु ने कभी अपने डीलडौल को इतना बढ़ाकर दिखाया? मेरा मानना है, ओरेल रॉबर्ट्स चंगा करने और एक अस्पताल निर्माण की दृष्टि से अत्याधिक असाधारण थे, और वे विश्वास से चंगा करने वालों में धरोहर थे, क्या आप इससे सहमत नहीं होंगे? अन्य कहानियों में कोई ऐसा व्यक्ति है जो बिना पांवों के था और उसे 'नये पैर' दिये गये थे परंतु पाने वाले ने विश्वास की कमी के कारण उन्हें खो दिया। पवित्र शास्त्र में यीशु और प्रेरितों ने कब और कहां किसी के कट चुके

अंग के बदले 'नया अंग' जोड़ा? एकमात्र प्रकरण जो ऐसी घटना के निकट माना जा सकता है वह लूका 22:51 में है जहां यीशु ने व्यक्ति के कट चुके कान को चंगा किया। हमें ऐसा कोई दुसरा उदाहरण नहीं मिलता।

तब ये सब पवित्र शास्त्र से असम्मत गतिविधियां किस आधार पर हैं? मेरा अनुमान है कि सरल अर्थ में ये घटनायें जिसे वे प्रत्येक व्यक्ति पर 'अंतिम वर्षा' का उण्डेला जाना कहते हैं, वास्तव में पौलुस द्वारा 1 तीमुथियुस में उल्लेखित ''बहकाने वाली'' आत्माओं के द्वारा सावधानीपूर्वक रचा और प्रायोजित षड़यंत्र है जिसमें शरीर पर आत्मा के नियंत्रण के बदले आत्मा पर शरीर का नियंत्रण होता है। एक बार यह नियंत्रण स्थापित हो जाये तो गतिविधियां रुकती नहीं हैं।

1 तीमुथियुस 4:1

1. "परंतु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आने वाले समयों में कितने लोग भरमाने वाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षा पर मन लगाकर विश्वास से बहक जायेंगे।"

कृपया ध्यान दें कि यह पवित्र आत्मा है जिसने इन दुष्ट भरमानेवाली आत्माओं के बारे में कहा है। आंदोलन भरमाने वाला आंकड़ा (हुक) और उसे डुबोकर रखने वाला भार लेकर आया है। मसीह के समर्पित शत्रुओं और उनकी वास्तविक कलीसिया ने विगत अनेक शताब्दियों में लाखों संतों को जुनून में पागल होकर सताया और घात किया है। वे हत्यारे अब करिश्माई भीड़ में स्वागत पा रहे हैं। करिश्माई विचारधारा वाले आज मसीहत के बहुत बड़े विस्तार की उद्घोषणा करते है, ''पौलुस कहते हैं अंतिम दिनों में कठिन समय आयेंगे।'' प्रियों, अपने आसपास संसार में देखों और मुझे बताओ कि कौन सी दार्शनिकता सही है।

इस प्रस्तावना को समाप्त करते हुये एक महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि आप पायेंगे इस पुस्तक के अंत में करिश्माई मत और उसकी त्रुटियों को उजागर करने जिन संदर्भ पदों का उपयोग किया गया है वे सभी पदें पत्रियों अर्थात कलीसियाई पुस्तकों में से ली गई है। यही कारण है कि करिश्माई कलीसियाओं के मंचों पर पौलुस और उसकी पुस्तकों को समय नहीं दिया जाता, और इस प्रक्रिया के द्वारा सिद्धता में बढ़ने के स्थान पर जो प्रत्येक विश्वासी के लिये परमेश्वर की इच्छा है, वास्तव में उद्धार पाने वालों को 'शिशु अवस्था' में बनाकर रखा जाता है। इस आंदोलन के साथ एक प्रमुख विचारधारा उभरती है जो यह तथ्य दर्शाती है कि उनमें बाइबिल का ज्ञान और समझ (परख) बिल्कुल भी नहीं है, वे मसीह में वास्तव में बालक है। आज बाइबिल को निर्मूल करने के लिये आपको उसे लेकर जलाने की आवश्यकता नहीं है, बस आप उसे अनदेखा करे। यही स्थिति धोके के इस आंदोलन में पौलुस की कलीसियाओ की लिखी गई पत्रियों (पुस्तकों) की है।

हम अध्ययन का आरंभ स्पष्टीकरण और वर्गीकरण के लिये परिभाषाओं की सूची बनाकर करेंगे। यह अत्याधिक सामान्य और वास्तव में आवश्यक है कि संपूर्ण पवित्र शास्त्र में आये 'शब्दों और वाक्यांशों' का वास्तविक बाइबल–सम्मत अर्थ जाने ताकि करिश्माई आंदोलन या मत में व्याप्त धोकेबाजी को उजागर कर सके। क्या कलीसिया के युग में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा चिन्ह और चमत्कार उत्पन्न करता है? निश्चय ही नहीं, परंतु आज यह गलत अभिमत नियमित रूप में कलीसिया में लागू किया जाता है। जब आप इस पुस्तक को पढ़ते है, इन परिभाषाओं का स्मरण रखें और इसके पहले कि आप उन्हें धर्मशिक्षाओं पर लागू करें, उनकी जांच करें। करिश्माई आंदोलन का सर्वोत्तम साधन बाइबल के प्रति अज्ञान (अनदेखी) है। जब किसी धर्मशिक्षा से आपका सामना हो, अपने आपसे ये प्रश्न करें: यह किसे लिखा गया है, इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या है, और क्या यह धर्मशिक्षा पौलुस द्वारा कलीसिया को दिये गये प्रकाशन से मेल खाती है? अधिकांश प्रकरणों में इनके उत्तर सभी प्रश्नों के सही उत्तर देंगे।

परिभाषायें

परिभाषायें

सुसमाचारः– शुभ–संदेश, शुभ–संदेश का अभिप्राय उन पर निर्भर करता है जिन पर वह लागू किया जाता है।

खतनाधारियों को सुसमाचारः– कलीसिया के युग में यहूदी प्रथम है। इसमें स्वर्ग के राज्य पर वही जोर दिया गया है, साथ ही बपतिस्मे के बाद पवित्रात्मा का दिया जाना है। प्रेरितों के काम 2:38, रोमियो 1:16

महान् रहस्यः– विश्वास और संपूर्ण रूप में अनुग्रह के द्वारा यहूदियों और अन्यजातियों का मसीह की देह (कलीसिया) में जोड़ा जाना। देह एकीकृत कलीसिया कहलाती है। इफिसियो 3:3–6

अन्य–अन्य भाषाएंः– सदैव इस संसार की जानी पहचानी कोई भाषा प्रेरितो के काम 2:7–8

स्वर्ग का राज्य :– भौतिक साम्राज्य जिसमें मसीहा आयेंगे और इस्राएल पर 1000 वर्ष राज्य करेंगे। मसीह की मृत्यु के समय इसका इंकार किया गया। पेंटिकुस्त के दिन पतरस के उपदेश में एक बार फिर घोषणा की गयी। प्रेरितों के काम 7में स्तिफनुस के पत्थरवाह के समय अंतिम रूप में सुसताचार का इन्कार। भविष्य में महाक्लेश के बाद मसीह और उसके वापस लौटकर आने पर पुनः स्थापना। प्रकाशितवाक्य 20:1–5

परमेश्वर का राज्य :– आत्मिक साम्राज्य अब भी अस्तित्व में है, जो शताब्दियों से छुटकारा (उद्धार) पाये सभी लोगो से बना है। वे पवित्रजन जो मर चुके हैं, मसीह के साथ वापस आयेंगे, और वे भी जो स्वर्ग पर उठाये जायेंगे और वे सब पृथ्वी पर मसीह के 1000 वर्षीय राज्य में प्रशासन (सरकार) का अंग बनकर राज्य करेंगे। कुलु. 4:14, प्रकाशित वाक्य 20:6, 1थिस 4:14

खतनारहित लोगों को सुसमाचारः– पौलुस को दिया गया प्रकाशन कि अन्यजातियों को भी अब अनुग्रह द्वारा विश्वास के कारण उद्धार प्राप्त करने की पात्रता दी गयी है। गलातियों 2:7–8

पश्चाताप का बपतिस्माः– स्वर्ग का राज्य केवल यहूदियों के लिये, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले द्वारा प्रचारित, और मसीहा के आगमन की तैयारी हेतु दिया गया। मरकुस 1:4

पश्चाताप का बपतिस्मा, पवित्रात्मा के वरदान के साथ :– यहूदियों के लिये स्वर्ग के राज्य की घोषणा की पुर्नस्थापना। यह प्रेरितों के काम 7 में स्तिफनुस को पत्थवाह करते समय नकारा गया था। प्रेरितों के काम 2:38

पवित्रात्मा का बपतिस्माः– एक आत्मिक बपतिस्मा जो मसीह की देह में सभी विश्वासियों पर मोहर लगाता है। यह चिन्ह उत्पन्न न करने वाली प्रक्रिया है। 1 कुरिन्थियो 12:13

'आत्मा द्वारा पीछे की ओर गिरना:- पवित्रशास्त्र में इसका वर्णन नहीं है।

हाथों को रखना:- प्रेरितो के काम 8 में, स्वर्ग के राज्य को दूसरी बार अस्वीकृत करने के बाद पवित्रात्मा दिये जाने के संदर्भ में स्थापित। यह नयी घटना सामरिया में एक आधे यहूदी और आधे अन्यजातीय, विश्वासियों के समूह में भी अमल की गई। प्रेरितों के काम 8:17 साथ ही प्रेरितों के काम 19:1–6 में यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा यहूदियों का बपतिस्मा, जिसमें अंतिम बार पवित्रात्मा दिये जाने या हाथों को रखे जाने का उल्लेख है, यह यहूदियों और आधे यहूदियों के लिये था। यह प्रक्रिया बाद में रोमियों से प्रकाशित वाक्य तक कहीं भी दोबारा वर्णित नहीं है।

पत्रियां :- इन्हें कलीसिया की पुस्तकें भी कहा जाता है – इनमें पौलुस द्वारा कलीसियाओं को लिखे गये पत्र (पत्रियां) हैं। इनमें वे सभी प्रमुख जानकारियां है जो एकीकृत कलीसिया के विश्वास और आचरण की पद्धति के विषय में पौलुस को बतौर प्रकाशन दी गई थी – रोमियो से फिलेमोन तक। इफिसियो 3:1–6

उद्धार प्राप्त विश्वासियों का एकीकृत कलीसिया में पहचान के लिये बपतिस्मा :- *गलातियों 3:26–28* यह बपतिस्मा तब स्थापित हुआ जब हृदय परिवर्तन के बाद प्रथम अन्यजातीय व्यक्ति आये और उस समय की एकीकृत कलीसिया में शामिल किये गये। पवित्र आत्मा बपतिस्में के बाद उन पर नहीं आया और न हाथों को रखे जाने के बाद (सामरी जो यहूदी और अन्यजातीय वर्णमिश्रण थे) परंतु अन्यजातियों के विश्वास करने के बाद आया। पवित्र आत्मा विश्वास करने के बाद दिया गया और विश्वासियों के साथ पहचान के लिये 'जल के बपतिस्मे' में पूर्ण हुआ। प्रेरितो के काम 10:43–48

पवित्र आत्मा :- परमेश्वरत्व का तीसरा व्यक्ति। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा। वह हम पर मोहर लगाता है और समस्त सत्य में अगुवाई करता है। *यूहन्ना 16:13–14*

बहकाने या भरमाने वाली आत्मा :- झूठी आत्मा जो भावनाओं और दृष्टि के द्वारा अगुवाई करती और मनुष्य से गलती करवाती है। इसके मुख्य साधन, चिन्ह, आश्चर्यकर्म, और शिक्षा है। मरकुस 13:22, 1 तीमु. 4:1

यहूदी :- भौतिक रूप में अब्राहम और सारा के वंश में उत्पन्न व्यक्ति।

अन्यजातीय :- वह हर व्यक्ति जो यहूदी नहीं है।

पवित्र आत्मा की छाप (मोहर) – वर्तमान समय में पवित्र आत्मा का मनुष्य के भीतर निवास करना जिसका प्रारंभ अन्यजातियों के कलीसिया में शामिल होने से हुआ है, अन्य–अन्य भाषायें इसका प्रमाण नहीं है। एक ही अपवाद प्रेरितो के काम 10 है, जहां यहूदी जन उपस्थित थे। इफिसियों 1:13–14, इफिसियों 4:30।

पवित्र आत्मा का वरदान :– यहूदियों को साक्षी देने, यहूदियों के चिन्ह वरदानों का भौतिक प्रकटीकरण जिसे प्रेरितो के काम पुस्तक के बाद पवित्र आत्मा की छाप में बदल दिया गया। प्रेरितो के काम 1:8

बादलों (हवा) में उठाया जाना :– प्रकाशित वाक्य में वर्णित क्लेश से पूर्व एकीकृत कलीसिया में विद्यमान विश्वासियों को स्वयं मसीह के द्वारा ऊपर उठाया जाना। 1 कुरिन्थियो 15:51–53

सही विश्लेषण :– पवित्रशास्त्र का विश्लेषण और प्रत्येक समूह के लोगों के लिये प्रत्येक अनुप्रयोग करना, जो उनके लिये अभिप्राय रखता है। परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र के विभाजन द्वारा अतीत में अपनी इच्छा को पूरा किया है। उदाहरण उत्पत्ति 1:4 रात और दिन का विभाजन, उत्पत्ति 1:7 – आकाश को बनाना, उत्पत्ति 11:8 – भाषाओं का विभाजन, उत्पत्ति 12:2 – इस्राएल को अन्य देशों से अलग करना, उत्पत्ति 46:8 – इस्राएल राष्ट्र का गोत्रों में विभाजन, पुराना और नया नियम इत्यादि। परमेश्वर ने इतिहास में मनुष्यों का सदैव विभाजन किया है, कभी भौतिक और कभी कभी आत्मिक। 2 तिमथीयुस 2:15

सत्याचरणः– कार्य या व्यवहार (आचरण) के लिये एक नियम या सिद्धांत (वेबस्टर) मानवीय अस्तित्व के लिये मूल आचरण बाइबल की प्रत्येक पुस्तक नये और पुराने नियम से और नीति वचन की पुस्तक से सिखाया जा सकता है।

धर्मशिक्षा :– ज्ञान की किसी शाखा के सर्वमान्य सत्य या सिद्धांत जिनका संबंध किसी प्रभाग या दल से है, मान्य विश्वास या फिर सिखाये गये सत्य (वेबस्टर) धर्मशिक्षा इस अर्थ में एक अधिक संकीर्ण सिद्धांत है जिस पर ज्ञान का एक प्रभाग अमल करता है। पवित्र शास्त्र के संबंध में यह मूसा को इस्राएल राष्ट्र के लिये मिला प्रकाशन नहीं जिसका संबंध स्वर्ग के राज्य से है परंतु पौलुस को मिले प्रकाशन से है जिसका संबंध कलीसिया से है। 2 थिस्स 2:15, 1 तीमु. 1:13, 1 तीमुथियुस 4:16, 2 तीमु. 4:3

अधिकृत अविवादित धर्म–तत्त्व :– ज्ञान की किसी भी शाखा का सिध्दांन्त या धर्मसिध्दान्त। यह अधिकार सहित प्रस्तुत की जाती है और विषेशकर इसे कलीसिया का अधिकार प्राप्त है (वेबस्टर)। तब नये निमय की धर्मशिक्षा को स्थापित करने का अधिकार किसे प्राप्त है? इफिसियों 3:2–4, गलातियों 1:8, 2 कुरिन्थियों 3:1–6, 2 कुरिन्थियों 10:8

अभिषेक :– पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वासियों पर मोहर करना। 2 कुरिन्थियों 1:21, इफिसियों 1:13, 1 यूहन्ना 2:27

स्वर्ग के राज्य का सुसमाचार

आरंभिक कलीसिया द्वारा उपयोग किया गया किंतु स्पष्ट रूप से विस्मृत सत्यों में से एक, यह 'सुसमाचार' के विशुद्ध अनुप्रयोग का एक तथ्य है। आधुनिक कलीसिया अकसर सुसमाचार की परिभाषा – यीशु मसीह की मृत्यु, दफन, और पुनरुत्थान के रूप में देती है, परमेश्वर का धन्यवाद हो कि यह हमारे विश्वास के लिये कोने के सिर का पत्थर है, पर यह सम्पूर्ण सुसमाचार नहीं है जिसका कलीसिया के लिये अनुप्रयोग है। यदि एक प्रचारक शेष सुसमाचार की शिक्षा छोड़कर प्रत्येक सभा में केवल यीशु की मृत्यु, दफन और पुनरुत्थान ही का प्रचार करता है, तो वह उसके काम में पूरी तरह चूक जायेगा जिसे करने के लिये उसे नियुक्त किया गया था। उद्धार पाने के लिये एक व्यक्ति को कितनी बार मसीह के सुसमाचार में मृत्यु, दफन और पुनरुत्थान सुनने की आवश्यकता है ? उद्धार पाने के बाद अब क्या ? वेबस्टर ने सुसमाचार की यह परिभाषा दी है – ''शुभ समाचार, जिसे सत्य मानकर ग्रहण किया गया'' तब और कौन सी बात सुसमाचार को कलीसिया पर प्रकट करनी चाहिये ? करिश्माई मत ने यह कहकर कि सुसमाचार यीशु मसीह की मृत्यु, दफन और पुनरुत्थान से अधिक कुछ है एक नया शब्द 'सम्पूर्ण सुसमाचार' का आविष्कार किया है, जो उनके प्रमुख वाक्यांशों में एक है, और इस विचार पर, चाहें आप माने या न माने, वे सही होने का दावा करते हैं। संपूर्ण सुसमाचार के साथ एक ही समस्या है कि उसका उचित रीति से विश्लेषण या सत्य के वचन

को ठीक ठीक रीति से काम मे नहीं लाया गया और पवित्रशास्त्र में 'चिन्ह और चमत्कारों' के विचार का समावेश या विस्तार नहीं है, वरन् यह उस विचार को पूर्ण रूप में खारिज करता है।

कितने सुसमाचार है और वे किस उद्देश्य से लिखे गये हैं ? क्या सभी सुसमाचार खरी धर्मशिक्षा की दृष्टि से 'पत्रियों' की 'एकीकृत कलीसिया' पर लागू होते हैं ? इस अध्याय में हम केवल उन दो सुसमाचारों पर चर्चा करेंगे जिनकी पहचान पौलुस ने गलातियों के अध्याय 2 में दी है।

गलातियो 2:7-8

7 इसके विपरीत जब उन्हो ने देखा कि जैसे पतरस को खतना किए हुए लोगों में,
वैसा ही मुझे खतना-रहित लागों में सुसमाचार का कार्य सौंपा गया।
8 क्योंकि जिसने पतरस द्वारा खतना वालों में प्रेरिताई का कार्य प्रभावपूर्ण रीति से किया
उसी ने मुझ से भी गैरयहूदियों में प्रभावशाली कार्य करवाया।"

यहां स्पष्ट रूप से पहचाने जाने योग्य 2 सुसमाचारों पर चर्चा की गई है – 'खतने का सुसमाचार' जिसे 'पतरस' ने प्रकट किया और 'बिना खतने का सुसमाचार' जिसे पौलुस ने प्रकट किया। हम प्रकाशन की दृष्टि से इनके बीच का अंतर स्वर्ग का राज्य (यहूदी) और 'परमेश्वर का राज्य' जिसमें 'शेष बचे यहूदी' और अन्यजातीय लोग शामिल हैं, जो पौलुस पर प्रकट एकीकृत कलीसिया में है, के रूप में समझ सकते हैं।

स्वर्ग का राज्य

हम यहां इस बात का जिक्र कर सकते हैं कि शब्द सुसमाचार (एकवचन या बहुवचन) पुराने नियम के पवित्रशास्त्रीय प्रकाशन – अर्थात् उत्पत्ति से लेकर मलाकी में नहीं है। यह शब्द इस्राएल राष्ट्र में मसीहा के परिचय के साथ आरंभ होता है। बिना मसीहा और उसकी सेवकाई के कोई 'शुभ समाचार' नहीं है।

यशायाह 7:14

14 इस कारण प्रभु आप ही तुमको एक चिन्ह् देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।

कृपया शब्द 'चिन्ह' पर ध्यान दें। आप जानेंगे कि जब भी चिन्ह की प्रतिज्ञा दी गयी है वहां संदर्भ सदैव यहूदियों से है। कुमारी का चिन्ह कि वह पुत्र जनेगी, स्पष्ट रूप से भविष्यद्वाणी के पूरा होने के लिये इस्राएल को दिया गया चिन्ह था।

यशायाह 9:6

6 क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न होगा, हमे एक पुत्र दिया जाएगा; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शांति का राजकुमार रखा जाएगा।

इस्राएल को यह आशा करनी थी कि परमेश्वर स्वयं सदेह आयेंगे, अपनी प्रजा पर राज्य करेंगे। जब यह पूरा हुआ, तब स्वर्ग के राज्य के सुसमाचार का आरंभ होता।

मत्ती 2:1-12

1 राजा हेरोदेस के दिनों में जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ, तो देखो, पूर्व दिशा से ज्योतिषी यरूशलम में पहुंचकर पुछने लगे,

2 "यहूदियों कस राजा जिसका जन्म हुआ है, कहां है? क्योंकि हमने पुर्व में उसका तारा देखा है, और उसको दण्डवत करने आाए हैं।"

3 जब राजा हेरोदेस ने यह सुना तो वह और उसके साथ सारा यरूशलेम घबरा गया।

4 तब उसने लोंगों के सब मुख्य याजकों और शास्त्रियों को एकत्रित करके उनसे पुछा कि मसीह का जन्म कहां होना चाहिए।

5 उन्होंने उस से कहा, "यहूदिया के बैतलहम में, क्योंकि नबी के द्वारा ऐसा लिखा गया है :

6 'हे बैतलहम, तू जो यहूदा के प्रदेश में है, तू यहूदियों के अधिकारियों में किसी से
भी छोटा नहीं, क्योंकि तुझ मे से एक शासक निकलेगा, जो मेरी प्रजा इस्त्राएल का
रखवाला होगा।'"
7 तब हेरादेस ने चुपचाप ज्योतिषीयों को बुलाकर उनसे इस बात का निश्चय किया कि
तारा ठिक किस समय पर दिखाई दिया था
8 और यह कहकर उन्हे बैतलहम भेजा, "जाओ, उस बालक का सावधानी से पता
लगाओ, और जब वह तुम्हे मिल जाए तो मुझे भी समाचार दो कि मै भी जसकर
उसे दण्डवत करूं।"
9 राजा की बात सुनकर वे चल पड़े, और देखो, जिस तारे को उन्होने पूर्व में देखा था,
वह उनके आगे आगे तब तक चलता रहा जब तक की वहां पहुंचकर उस स्थान के
उपर ठहर न गया जहां बालक था।
10 वे उस तारे को देखकर अति आनंदित हुए।
11 उन्होने घर में पहूंचकर उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा, और
भुमि पर गिरकर उसको दण्डवत् किया, और अपना अपना संदूक खोलकर उसे सोना,
लोबान और गंधरस की भेंट चढ़ाई।
12 तब स्वप्न में परमेश्वर से यह चेतावनी पाकर कि हेरोदेस के पास न लौटना, वे दुसरे
मार्ग से अपने देश को चले गए।

यहां हम पाते हैं कि नये जन्मे उद्धारकर्ता का चिन्ह एक तारा देखकर ज्योतिषियों ने यात्रा की और नये जन्मे बालक तक पहुंचे और उसकी आराधना की। पाठ से स्पष्ट है कि यीशु का आगमन राष्ट्र के लिये रहस्यमय या गुप्त नहीं था। पद 4 और 5 स्पष्ट संकेत देती है कि शास्त्रियों और महायाजकों ने पुराने नियम की भविष्यद्वाणियों के ज्ञान के द्वारा स्पष्ट रूप से जाना कि 'चिन्ह' क्या था, और बालक यीशु के जन्म का स्थान क्या था? यहां उसके आगमन का सुसमाचार या शुभ संदेश है। अब हम आगे देखेंगे कि राज्य की स्थापना कैसे की जायेगी।

मत्ती 3:1-6

1 उन दिनों में यहून्ना बपतिस्मा देने वाला यहूदिया के जंगल में आया। वह यह कहकर
प्रचार किया करता था :
2 "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।"
3 यह वही है जिसका वर्णन यशायाह नबी ने यह कहते हुए किया, "जंगल में एक
पुकारने वाले की आवाज, 'प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसके पथ सीधे बनाओ'।"
4 यूहन्ना तो स्वंय उंट के रोम का वस्त्र पहिने और कमर में चमड़े का कटिबंध बांधे
हुए था तथा टिड्डियां और वनमधु उसका आहार था।

5 तब उसके पास यरूशलेम, समस्त यहूदिया और यरदन के आसपास स्थित सारे प्रदेश
के लोग निकलकर आये।
6 जैसे जैसे उन्होने अपने पापों कर अंगीकार किया, उसने उन्हे यरदन नदी में बपतिस्मा
दिया।

यूहन्ना बपतिस्मादाता स्वंय इस भविष्यव्दवाणी की पूर्णता था।

यशायाह 40:3-5

3 किसी की पुकार सुनाई दे रही है : "जंगल में यहोवा के लिए मार्ग सुधारो; हमारे
परमेश्वर के लिए मरूस्थल में राजमार्ग चौरस करो।
4 प्रत्येक घटि भर दी जाए और प्रत्येक पर्वत तथा पहाड़ी गिरा दी जाए; जो उबड खाबड
है वह समतल और जो उंचा नीचा है वह समतल किया जाए;
5 तब यहोवा का तेज प्रकट होगा और सब प्राणी उसको एक साथ देखेंगे, क्योंकि
यहोवा ने यही कहा है।"

यूहन्ना को यीशु से पहले आना था और उसकी सेवकाई इस्राएल राष्ट्र को प्रतिज्ञा के राज्य के लिये तैयार करने की थी, तब इस कार्य को संपन्न करने के लिये उसे क्या करना था? यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने अपनी सेवकाई में कभी चंगा करने या मृतकों को जीवित करने जैसे चिन्ह नहीं दिखाये। ये चिन्ह यीशु के बपतिस्में के बाद आये जब उसने पृथ्वी पर अपनी सेवकाई का आरंभ किया। उस समय दान वरदान प्रतिज्ञा किये गये मसीहा के आने को नहीं, परंतु उसकी उपस्थिति की पहचान कराने के लिये थे।

मरकुस 1:4-5

4 यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला पापों की क्षमा के लिए मन-परिवर्तन के बपतिस्मा का
प्रचार करता हुआ जंगल में आया।
5 और यहूदिया का सारा प्रदेश और यरूशलेम के समस्त निवासी उसके पास आने,
और अपने पापों का अंगीकार करके यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लेने लगे।

लुका 3:3

3 वह यरदन के आसपास के सारे प्रदेशों मे जाकर पापों की क्षमा के लिए मनफिराव
के बपतिस्मे का प्रचार करने लगा।

स्पष्ट है कि उस समय अवश्य था कि स्वर्ग के राज्य के सुसमाचार से पहले इस्राएल राष्ट्र को 'पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मे' का प्रचार किया जाता। यह संपूर्ण रूप में एक यहूदी घटना थी और किसी भी रूप में भविष्य की पौलुस के प्रकाशन की एकीकृत कलीसिया के

लिये नहीं थी। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के समय में पश्चाताप के साथ बपतिस्मा लेना पापों की क्षमा देता था।

मत्ती 3:13-17

13 तब यीशु गलील से यरदन के किनारे यूहन्ना के पास आया ताकि उस से बपतिस्मा ले।

14 परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा, "मुझे तो तुझसे बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और क्या तु मेरे पास आया है?

15 परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, "इस समय ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमारे लिए उचित है कि इसी प्रकार सारी धार्मिकता पूर्ण करें।" तब उसने उसकी बात मान ली।

16 बपतिस्मा लेने के पश्चात यीशु पानी से बाहर आया, और देखो, आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबुतर की भांति उतरते और अपने उपर आते देखा।

17 और देखो, यह आकाशवाणी हुई : "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मै अति प्रसन्न हूं।"

न केवल यहूदियों को पापों की क्षमा के लिये पश्चाताप करना और बपतिस्मा लेना था, परंतु यीशु को भी जो निष्पाप था, पानी का बपतिस्मा लेना था, पापों के कारण नहीं परंतु इसलिए कि वह यहूदी नागरिक था और उसे इस राष्ट्रव्यापी आवश्यकता को पूरा करना था। यह बात भी स्पष्ट रूप में समझी जा सकती है कि यीशु ने इस घटना से पहले पृथ्वी पर अपनी सेवकाई का आरंभ नहीं किया था। यीशु ने क्या प्रचार किया था?

मत्ती 4:17

17 उस समय से यीशु ने यह प्रचार करना और कहना आरम्भ किया : "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।"

उसने स्पष्ट रूप में राज्य का संदेश दिया और उसमें सब प्रकार के चिन्हों और चमत्कारों का समावेश था।

मत्ती 4:23-25

23 यीशु सारे गलील मे फिरता हुआ उनके आराधनालयों मे उपदेश करता, राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, औ लोगों की हर प्रकार की बिमारी और हर प्रकार की दुर्बलता को दूर करता फिरा।

24 और उसकी चर्चा सम्पूर्ण सीरिया मे फैल गयी और और लोग सब बिमारों को जो विभिन्न प्रकार की बिमारीयों तथा दुःखों से ग्रसित थे, और जिनमे दुष्टात्माएं थी,

मिर्गी वालों को, लकवे के मारे हूओं को - सब को उसके पास लाए, और उसने उन्हे चंगा किया।

25 और गलील और दिकापुलिस और यरूशलेम और यहूदिया और यरदन नदि के पार से भीड़ की भीड़ उसके पिछे चल पड़ी।

अब मत्ती के अध्याय 5 में आप राज्य के कुछ विशेष नियम देख सकते हैं। यह समझना बड़ी भूल है कि यहां दिये गये धन्य आर्शीवचन भविष्य की एकीकृत कलीसिया की विधि सम्मत पद्धति दर्शाते हैं, आइये हम कुछ उदाहरणों पर विचार करें:

मत्ती 5:3

3 "धन्य हैं वे जो मन के दिन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

क्या हम आत्मा में दीन होने के द्वारा बचाए गए?

मत्ती 5:9

9 धन्य हैं वे जो मेल कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।

क्या मेल करानेवाले बनना उध्दार की निश्चयता देता है?

मत्ती 5:17

17 यह न समझो की मै व्यवस्था या नबीयों की पुस्तकों को नष्ट करने आया हूं। नष्ट करने नहीं परन्तु पूर्ण करने आया हूं।

क्या कलिसिया को भविष्यद्ववक्ताओं की व्यवस्था को पुरा करना है?

मत्ती 5:22

22 पर मै तुम से कहता हूं कि हर जो अपने भाई पर क्रोधित होगा वह न्यायालय मे दण्ड के योग्य ठहरेगा; और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह सर्वोच्च न्यायालय मे दोषी ठहरेगा; औ जो कोई कहेगा, 'अरे मुर्ख', वह नरक के आग के दण्ड के योग्य होगा।

क्या मसीहीजन जो किसी को मूर्ख कहते हैं, नरक की आग में पड़ने के खतरे में है? यदि आप धन्य आर्शीवचनों की संपूर्ण विवेचना पढ़ें वह विश्वास की नहीं, कार्यों की व्यवस्था है। धन्य वचनों पर अमल करना और उन्हें सिद्धांत रूप में लागू करना जैसा बहुत सी आधुनिक कलीसियायें करती है, प्रकाशन के विभाजन को पूरी तरह खो देना है और यह आज की कलीसिया को पूर्ण रूप में असमंजस या दुविधा में डालता है।

करिश्माई अभिमत और उनके चिन्ह्न और चमत्कारों पर सबसे बड़ी चोट मत्ती 10 में है –

मत्ती 10:1-10

1 तब यीशु ने अपने बारह चेलों को बुलाकर, उन्हें अशुध्द आत्माओं पर अधिकार दिया कि
उन्हे निकालें और सब प्रकार की बिमारी तथा सब प्रकार की दुर्बलताओं को चंगा करें।
2 अब बारह प्ररितों के नाम यह है : पहिला शमौन जो पतरस कहलाता है, और उसका
भाई अन्द्रियास; जब्दी कर पुत्र याकूब और उसका भाई यूहन्ना;
3 फिलिप्पुस, बरतुल्मै, थोमा और चुंगी लेनेवाला मत्ती; हल्फै का पुत्र याकूब और तद्दै;
4 शमौन कनानी और यहूदा इस्कारियोती, जिसने उसे पकड़वा भी दिया।
5 इन बारहों को यीशु ने यह निर्देश देकर भेजा : गैरयहूदियों के पास जाना, और
सामरियों के किसी नगर में प्रवेश न करना।
6 इसकी अपेक्षा इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाना।
7 और जाते हुए तुम प्रचार करके कहना, 'स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।'
8 बीमारों को चंगा करो, मृतकों जिलाओ, कोढियों को शुद्ध करो, दुष्टात्माओं को
निकालो। तुम ने मुफ्त पाया है, मुफ्त में दो।
9 अपनी कमर की अंटी में न तो सोना, और न चांदी, और न तांबा रखना।
10 यात्रा के लिये न झोली, यहां तक की दो कुर्ते भी नहीं, न जूती और न लाठी लो,
क्योंकि मजदूर भोजन का अधिकारी है।

पद 5 में यीशु सबसे पहले अन्य जातियों की ओर न जाने की आज्ञा देते हैं। अन्यजातीय लोग इस पृथ्वी पर मसीह की सेवकाई का भाग नहीं थे। उसने कभी किसी अन्यजाति व्यक्ति को कोई 'चिन्ह' या 'चमत्कार' नहीं दिखाया। पवित्रशास्त्र में स्पष्ट रूप में उपस्थिति इस सत्य के साथ करिश्माई विचारधारा वाले कहां से यह विचार पाते हैं कि परमेश्वर ने पूर्ण रूप में इस विश्वास के कलीसियाई युग में अपनी योजना उलट दी है? मत्ती 10 का संदेश क्या था?

पद 5 सभी अन्यजाति संपर्कों से दूर रहना

पद 6 केवल इस्राएल के घराने ही की खोई हुई भेड़ों के पास जाना

पद 7 बीमारों को चंगा करना, कोढ़ियों को शुद्ध करना, मरे हुओं को जिलाना, दुष्टात्माओं को निकालना, तुमने सेंतमेंत पाया है सेंतमेंत दो

अब यदि करिश्मावादी इन चिन्ह और चमत्कारों को दोहराने के अभिलाषी है, क्यों धन, धन धन के लिए कमरतोड़ मेहनत करते हैं? हम अन्यजातियों के लिये पौलुस को दिये गये सुसमाचार पर चर्चा के समय इस पर विस्तार से चर्चा करेंगे। यह जानना रुचिकर है कि प्रेरितों के काम 10 से पहले मत्ती 10 में दिये गये इन निर्देशों की कभी अवहेलना नहीं की गयी। अब हम प्रतिज्ञा के मसीहा को अस्वीकृत करने और क्रूस पर चढ़ाने के पश्चात राज्य की स्थापना के बाद के युग में आ सकते हैं, वहां हम पहली बार तिरस्कार पाते हैं, यह अंतिम तिरस्कार नहीं है।

स्थानीय यहूदी से वैश्विक यहूदी बनना

स्थानीय यहूदी से वैश्विक यहूदी बनना

मसीह के पुनरुत्थान के बाद एक बार फिर मसीह ने चेलों को उनके सामने रखे मिशन के बारे में निर्देश दिये।

मत्ती 28:18-20

18 तब यीशु ने उन के पास आकर कहा, 'स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।

19 इसलिये जाओ सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो,

20 और जो जो मैंने तुम्हें आज्ञाएं दी है, उनका पालन करना सिखाओ और देखो, मैं युग के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूं।

मरकुस 16:15-18

15 और उस ने उन से कहा, "तुम सारे जगत में जाओ और सारी सृष्टि को सुसमाचार प्रचार करो।

16 जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले वह उद्धार पाएगा, परन्तु जो विश्वास न करे वह दोषी ठहराया जाएगा।

17 और विश्वास करने वालों में ये चिन्ह दिखाई देंगे : मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे। तथा नई नई भाषा बोलेंगे;

18 वे सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राणनाशक विष भी पी जांए तो इस से उन की हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे।"

लूका 24:46-49

46 और उन से कहा, यह लिखा है कि मसीह दुःख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा।

47 और यरूशलेम से आरम्भ करके सब जातियों में उसके नाम से पापों की क्षमा के लिए मन फिराव का प्रचार किया जाएगा।

48 तुम इन सब बातें के साक्षी हो।

49 देखो, जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उस को तुम पर उण्डेलुगा, परन्तु जब तक तुम स्वर्गीय सामर्थ से परिपूर्ण न हो जाओ, इसी नगर में ठहरे रहना।"

पवित्रशास्त्र को इन पदों की तुलना करने पर आप शब्दों से समझ सकते हैं कि यीशु ने उसके पुनरुत्थान के बाद भी स्वर्ग के राज्य की स्थापना की संभावना को समाप्त नहीं किया था। चेलों को मिले प्रमुख आदेश क्या थे? मत्ती 28 की 19 पद में 'बपतिस्मा' सुसमाचार में जोड़ा गया, और पद 20 में ''उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हे आज्ञा दी है, मानना सिखाओ'' यह वही बातें है जो मत्ती 10 में है। कृपया ध्यान दे इसमें अन्यजातियों का समावेश नहीं है। इसी प्रकार मरकुस 16, पद 16 में 'जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले, उसी का उद्धार होगा।' एक बार फिर इस सुसमाचार के अनुसार बपतिस्मा लेना उद्धार का एक भाग है। पद 17 और 18 स्पष्ट प्रकट करते है कि यह नया सुसमाचार जिसमें 'चिन्ह और चमत्कार' ईंधन का काम करते हैं वास्तव में पूर्ण रूप से यहूदियों के लिये था, उसमें कोई अन्यजातियां शामिल नहीं थी। लूका 24:47 में भी विचारधारा का संबंध यहूदियों के लिये 'स्वर्ग के राज्य' के संदेश से है। 'पश्चाताप और पाप–क्षमा।' मत्ती, मरकुस और लूका के तीन सुसमाचारों की तुलना करने पर, यद्यपि वे कुछ–कुछ भिन्न कहानी कहते हैं, सब मिलाकर एक साथ देखने पर 'बपतिस्मा, पश्चाताप और पाप–क्षमा' का तथ्य प्रदर्शित करते हैं, और ये सभी मसीह के स्वर्ग पर उठाये जाने के बाद भी जारी थे। इसमें अन्यजातियों के लिये कोई प्रावधान नहीं था। स्वाभाविक था कि सभी निरुत्तर करने वाले सत्यों और चिन्हों के आश्चर्यकर्मों के बाद और क्रूस पर मसीह के पुनरुत्थान के आश्चर्यकर्म के पश्चात जब राष्ट्र को दर्शाया गया कि वही उनका जी उठा मसीहा था इस्त्राएल को स्वर्ग के राज्य कि घोषणा की गई। यदि इस्राएल विश्वास करता और पश्चाताप करता, तो यह राज्य स्थापित हो जाता। एक बार फिर कहें, इसमें अन्यजातियों के लिये प्रावधान नहीं था। मत्ती 10 में दिये आदेश, 'अन्यजातियों की ओर न जाना' से पीछे हटने या उसे निरस्त करने की बात नहीं थी।

यह ध्यान देना अति रुचिकर है कि मत्ती 10 में मसीह द्वारा चेलों को दी गई दान–वरदानों की मूलसूची में 'अन्य भाषायें' बोलना शामिल नहीं है। क्यों? इसलिये कि मसीह की स्थानीय सेवकाई में उसकी आवश्यकता नहीं थी जहां सबकी एक ही आम भाषा थी। परंतु मरकुस 16 में मसीह ने अन्य–अन्य भाषा बोलने के वरदान को जोड़ा क्योंकि तथ्य रूप में मिशन अब स्थानीय न होकर वैश्विक होने वाला था और उसमें सभी देशों से यहूदी सम्मिलित होने वाले थे। आप देखिये कि अंतिम अस्वीकार यहूदियों के वैश्विक अस्वीकार के कारण या केवल स्थानीय अस्वीकार के कारण नहीं। ऐसी नीति क्यों? परमेश्वर प्रत्येक यहूदीजन को इस्राएल देश का एक अंग मानते है, केवल वे ही नहीं जो खास इस्राएल में रहते थे इसलिये निष्पक्ष और उचित (सही) होने के कारण परमेश्वर ने प्रत्येक यहूदीजन को अवसर दिया फिर चाहे वे किसी भी अन्य देश के नागरिक क्यों न बन चुके थे। यही प्रथम दृष्टी से अन्य–अन्य भाषाओं का कारण है।

यशायाह 28:11

11 वह तो इन लोगों से परदेशी होंठों और विदेशी भाषा वालों के द्वारा बातें करेगा।

स्पष्ट रूप में यह यहूदियों के लिये पवित्र शास्त्र का पूरा होना है। जब प्रेरितों के काम, अध्याय 7 में अंतिम रूप में तिरस्कार किया गया, पृथ्वी के प्रत्येक यहूदी ने उनके मसीहा को अस्वीकृत किया, केवल बचे हुओं को छोड़कर। यही सिद्धांत 1 कुरिन्थियों में भी स्पष्ट रूप में प्रदर्शित किया गया है।

1 कुरिन्थियों 14:21

21 व्यवस्था में लिखा है, कि प्रभु कहता है, "मैं विदेशी भाषा बोलने वाले तथा, विदेशियों के होंठों द्वारा इस जाति से बात करूंगा फिर भी ये मेरी नहीं सुनेंगे।

पवित्रशास्त्र में भविष्यद्वाणी की रीति पर प्रकट अन्य अन्य भाषायें सदैव इब्रानी भाषा न बोलने वाले यहूदियों को मसीहा और उसके आगमन की सूचना देने के अभिप्राय से थी, जिसमें प्रेरितों के काम 10:46 एक अपवाद है, जहां अन्यजातियों में से सर्वप्रथम हृदय परिवर्तन करने वालों द्वारा अन्य–अन्य भाषायें बोली गई और यह यहूदियों के लिये एक चिन्ह था जो प्रकट करता था कि परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी वास्तव में 'कलीसिया' में शामिल किया है। ऐसा एक भी अध्याय और पद नहीं है जिसमे वर्णन हो कि किसी अन्यजाति ने अन्य अन्य भाषा में बातें की, या उसे दोबारा ऐसा करने के लिये प्रोत्साहित किया गया हो।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की अनुपस्थिति के साथ यहूदियों का स्थानीय से वैश्विक बनना कैसे संभव था? किसे वैश्विक यहूदी बनने के लिये तरीका और संदेश दिया गया था कि स्वर्ग का राज्य स्थापित हो?

मत्ती 16:16–21

16 शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।"

17 यीशु ने उस उस से कहा, हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है, क्योंकि मांस और लोहू ने इसे तुझ प्रकट नहीं किया, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है।

18 और मैं तुझ से यह भी कहता हूं, कि तू पतरस है, और मैं इसी चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।

19 मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा, और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा, और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।

20 तब उस ने चेलों को चेतावनी दी, कि वे किसी से न कहें कि मैं मसीह हूं।

21 उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, कि अवश्य है, कि यरूशलेम को
जाऊं, और प्रचीनों और मुख्य याजकों और शास्त्रियों के द्वारा बहुत दुःख उठाऊं, और
मार डाला जाऊं, और तीसरे दिन जीलाया जाऊं।

संदर्भ पदों का यह समूह स्पष्ट रूप में संकेत देता है कि इस्राएल के लिये 'स्वर्ग का राज्य' और उसके पुनःघोषणा मसीह और उसके क्रूस पर चढ़ाये जाने के बाद एक नये रूप में इस्राएल को दिये जाने थे। पद 17 में पतरस को परमेश्वर से प्रकाशन मिलता है जिसका संबंध मसीह के ईश्वरत्व और उद्देश्य से था। पद 18 में इस विशेष प्रकाशन के कारण मसीह पतरस को निर्देश देते हैं कि 'इस चट्टान' पर मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा। क्या कलीसिया की बुनियाद पतरस था या प्रकाशन का यह सत्य कि 'यीशु ही जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है?

1 कुरिन्थियो 3:10-11

10 परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार, जो मुझे दिया गया है, मैं ने एक कुशल
राजमिस्त्री की भांति नींव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है। परन्तु प्रत्येक
मनुष्य सावधान रहे, कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है।
11 क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है - और वह यीशु मसीह है - कोई दूसरी नींव
नहीं डाल सकता।

स्पष्ट है कि यीशु मसीह जो चट्टान उसी पर बुनियाद बांधी गई, न कि पतरस। दूसरे शब्दों में पतरस को दिया गया प्रकाशन मसीह की चट्टान का था, पतरस की चट्टान का नहीं।

वचन 19 राज्य की भावी घोषणा की परिभाषा करने वाला वचन है, 'मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा।' इस बिंदु पर यीशु स्पष्ट रूप में जानते थे कि उन्हें अस्वीकार किया जायेगा और निकट भविष्य में क्रूस पर चढ़ाया जायेगा। इस बाद के दिन पतरस को एक बार फिर 'कुंजियों' का प्रस्ताव क्यों दिया गया? और कुंजियां क्या है? आप पाते हैं, दो कुंजियों का उल्लेख है। प्रथम का उपयोग प्रेरितों के काम अध्याय 2 में स्वर्ग के राज्य की दुसरी घोषणा में किया गया है। उनमें निश्चय 'जल का बपतिस्मा' और पवित्रात्मा पाने के लिये पश्चाताप करना शामिल है। पतरस ने दूसरी कुंजी का उपयोग प्रेरितों के काम 10:43 में अन्यजातियों के लिये परमेश्वर के राज्य को खोलने में किया था। इस प्रकार कुंजी बहुवचन है, एकवचन नहीं। दूसरी कुंजी पवित्रात्मा प्राप्त करने बपतिस्मा और पश्चाताप की आवश्यकता को समाप्त करती है।

मत्ती 28:18-20

18 तब यीशु ने उन के पास आकर कहा, 'स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया
गया है।

19 इसलिये जाओ सब जातियों के लोगों को चेले बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र और
पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो,
20 और जो जो मैंने तुम्हें आज्ञाएं दी है, उनका पालन करना सिखाओ और देखो, मैं
युग के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूं।

प्रेरितों के काम में पवित्रात्मा के आगमन के बाद पतरस को क्या प्रचार करना था और क्या स्थानीय यहूदियों की प्रतिक्रिया में स्वर्ग के राज्य का निषेध था?

प्रेरितो के काम 1:5-8

5 यूहन्ना ने तो जल से बपतिस्मा दिया, परन्तु अब से थोड़े दिनों के पश्चात तुम
पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे।
6 अतः जब वे एकत्रित हुए तो वे उस से पुछने लगे, "प्रभु, क्या तू इसी समय इस्त्राएल
के राज्य को पुनः स्थापित कर देगा?
7 उस ने उन से कहा, "उन समयों अथवा कालों को जानना, जिन्हे पिता ने निर्धारित
किया है, तुम्हारा काम नहीं।
8 परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे, और यरूशलेम,
सारे यहूदिया और सामरिया में, और यहां तक कि पृथ्वी के छोर तक तुम मेरे साक्षी
होगे।"

पद 6 में जब यीशु से पूछा गया 'क्या तू इसी समय इस्त्राएल के राज्य को पुनः स्थापित कर देगा?' यीशु ने इस संभावना को समाप्त नहीं किया।

प्रथम प्रभाग
का परीक्षण

प्रथम प्रभाग का परीक्षण

मुझे करिश्माई मत और उनके आग्रह पर आश्चर्य होता है कि वे कलीसिया के लिये सुसमाचारों से धर्मशिक्षा बनाते हैं जिनका संबंध पूर्ण रूप में यहूदियों और मसीहा के प्रकाशन से है। सबसे पहली बात यह है कि कलीसिया किसी मसीहा की न तो अब और न हीं कभी भविष्य मे प्रतिक्षा करेगी। हम एक उद्धारकर्ता के उत्पाद है, हमारा विश्वास आज पूर्ण रूप में मसीह और उसके पूर्ण किये गये कामों पर है न कि स्वर्ग के राज्य की प्रतिज्ञाओं पर। मसीह ने सुसमाचारों में किसी को पवित्रात्मा इस अर्थ से नहीं दीया जैसा आज देते हैं कि वह विश्वास करने वालों में निवास करें।

1 कुरिन्थियो 4:16

16 अतः मै तुमसे आग्रह करता हूं कि तुम मेरा अनुकरण करो।

1 कुरिन्थियो 11:1

1 जैसा मै मसीह का अनुकरण करता हूं, वैसा ही तुम भी मेरा अनुकरण करो।

फिलिप्पियो 3:17

17 भाइयो, तुम सब मिलकर अनुकरण करो, और उन्हें ध्यान से देखो, जो इस रीति से चलते हैं जिसका नमुना तुम हम में देखते हो।

1 थिस्सलुनीकियो 1:6

6 तुम वचन को बड़े क्लेश में, पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ, ग्रहण करके हमारी तथा प्रभु के अनुकरण करनेवाले भी बन गए।

आप पायेंगे कि ऊपर दिए गए वचन सीधे–सीधे कलीसियाई पत्रियों से है, जिनसे स्पष्ट है कि कलीसिया पौलुस के निर्देश का पालन करे जिसमें पौलुस के माध्यम से हमें दी गई मसीह की प्रत्येक पद्धति या तरीके की रूपरेखा दी गई है। अब एक सरल प्रश्न है, क्या सुसमाचार और वह सब जो यीशु ने यहूदियों से करने के लिये कहा वह एकीकृत कलीसियाई पुस्तकों की स्पष्ट धर्मशिक्षा के अनुकूल है? हमसे कहा गया है कि पवित्र शास्त्र से पवित्रशास्त्र (अन्य संदर्भ पदों) की तुलना (मिलान) करके ही सदैव सत्य को समझना चाहिये।

1 कुरिन्थियों 2:13

13 उन्हीं को हम मनुष्यों के ज्ञान के सिखाए हुए शब्दों में नहीं, परन्तु आत्मा के सिखाए हुए शब्दों में, अर्थात आत्मिक बातें आत्मिक विचारों को आत्मिक शब्दों से मिलाकर व्यक्त करते हैं।

यह बात स्पष्ट है कि हमारे पास पवित्रशास्त्र की 66 पुस्तकों में संपूर्ण प्रकाशन दिया जा चुका है, और प्रकाशितवाक्य के बाद कोई भी नयी जानकारी को अतिरिक्त प्रकाशन के रूप में नहीं जोड़ा जा सकता।

प्रकाशितवाक्य 22:18-20

18 मैं प्रत्येक को जो इस पुस्तक की नबूवत के वचनों को सुनता है, गवाही देता हूं : यदि कोई मनुष्य इनमें कुछ बढ़ाएगा तो परमेश्वर इस पुस्तक में लिखीं उन विपत्तियों को, उस पर बढ़ाएगा।

19 यदि कोई इस नबूवत की पुस्तक की वचनों को घटाएगा, तो परमेश्वर इस पुस्तक लिखित जीवन के वृक्ष और पवित्र नगर में से उसका भाग छिन लेगा।

20 जो इन बातों की साक्षी देता है, वह यह कहता है : हां, मै शीघ्र आने वाला हूं।" आमीन। हे प्रभु यीशु आ।

आइये, हम पवित्रशास्त्र की कुछ संदर्भ पदें जो सुसमाचारों में है, उनके संदर्भ का परीक्षण करें और देखे कि वे मसीह द्वारा कलीसिया के लिये पौलुस को दिये प्रकाशनों से मेल खाते हैं, या नहीं।

मत्ती 4:17

17 उस समय से यीशु ने यह प्रचार करना और कहना आरम्भ किया : "मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।"

क्या स्वर्ग का राज्य आज निकट है? नहीं, जब तक कि कलीसिया स्वर्ग पर उठाई नहीं जाती। मसीह का यह कथन परमेश्वर के राज्य और आज के संतों पर लागू नहीं होता।

मत्ती 5:1-10

1 इस भीड़ को देखकर, वह पर्वत पर चढ़ गया, और जब बैठ गया तो उसके चेले उसके पास आए।

2 और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा :

3 धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

4 धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे सान्त्वना पाएंगे।

5 धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के उत्तराधिकारी होंगे।

6 धन्य हैं वे जो धर्मिकता के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जाएंगे।

7 धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

8 धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

9 धन्य हैं वे, जो मेल करवाने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।
10 धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

पहाड़ी उपदेश एक उत्कृष्ट उदाहरण है कि स्वर्ग के राज्य की घोषणा करते हुए यीशु किन लोगों के बिच सेवकाई कर रहे थे। पद 3 'धन्य है वे जो मन के दीन है क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।' राज्य में 'मन का दीन' का अर्थ है, परंतु यदि कलीसिया की पुस्तकों से तुलना करें तो परमेश्वर के राज्य में प्रवेश हेतु उद्धार में उनका मूल्य नहीं है। पद 5, धन्य है वे जो नम्र है क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। एक बार फिर निश्चित संदर्भ मसीह और पृथ्वी पर स्वर्ग के राज्य से है। इसी प्रकार 'नम्रता' को उद्धार के लिये सूचीबद्ध नहीं किया गया है। पद 10 'धन्य है वे जो धर्म के नाम पर सताये जाते हैं।' यहां प्रतिफल उद्धार नहीं पर स्वर्ग के राज्य की प्रतिज्ञा है। सभी कुछ यहूदियों के लिये, सभी बातें भविष्य के लिये है।

मत्ती 5:22

22 परन्तु मै तुम से कहता हूं कि हर जो अपने भाई पर क्रोधित होगा वह न्यायालय मे दण्ड के योग्य ठहरेग; और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह सर्वोच्च न्यायालय मे दोषी ठहरेगा; औ जो कोई कहेगा, 'अरे मुर्ख, वह नरक के आग के दण्ड के योग्य होगा।

आज की कलीसिया में यदि आप किसी व्यक्ति को 'मूर्ख' कह दे, क्या आप नर्क की अग्नि में जाने के खतरे में हैं? नहीं, जरा भी नहीं, जब हमारा उद्धार होता है, हम पर उद्धार के दिन तक के लिये मुहर की जाती है।

इफिसियों 4:30

30 परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है।

1 कुरिन्थियों 15:36

36 हे मूर्ख जो कुछ तू बोता है, जब तक वह मर न जाये जिलाया नही जाता।

यहां तुलनात्मक रूप में पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया में जो पुनरूत्थान की त्रुटिपूर्ण शिक्षा दे रहे थे, उन्हें 'मूर्ख' कहा तो क्या पौलुस नर्क जाने के खतरे में था? नहीं, आप सुसमाचारों के बाद और उनमें 'स्वर्ग के राज्य' के निर्देशों से बाहर ऐसी कोई चेतावनी नहीं पाते।

मत्ती 6:19-20

19 अपने लिये पृथ्वी पर धन संचय न करो, जहां कीड़ा और जंग नष्ट करते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चोरी करते हैं।

20 परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन संचय करो, जहां न तो कीड़ा, और न जंग नष्ट करते हैं, और न ही चोर सेंध लगाकर चोरी करते हैं।

इन पदों में किसी भी स्वरूप में धनसंग्रह न करने की स्पष्ट चेतावनी दी गई है, मुझे आश्चर्य होता है कि करिश्माई मत के प्रधान और चालकों के पास कितनी अधिक मात्रा में व्यक्तिगत धन का संग्रह है। आप मसीह की कही बातों और करिश्माई प्रचारकों के प्रचार में कैसे तालमेल बैठाते हैं? यहां तक कि यह विचार कि यीशु सभी मसीहियों को धनवान बनाना चाहते हैं, सिद्धांत रूप में यीशु या पौलुस के द्वारा पवित्रशास्त्र में नहीं मिलता।

मत्ती 10:7-10

7 और जाते हुए तुम प्रचार करके कहना, 'स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।'

8 बीमारों को चंगा करो, मृतकों जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्टात्माओं को निकालो। तुम ने मुफ्त पाया है, मुफ्त में दो।

9 अपनी कमर की अंटी में न तो सोना, और न चांदी, और न तांबा रखना।

10 यात्रा के लिये न झोली, यहां तक की दो कुर्ते भी नहीं, न जूती और न लाठी लो, क्योंकि मजदूर भोजन का अधिकारी है।

यीशु ने अपने चेलों को सिखाया और उन्हें बीमारों को चंगा करने, मृतकों को जिलाने इत्यादि की सामर्थ दी। परंतु यह काम सेंतमेंत किया जाना था यह निःशुल्क दिया जाना था, यह नहीं कि देने के बाद दान में वापस मांग ले। क्या आपने कभी देखा कि चंगाई की सेवकाई करने वाले किसी सेवक ने बिना दानपेटी रखे यह काम किया? पद 9 में कहा गया है, 'अपनी कमर की अंटी में न तो सोना, और न चांदी, और न तांबा रखना।' इसका अर्थ है रूपया पैसा नहीं। यहां पर संदेश स्पष्ट है और उसका उद्देश्य भी स्पष्ट है। पद 7: 'स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।' सभी यहूदी, सभी कुछ भविष्य के लिये।

मत्ती 19:21-24

21 यीशु ने उस से कहा, यदि तू सिद्ध होना चाहता है तो जा, अपनी सम्पत्ति बेचकर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा, तब आकर मेरे पीछे चल।

22 पर जब नवयुवक ने यह सुना तो शोकित होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।

23 तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, "मैं तुम से सच कहता हूं, कि धनवान का स्वर्ग
के राज्य में प्रवेश करना कठिन है।
24 मैं फिर तुम से कहता हूं, कि किसी धनवान का परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने
की अपेक्षा ऊंट का सूई के छिद्र में से निकल जाना अधिक सरल है।

एक बार फिर यीशु आधुनिक करिश्माई अभिमत के विपरीत बात करते हैं। करिश्माई कहते हैं 'बीज राशि' भेजिये और धनवान बनें, जबकि यीशु कहते हैं अपना सब कुछ बेचकर मेरे पीछे हो लें और तुझे अनंत जीवन मिलेगा। कौन सही है? पद 23: 'धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है।' 'पद 24: परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सुई के नाके में से निकल जाना सहज है।' यहां दो राज्यों का वर्णन है। दोनों ही स्थितियों में लगता है कि धन संपत्ति की बहुतायत उद्धार की संभावना को अत्याधिक कम करती है। तब क्यों करिश्माई जोर देकर कहते हैं कि परमेश्वर चाहते हैं कि सब धनवान बने?

मत्ती 19:29-30

29 और प्रत्येक जिस ने मेरे नाम के लिये घरों या भाइयों, या बहिनों या पिता या
माता या बच्चों या खेतों को छोड़ दिया है, वह इस से कई गुना अधिक पाएगा और
अनन्त जीवन का अधिकारी होगा।
30 परन्तु अनेक जो प्रथम हैं, अंतिम होंगे, और जो अंतिम हैं, वे प्रथम होंगे।

क्या राज्य के युग का विचार, जिसमें सब कुछ यहां तक कि पत्नी और बच्चों का परित्याग भी शामिल है, आज के संदर्भ में अमल करने योग्य है?

1 तिमुथियुस 5:8

8 परन्तु यदि कोई अपने लोगों की, और विषेशकर अपने परिवार की, देखभाल
नहीं करता तो वह अपने विश्वास से मुकर गया है और एक अविश्वासी से भी
निकृष्ट है।

निश्चय ही नहीं, यदि आज हम हमारे परिवार का परित्याग करें और यीशु के पीछे चलें, तो हम विश्वास का इंकार करते हैं, और 'अन्यजातियों से भी बदतर है' ऐसा पौलुस ने कहा था।

यूहन्ना 6:54-55

54 जो मेरा मांस खाता और मेरा लहू पीता है, अनन्तजीवन उसका है, और मैं अन्तिम
दिन उसे जिला उठाऊँगा।
55 क्योंकि मेरा मांस तो वास्तविक भोजन है और मेरा लहू वास्तविक पीने की वस्तु है।

क्या यह अनुप्रयोग आज लागू किया जा सकता है? निश्चय नहीं। हमारा उद्धार मसीह को अपनी देह में रखने (खाने) से नहीं हुआ है, परंतु सत्य इसके विपरीत है, अर्थात उसने हमें अपनी देह में रखा है, यह तब हुआ जब हम मसीह की देह में पवित्रात्मा के द्वारा बपतिस्में में जोड़े गये। यह पानी का बपतिस्मा नहीं परंतु एक आत्मिक बपतिस्मा है।

हम बहुत से अन्य उदाहरण दे सकते हैं परंतु ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है। स्वर्ग का राज्य किसी भी प्रकार से एकीकृत कलीसिया और उसकी धर्मशिक्षा के साथ मिश्रित नहीं किया जा सकता। जब आप दोनों की तुलना करते हैं तब अति सहजता से उनके आपस में न मिलने का गुण प्रकट हो जाता है। स्वर्ग का राज्यः यहूदी, चिंन्ह और चमत्कार अपना सब कुछ बेचकर पीछे चलो। कलीसिया का युग चिंन्ह और चमत्कार नहीं परिवार की स्थापना, परित्याग नहीं, विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार, और यह पुराने नियम के कामों के द्वारा नहीं है।

पुराना नियम कहां समाप्त हुआ ?

पुराना नियम कहां समाप्त हुआ?

हम मसीही जो परम्परागत रूप से सीखते आये हैं सदैव विश्वास करते हैं कि पुराना नियम मलाकी की पुस्तक में समाप्त होता है। यदि ऐसा है तो स्वर्ग के राज्य की स्थापना और प्रतिज्ञा के मसीहा का आगमन का कार्य अधूरा है, परंतु मैं आपसे कहना चाहता हूं कि कहानी ऐसी नहीं है। मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना के सुसमाचार स्वर्ग के राज्य की प्रतिज्ञाओं और प्रतिज्ञा किये गये मसीहा के आगमन और इस राज्य की स्थापना के अभिलेख है। ध्यान दे कि यीशु की सेवकाई के दौरान जैसा कि सुसमाचारों में है, व्यवस्था तब भी लागू थी और बलिदान चढ़ाने के स्थान के रूप में मंदिर सुचारू रूप में काम कर रहा था। तब प्रश्न उठता है, पुराना नियम और उसकी व्यवस्था का पालन कब समाप्त हुआ?

मत्ती 27:50-52

50 तब यीशु ने ऊंची आवज से चिल्लाकर प्राण त्याग दिया।

51 और देखो, मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया, और पृथ्वी डोल उठी और चटानें भी तड़क गईं।

52 और कब्रें खुल गईं, और सोए हुए बहुत-से पवित्र लोगों की शव जीवित हो उठे।

मरकुस 15:37-39

37 तब यीशु ने बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण त्याग दिया।

38 और मन्दिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया।

39 जो सूबेदार उसके सम्हने खड़ा था, जब उसे इस तरह प्राण त्यागते देखा, तो उस ने कहा, "निःसंदेह यह मनुष्य, परमेश्वर का पुत्र था!"

यह समझने के बाद कि सुसमाचार की पुस्तकें नया नियम नहीं परंतु पुराना नियम है, नया नियम कहां आरंभ हुआ?

इब्रानियों 9:16-17

16 क्योंकि जहां वसीयतनामा है वहां उसके लिखने वाले की मृत्यु का होना अवश्यक है।

17 मनुष्यों की मृत्यु के बाद ही वसीयतनामा पक्का होता है।

प्रतिज्ञा (वसीयत) करने वाले की मृत्यु पर बिना उसका लोहू बहाये पाप के लिये अंतिम रूप में कोई बलिदान नहीं था। उसकी मृत्यु पर मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे फट गया और व्यवस्था के प्रकाशनों को पूरा किया, इस प्रकार व्यवस्था का अंत हुआ। कृपया स्मरण करे, यीशु ने अपने जन्म से व्यवस्था का इंकार नहीं किया, परंतु अपने जीवन से व्यवस्था को पूरा किया।

मत्ती 5:17-18

17 यह न समझो की मै व्यवस्था या नबीयों की पुस्तकों नष्ट करने आया हूं। नष्ट करने नहीं परन्तु पूर्ण करने आया हूं।

18 क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी जब तक कि सब कुछ पुरा न हो जाय, नहीं टलेगा।

पवित्र शास्त्र के इस सरल सत्य के बिना बाइबल बड़े असमंजस में डालने वाली बन जाती है और मनुष्य बड़ी आसानी से तोड़ मरोड़कर अधिकांश पुराने नियम और उसके नियमों और व्यवस्था के सिद्धांतों को पूर्ण रूप में स्वतंत्र नये नियम की कलीसिया पर लाद सकते हैं।

गलातियों 2:16

16 हम जनते है कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है, इसी कारण हम ने भी मसीह यीशु पर विश्वास किया है, कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहराए जाएं, क्योंकि कि व्यवस्था के कामों से कोई मनुष्य धर्मी न ठहरेगा।

तब सुसमाचार की पुस्तकों को मलाकी से क्यों नहीं जोड़ा गया? यदि इस्राएल राष्ट्र यीशु को स्वीकार कर लेता, तब ऐसा किया जाता, परंतु समस्त इस्राएल के पूर्ण अस्वीकार के कारण मसीहा का आना मान लेने पर यह मानना पड़ता कि यीशु ही मसीहा था, और यद्यपि यह सत्य है, यहूदी राष्ट्र ने यह मानने से इंकार कर दिया था।

रोमियो 11:8-10

8 जैसा लिखा है, कि "परमेश्वर ने उन्हें आज के दिन तक भारी नींद में डाल रखा है और ऐसी आंखें दी जो न देखें और ऐसे कान जो न सुनें।"

9 और दाउद कहता है, "उन का भोजन उन के लिये जाल, और फन्दा, और ठोकर, और दण्ड का कारण हो जाए।

10 उन की आंखों पर अन्धेरा छा जाए ताकि न देखें, और उन की पीठ सदा के लिए झुकी रहे।"

रोमियों 11:25

25 क्योंकि भाइयों, मै नहीं चाहता कि तुम अपने आप को बुद्धिमान समझ कर इस रहस्य से अनभिज्ञ रहो, कि इस्त्राएल का तब तक कठोर बना रहेगा जब तक गैरयहूदियों की संख्या पुरी न हो जाए।

इस तिरस्कार के कारण इस्राएल राष्ट्र पर एक अंधत्व छा गया। दूसरे शब्दों में वे नहीं देख सकते थे कि नये नियम में विश्वासियों को सरल रूप में क्या प्रकाशन दिया गया है, परमेश्वर के पवित्रात्मा द्वारा दिया गया प्रकाशन, जिसे यहूदीजन सामूहिक रूप में समझ नहीं सके। यही कारण है कि यहूदियों का एक छोटा बचा हुआ भाग ही है जिन्होंने विगत शताब्दियों में मसीह को पाया है।

रोमियों 11:7-8

7 तो क्या हुआ, इस्राएली जिसकी खोज में थे, वह उन्हे प्राप्त न हुआ, परन्तु उनको
हुआ जो चुने हुए थे, और शेष कठोर कर दिए गए।
8 जैसा लिखा है, कि "परमेश्वर ने उन्हें आज के दिन तक भारी नींद में डाल रखा
है और ऐसी आंखें दी जो न देखें और ऐसे कान जो न सुनें।"

पतरस और उसका खतने का सुसमाचार

पतरस और उसका खतने का सुसमाचार

प्रेरितों के काम 2:36-47

36 इसलिए इस्त्राएल का सम्पूर्ण घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसे 'प्रभु' और
'मसीह' दोनो ही ठहराया - इसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया।"
37 उन्हाने जब यह सुना तो उनके हृदय छिद गए, और वे पतरस और अन्य प्रेरितों से
पूछने लगे, "हे भाइयो, हम क्या करें?"
38 पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक यीशु मसीह के नाम
से बपतिस्मा कि तुम्हारे पापों की क्षमा की क्षमा हो, और तुम पवित्र आत्मा का
वरदान पाओगे।
39 क्योंकि वह प्रतिज्ञा तुम्हारे और तुम्हारी सन्तानों के लिए और उन सब के लिए है
जो दूर दूर हैं अर्थात वे सब जिनको को प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।
40 और बहूत-सी अन्य बातों से साक्षी दे देकर वह उनसे आग्रह करता रहा कि इस
कुटिल पिढ़ी से बचो।
41 अतः जिन्हों ने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया और उसी दिन तीन
हजार मनुष्यों के लगभग उन में मिल गए।
42 और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना
करने में लवलीन रहे।
43 और प्रत्येक व्यक्ति पर भय छाया रहा, और बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों
के द्वारा होते थे।
44 और वे सब विश्वासी मिलजुलकर रहते थे, और उन की सब वस्तुएं साझे की थीं।
45 और वे अपनी अपनी सम्पत्ति और सामान बेच बेचकर जैसी जिस की आवश्यकता
होती थी बांट दिया करते थे।
46 और वे प्रति दिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर घर रोटी तोड़ते
हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे।
47 और परमेश्वर की स्तुति किया करते थे। और सब लोग उन से प्रसन्न थे, और जो
उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रति दिन उन में मिला देता था।

आरंभिक 'पहले यहूदी' कलीसिया का प्रारंभ किसी भी प्रकार से पौलुस के सुसमाचार की ' फिर अन्यजातीय' कलीसिया से तालमेल नहीं रख सकती थी। आधुनिक मसीहत की सबसे बड़ी गलतियों में एक है कि वे मानते हैं, यह संभव था। कृपया, पतरस के संदेश की विषयवस्तु

पर ध्यान दे या स्वर्ग के राज्य की कुंजियों पर जो मत्ती 16:19 में पतरस को दी गई थी। पद 38 का संदेश वही है जो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने सुसमाचारों में प्रचार किया था। 'पश्चाताप करो' और 'पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लो' ये ठीक वही शब्द है जिनमें यह जोड़ा गया है 'और तुम पवित्रात्मा का दान पाओगे' सावधानीपूर्वक ध्यान दे पवित्रात्मा का दिया जाना बपतिस्में के बाद था। वास्तव में, तब 'पापों की क्षमा बपतिस्मे से थी' जैसा कि यूहन्ना ने प्रचार किया था।

यह सकारात्मक प्रमाण है कि कुंजियां जो स्वर्ग के राज्य के लिए पतरस को दी गई थी कि वह यहूदियों को स्वर्ग के राज्य का फिर से प्रस्ताव दे। मेरी जान पहचान के बहुत से बैपटिस्ट प्रचारक ग्रीक भाषा का सहारा लेते हैं और *'के लिये'* का वास्तविक अर्थ *'क्योंकि'* बताते हैं, इस प्रकार उस त्रुटि को ढंक देते हैं जो वे बपतिस्मे से पुनः जीवन की शिक्षा में देते हैं। अब यदि इसका अर्थ 'के लिये' नहीं है तब आप नीचे दी गई पद की व्याख्या कैसे करेंगे?

प्रेरितों के काम 8:16

16. क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था, उन्होंने केवल प्रभु यीशु के नाम से बपतिस्मा लिया था।

यह बात स्पष्ट रूप से प्रकट है कि 'यहूदी प्रथम' कलीसिया को पवित्र आत्मा का वरदान (दान) पाने के लिये बपतिस्मा लेना आवश्यक था। मेरा विश्वास है कि यह गलती इस कारण है कि यह नहीं समझा जा रहा है कि पवित्रात्मा का दान, पवित्रात्मा से मोहर करना नहीं है। पवित्रात्मा से मोहर का प्रकाशन केवल पौलुस के प्रकाशन वाले एकीकृत चर्च या गुप्तज्ञान की कलीसिया को दिया गया था। पवित्र आत्मा द्वारा मोहर करना बिना बपतिस्मा लिये, हृदय परिवर्तन करने वाले प्रथम अन्यजातीय लोगों को दिया गया था (प्रे.काम 10)। आईये, हम प्रेरितों के काम 2 के पद 41 में पतरस के 'कुंजी' संदेश पर ध्यान दें: लिखा है– 'जिन्होंने प्रसन्नतापूर्वक वचन को ग्रहण किया, उन्हें बपतिस्मा दिया गया।' यह वैकल्पिक नहीं था जैसा आज है। बपतिस्मा लेने के बाद ही उन्हें कलीसिया में मिलाया गया। कृपया पद 42 में 'प्रेरितो से शिक्षा' शब्द पर ध्यान दें। यह शिक्षा किसी भी प्रकार से पौलुस की एकीकृत और गुप्तज्ञान की कलीसिया की शिक्षा नहीं हो सकती थी। क्यों? क्योंकि उस काल में पौलुस, शाऊल था, प्रेरितो के काम 9 का प्रेरित पौलुस नहीं, बल्कि मसीहियों को अत्याधिक सताने और मारने वाला शाऊल था।

पद 43–46 वास्तव में उन प्रयासों पर प्राणघातक प्रहार है जो वर्तमान झूठी करिश्माई धर्मशिक्षा को प्रेरितों के काम अध्याय 2 की 'यहूदी प्रथम' धर्मशिक्षा से जोड़ती है। यदि करिश्माई मत वाले प्रेरितों के काम 2, पद 44 के समान भावना रखते है तो वे अपना सब कुछ

बेचकर प्रेरितों के पांव पर लाकर क्यों नहीं रखते ताकि उन्हें सभी में उनकी आवश्यकताओं के अनुसार बांट दिया जाये। इस आरंभिक पेंटिकुस्त की कलीसिया ने अपना सब कुछ बेचकर अन्य मसीहियों की आवश्यकतायें पूरा करने के लिये दे दिया था। अब क्या यह सत्य आधुनिक करिश्माई मत वालों को ऐसा ही करने प्रेरित करता है? मेरे जीवनकाल में तो नहीं। पद 46 पर ध्यान दे, वे आराधना करने अब भी मंदिर में जाते थे। पौलुस की कलीसियाई पत्रियों में एक भी स्थल ऐसा नहीं जिसमें मसीहीजन मंदिर जाकर कुछ करते थे। पौलुस का सुसमाचार हम पर प्रकट करता है कि एकीकृत और गुप्त–ज्ञान कलीसिया के विश्वासीजन स्वयं परमेश्वर का मंदिर है।

1 कुरिन्थियो 3:16

16. क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर के मंदिर हो और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?

मंदिर को 'भवन' से 'देह' में बदलने का यह प्रकाशन 'यहूदी प्रथम' कलीसिया के लिये अनजाना था। एक और महत्वपूर्ण अंतर प्रेरितो के काम 5 में पाया जाता है।

प्रेरितो के काम 5:1–16

1 और हनन्याह नाम एक मनुष्य, और उस की पत्नी सफीरा ने कुछ भूमि बेची।
2 और उसके मुल्य में से कुछ अपने लिए रख छोड़ा–और यह बात उस की पत्नी भी जानती थी, तब उसका कुछ भाग लाकर प्रेरितों के चरणों पर रख दिया।
3 परन्तु पतरस ने कहा, "हे हनन्याह, शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले, और भूमि के मुल्य में से कुछ बचाकर रख ले?
4 जब की वह बिकी न थी तो क्या तेरी न थी? और जब बिक जाने के बाद क्या वह तेरे अधिकार में न थी? तू ने अपने मन में ऐसा करने का विचार क्यों किया? तुने मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला है।
5 इन बातों को सुनते ही हनन्याह गिर पड़ा, और उसने प्राण छोड़ दिए और सब सुनने वालों पर बड़ा भय छा गया।
6 जब जवानों ने उठकर उसके शव को कपडे में लपेटा और बाहर ले जाकर उसे दफना दिया।
7 लगभग तीन घंटे के पश्चात उस की पत्नी, इस घटना के विषय में कुछ न जानते हुए भीतर आई।
8 तब पतरस ने उस से कहा, "मुझे बता कि क्या तुम ने वह भूमि इतने ही में बेची थी? उस ने कहा, "हां, इतने ही में।"

9 पतरस ने उस से कहा, "यह क्या बात है, कि तुम दोनों ने प्रभु की आत्मा की परीक्षा करने की ठानी? देख, तेरे पति को दफनाने वालों के पैर की आहट द्वार तक आ पहुंची हैं, और वे तुझे भी बाहर ले जाएंगे।

10 तब वह तुरन्त उसके पैरों पर गिर पड़ी, और उसने भी प्राण छोड़ दिए। और जवानों ने भीतर आकर उसे मरा पाया, और बाहर ले जाकर उसके पति के पास दफना दिया।

11 इससे सारी कलीसिया पर और इन बातों के सब सुनने वालों पर, बड़ा भय छा गया।

12 और प्रेरितों के द्वारा लोगों के मध्य बहुत-से चिन्ह और अद्भुत कार्य हो रहे थे, और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे।

13 परन्तु औरों में से किसी को उनमें सम्मिलित होने का हियाव न होता था, फिर भी लोग उनकी बड़ी प्रशंसा करते थे।

14 प्रभु पर विश्वास करने वाले पुरूषों और स्त्रियों की भीड़ उनमे निरन्तर मिलती जा रही थी।

15 यहां तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला-लाकर, चारपाइयों और बिछौनो पर लिटा दिया करते थे, कि जब पतरस उधर से निकले तो उस की छाया ही उन में से किसी पर पड़ जाए।

16 और यरूशलेम के आस-पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और दुष्टात्माओं से पीडित लाया करते थे और वे सब बिमार चंगे हो जाते थे।

हनन्याह और उसकी पत्नी सफीरा का प्रकरण सरल अर्थ में लोभ और धोके के प्रकटीकरण का प्रकरण था। पद 1 एवं 2 में इन लोगों ने कुछ संपत्ति बेची परंतु पूरा दान न करके आधा देने और आधा बचाकर रखने की सोची। उनके लोभ ने विक्रय से प्राप्त धनराशि के विषय में उनसे झूठ कहलवाया, और यह कि उन्होंने कुछ बचा लिया था। इस योजना के कारण वे दान करने का पूरा श्रेय प्राप्त कर सकते थे, और अपने उपयोग के लिये कुछ धन बचाकर रख भी सकते थे। इसलिये उन्होंने तथ्यों को लेकर झूठ कहा। पतरस ने पवित्रात्मा के द्वारा हनन्याह पर उसका पाप प्रकट किया (पद 5)। परिणाम क्या हुआ? मृत्यु। पद 10 में इसी प्रकार उसकी पत्नी की भी मृत्यु हुई। स्पष्ट है यदि यही नियम आधुनिक करिश्माईयों पर लागू किया जा सके तो भीड़ में बड़ी संख्या में कमी आ जाएगी। प्रेरितो के काम 5 में छल और धोकाधड़ी के विरुद्ध पवित्रात्मा एक रक्षक था। आज कौन है जो करिश्माई आंदोलन में झूठे भाइयों की ओर संकेत कर रहा है? मुझे यह बड़ी मजेदार बात लगती है कि महान करिश्माई प्रचारक जैसे जिम बॅक्कर और रॉबर्ट टिल्टन लाखों लोगों के सामने धन और चंगाई को लेकर

सार्वजनिक रूप में झूठ बोल सकते है, और स्पष्ट तौर पर उन्हें परमेश्वर की ओर से कोई नुकसान नहीं होता। मेरे मित्र, प्रेरितो के काम 5 में परमेश्वर ने परमेश्वर की बातों के विषय में झूठ को अनुमति नहीं दी। वे जिन्होंने इस नियम का उल्लंघन किया उन्हें हटा दिया गया। परमेश्वर ने ऐसे झूठे लोगों से मंचों को नहीं पर कब्रों को भर दिया। परंतु आज ऐसा नहीं है, पद 11 पर ध्यान दें 'सारी कलीसिया पर.....बड़ा भय छा गया।' करिश्माई कलीसिया में इसी तत्व की कमी है – अर्थात उनमें स्पष्ट तौर पर परमेश्वर का भय नहीं है। अगुवे नियमित रूप में पवित्रशास्त्र के वचनों का दुरुपयोग और उनमें तोड़ मरोड़ करते हैं और उन्हें कुछ फल नहीं मिलता। महत्वपूर्ण कलीसियाई धर्मशिक्षाओं की अनदेखी (उपेक्षा) की जाती है और उन्हें नष्ट किया जाता है और यह सूची लंबी है। ऐसों के लिये प्रेरितों के काम 5 का दण्ड क्यों नहीं? अच्छ प्रश्न है!

प्रेरितों के काम
1 एवं 2

प्रेरितों के काम 1 एवं 2

यदि करिश्माई आंदोलन को विश्वसनीयता पाना है तो अवश्य है कि उनकी धर्मशिक्षाये प्रेरितों के काम अध्याय 1 एवं 2 पर आधारित हो। इस अध्याय में हम पवित्रात्मा का दिया जाना, अन्य अन्य भाषाओं का प्रारंभ, और अब वैश्विक हो चुके यहूदियों को पतरस का संदेश पाते हैं। आइये हम तथ्यों का परीक्षण करें जैसा प्रेरितो के काम अध्याय 2 में है।

प्रथम प्रश्नः पेंटिकुस्त के दिन अन्य अन्य भाषाओं का वरदान किसे मिला? करिश्माई सदैव दावा करते हैं कि उनकी संख्या कम से कम 120 थी, और वे इन पदों को अपने तर्क के प्रमाण में प्रस्तुत करते हैं।

प्रेरितो के काम 1:12-15

12 तब वे जैतून नाम के पहाड़ से जो यरूशलेम के निकट, एक सब्त के दिन की दूरी पर है, यरूशलेम को लौटे।

13 और जब वहां पहुंचे तो वे उस उपरी कक्ष में गए, जहां पतरस, यूहन्ना, याकूब, अन्द्रियास, फिलिप्पुस, थोमा और बरतुलमै, मत्ती, हलफई का पुत्र याकूब, शमौन जेलोतेस और याकूब का पुत्र यहूदा रहते थे।

14 ये सब कुछ स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और उसके भाइयों के साथ लगातार प्रार्थना में लगे हुए थे।

15 उस समय पतरस ने भाइयों के मध्य, में जो लगभग एक सौ बीस व्यक्ति थे, खड़े होकर कहा।

उपरौठी कोठारी में चेलों का इकट्ठा होना पेंटिकुस्त से कम से कम 10 दिन पहले था, जब पवित्रात्मा दिया गया था। वहां कुछ स्त्रियां और मरियम और उसके बच्चे भी उपस्थित थे (पद 14)। मेरे विचार से यह बात को कुछ अधिक खींचना है यदि हम कहें कि वे 10 दिनों से उस कमरे में थे। वास्तव में, पवित्रशास्त्र कुछ और ही संकेत देता है। प्रेरितों के काम 2:4 के अनुसार, 'वे सब पवित्रात्मा से भर गये.....वे अन्य–अन्य भाषा बोलने लगे।' इस पद के आधार पर करिश्माई साबित करते हैं कि स्त्रियां और मरियम भी उनमें शामिल थी। लेकिन प्रे.काम 2:14 में आगे कहा गया है, 'तब पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ' यह वचन स्पष्ट रूप में प्रकट करता है कि ग्यारह चेलों को ही सामर्थ मिली थी, 120 को नहीं, जो प्रे.काम 1:15 में वहां एकत्रित थे। यह सत्य 'स्त्रीयों और 'मरियम' को इस घटना से वंचित रखता है। यह सत्य 1 कुरिन्थियों के आधार पर साबित किया जा सकता है।

1 कुरिन्थियो 14:34

34. स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहे, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परंतु आधीन रहने की आज्ञा है, जैसा कि व्यवस्था में लिखा भी है।

स्त्रियों को 'बातें करने की आज्ञा नहीं है' न केवल कलीसियाओं में परंतु 'जैसा कि व्यवस्था में लिखा भी है।' मत भूलिये कि प्रेरितो के काम 2 की इस घटना ने 'कलीसिया' का आरंभ किया जिसमें 3000 व्यक्ति पूर्ण यहूदी कलीसिया में जोड़े गये। व्यवस्था ने स्त्रियों को 'बोलने से मना किया' और कलीसिया भी इसे रोकती है।

प्रेरितों के काम 2:1-11

1 जब पिन्तेकुस का दिन आया, तो वे सब एक स्थान पर इकट्ठे थे।

2 एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उस से सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया।

3 और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं और उन में से प्रत्येक पर आ ठहरीं।

4 वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जैसे ही आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भाषाओं में बोलने लगे।

5 यरूशलेम में यहूदी रहा करते थे अर्थात वे भक्त जो आकाश के नीचे स्थित देश से आए थे।

6 जब वह शब्द हुआ तो भीड़ लग गई और लोग भौचक्के हो गए, क्योंकि प्रत्येक ने उनको अपनी ही भाषा में बोलते सुना।

7 वे सब अश्चर्यचकित और विस्मित होकर कहने लगे, "ये सब जो बोल रहे हैं क्या सब गलीली नहीं?

8 तब यह कैसी बात है कि हम मे से प्रत्येक अपनी ही मातृभाषा में उन्हें बोलते हुए देखता है?

9 हम जो पारथी, मेदी, एलामी लोग, मेसोपोटामिया, यहूदिया और कप्पदूकिया और पुन्तुस और आसिया,

10 और फ्रूगिया और पमफूलिया और मिसर और लिबीआ के प्रदेश जो कुरेने के आस पास है, और रोमी प्रवासी, क्या यहूदी क्या यहूदी मत अपनाने वाले,

11 क्रेती और अरबी निवासी भी हैं। हम अपनी अपनी भाषा में इन से परमेश्वर के बड़े बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं।

यहां हम अन्य अन्य भाषाओं के दिये जाने का नतीजा और उन भाषाओं का प्रकार समझ सकते हैं जो उस समय दी गई थी। यदि उचित रूप से अध्यायन किया जाय तो हम पाते है कि वे वर्तमान आंदोलन में उपस्थित अन्य अन्य भाषाओं के प्रकार में बढ़ोत्तरी नहीं करते है। जो भाषायें दी गई वे निसंदेह जानी पहचानी बोलियां (भाषाएं) थी (पद 6), सबने अपनी–अपनी जन्मभूमि की भाषा सुनी। तथ्य स्पष्ट है कि प्रेरितो के काम 2 में भाषाये 'जानी पहचानी भाषाएं' थीं। पद 7 और 8, प्रेरितो के अध्याय 2 के अनुभव को वर्तमान करिश्माई अनुभव से पूरी तरह पृथक करते हैं। 'ये जो बोल रहे हैं क्या सब गलीली नहीं?' हां वे सब गलीली थे। फिर क्यों हममें से हर एक अपनी अपनी जन्मभूमि की भाषा सुनता है (पद 8)।

तब सुनने वालों ने अन्यान्य भाषायें बिना अनुवादक के सुनी और समझी। प्रेरितो ने इब्रानी में कहा और 'सभी देशों के ' सुनने वालों ने अपनी भाषा में संदेश सुना। आज के दिन ऐसे आश्चर्यकर्म का अर्थ है अंग्रेजी में बोलने वाला प्रचारक जब प्रचार करे तब सुनने वाले अपनी स्थानीय भाषा में सुने, यथा फ्रेंच, स्पेनिश और जर्मन भाषा जानने वाले बिना अनुवादक संदेश को अपनी भाषा में सुने। आज ऐसा नहीं होता है। आज झूठी भाषाएं बोली जाती है जो ऐसा नहीं होने देती। मुझे सदैव ही यह बात अजीब लगती थी कि सभी करिश्माई कॉलेज, सब मिशन के छात्रों को उस विदेशी भाषा में शिक्षा देते हैं, जिस देश में वे भेजे जा रहे हैं। क्या यह व्यर्थ नहीं है! यदि आपके पास प्रेरितो के काम 2 के समान वरदान है, आपको बस यह करना है कि अंग्रेजी भाषा में प्रचार करें, और सुनने वाले अपनी–अपनी भाषा में समझेंगे। निश्चय ही ऐसा नहीं होता है, न हो सकता है। सरल प्रश्न है, क्यों नहीं?

प्रेरितों के काम 2:14-21

14 परन्तु पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊंचे शब्द से कहने लगा, "हे यहूदियों, और हे यरूशलेम के सब निवासियों, तुम यह जान लो और मेरी बातों को ध्यानपूर्वक सुनो।

15 जैसा तुम समझ रहे हो, य लोगे नशे में नहीं, अभी तो सुबह का नौ ही बजा है।

16 परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई थीः

17 "परमेश्वर कहता है, 'अन्त कि दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां नबूवत करेंगे और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे वृध्द जन स्वप्न देखेंगे।

18 मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंगा, और वे नबूवत करेंगे।

19 मैं ऊपर आकाश में अद्‌भुत कार्य, और नीचे पृथ्वी पर चिन्ह, अर्थात लोहू, और आग और धूएं का बादल दिखाऊंगा।

20 प्रभु के महान और महिमामय दिन के आने से पहिले सूर्य अन्धकार में और चद्रमा
लहू में बदल जाएगा।
21 और ऐसा होगा जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धार पाएगा।'

हम इन पदों में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि किसके लिये और किस उद्देश्य से पेटिंकुस्त की घटनाएं घटी। एक बार फिर यह यहूदियों को 'स्वर्ग के राज्य' का प्रस्ताव या विकल्प देने का प्रयास था।

योएल 2:27-32

27 इस प्रकार तुम जान लोगे कि मैं इस्राएल के मध्य में हूं, और मैं यहोवा, तुम्हारा
परमेश्वर हूं, और कोई दूसरा नहीं। और मेरी प्रजा फिर कभी लज्जित न होगी।
28 और इसके बाद मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उण्डेलूंगा। तुम्हारे बेटे-बेटियां नबूवत
करेंगे, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे वृध्दजन स्वप्न देखेंगे।
29 मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंगा,
और वे नबूवत करेंगे।
30 मैं ऊपर आकाश में अद्भुत कार्य, और नीचे पृथ्वी पर चिन्ह, अर्थात लोहू, और आग
और धूएं का बादल दिखालाऊंगा।
31 यहोवा के उस महान और भयानक दिन के आने से पहिले सूर्य अन्धकार में और
चद्रमा लहू में बदल जाएगा।
32 और ऐसा होगा जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धार पाएगा, क्योंकि सिय्योन
पर्वत पर और यरूशलेम में, जैसा यहोवा ने कहा है, उध्दार पानेवाले होंगे, अर्थात
बचनेवाले जिन्हे यहोवा ने बुलाया है।

योएल भविष्यद्वक्ता इस्राएल देश से परमेश्वर के स्वयं को अपने राष्ट्र प्रकट करने के अभिप्राय का खुलासा करता है (पद 27)। 'तब तुम जानोगे कि मैं इस्राएल के बीच में हूं।' परमेश्वर स्पष्ट रूप से इस्राएल देश से बातें कर रहा था इस बात को वह उन्हें 'उन सब पर अपनी आत्मा के उण्डेले जाने' का चिन्ह देने के द्वारा दिखा रहा है। इसका संबंध यहूदियों से था। ध्यान दें 'तुम्हारे बेटे और बेटियां' यह वाक्यांश केवल यहूदीयों को दर्शाता है। अब यह कब होगा, और किन घटनाओं में प्रकट होगा? आप चिन्हों के द्वारा बता सकते हैं (पद 30–31) अर्थात 'आकाश और पृथ्वी में चमत्कार, लहू और आग और धुएं के खम्भे, सूर्य का अंधियारा होना, चंद्रमा रक्त सा होना, जैसे चिन्ह जो 'प्रभु के दिन' से पहले होंगे। प्रभु का दिन क्या है?

प्रकाशितवाक्य 6:9-17

9 जब उस ने पांचवी मुहर खोली, तो मैं ने वेदी के नीचे उन के प्राणों को देखा, जो
परमेश्वर के वचन और उस गवाही के कारण जो उन्होंने निरंतर दी थी, वध किए
गए थे।
10 वे उच्च शब्द से पुकार कर कह रहे थे, हे पवित्र और सच्चे प्रभु, तू कब तक न्याय
न करेगा? तथा कब तक पृथ्वी के निवासियों से हमारे रक्त का प्रतिशोध न लेगा?
11 उनमें से प्रत्येक को श्वेत चोगा दिया गया, और उन से कहा गया, और थोड़ी देर
तक और विश्राम करो, जब तक कि तुम्हारे संगी दासों, और भाईयों की, जो तुम्हारी
सदृश वध होने वाले हैं, गिनती पूरी न हो जाए।
12 जब उस ने छठवीं मुहर खोली, तो मैं ने देखा, कि एक बड़ा भुकम्प हुआ और बाल
से बने कम्बल की समान सूर्य काला, और सम्पूर्ण चन्द्रमा लहू के सदृश हो गया।
13 आकाश के तारे पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे बड़ी आन्धी से हिलकर अंजीर के वृक्ष
से कच्चे फल गिर पड़ते हैं।
14 और आकाश फटकर ऐसा हट गया, जैसा चर्म-पत्र लिपट जाता है, और प्रत्येक एक
पर्वत तथा द्विप अपने अपने स्थान से हट गया।
15 और पृथ्वी के राजा, और प्रधान, और सेनापति और धनवान और सामर्थी लोग, और
प्रत्येक दास, और हर एक स्वतंत्र व्यक्ति, पहाड़ों की गुफाओं में, और चट्टानों में जा
छिपे।
16 और पहाड़ों, और चट्टानों से कहने लगे कि, "हम पर गिर पड़ो और हमें उसके दृष्टि
से जो सिंहासन पर बैठा है, तथा मेम्ने के प्रकोप से छिपा लो।
17 क्योंकि उन के प्रकोप का भयानक दिन आ गया है, और कौन है जो उनका सामना
कर सकता है?

जब आप योएल की पुस्तक में दिये चिन्हों और प्रकाशित वाक्य अध्याय 9 के 12–13 पदों में दिये चिन्हों का मिलान करते हैं, तो यह बहुतायत से स्पष्ट है कि 'प्रभु का दिन' पृथ्वी पर उसके दूसरी बार आने की दिखाई देने योग्य घटना है जो महाक्लेश के बाद है, न कि कलीसिया के उठाये जाने की घटना के समय है। योएल नबी ने यह भविष्यद्वाणी एकीकृत गुप्त ज्ञान की कलीसिया से नहीं परंतु इस्राएल राष्ट्र से की है। इस घटना के बाद हम सहस्त्र वर्षीय राज्य में पहुंचाये जायेंगे। तो फिर बाद प्रेरितो के काम 2:16 में क्या हुआ? पतरस ने समझ लिया कि पेंटिकुस्त के दिन पवित्रात्मा दिये जाने की घटना योएल नबी की भविष्यद्वाणी को पूरा करती है, किंतु वह यहूदियों द्वारा होने वाले इंकार से पूरी तरह अनभिज्ञ था। वास्तव में पौलुस पर प्रकट यह गुप्त ज्ञान कि एकीकृत कलीसिया में यहूदियों का बचा भाग और

अन्यजातीय दोनों परमेश्वर के अनुग्रह से एक हो जायेंगे, पतरस के लिये तब अनजाना था। क्या प्रेरितो के काम 2:17–21 में वर्णित चिन्ह पेंटिकुस्त के दिन पूरे हुये थे? यदि आप चिन्हों की जांच करे तो 'नहीं', चिन्ह पेंटिकुस्त के दिन पूरे नहीं हुये थे। यदि वे चिन्ह पूरे होते, तो मसीह का पृथ्वी पर राज्य भी समाप्त हो चुका होता और 1000 वर्ष बाद अब तक अनंतकाल में पहुंच चुके होते। साथ ही प्रत्येक अन्यजातीय उद्धार से पृथक कर दिया जाता। प्रेरितों के काम 10 तब अन्यजातीय एकीकृत कलीसिया में शामिल नहीं थे, उस समय जो कलीसिया थी वह 'यहूदी प्रथम' कलीसिया थी।

रोमियों 1:16

16 मैं सुसमाचार से लज्जित नहीं होता, क्योंकि यह प्रत्येक विश्वास करने वाले के लिये, पहिले यहूदी, फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ है।

गलातियों 2:7

7 इसके विपरीत जब उन्होंने देखा, कि जैसे पतरस को खतना किए हुए लोगों में, वैसा ही मुझे लिये सुसमाचार का काम सौंपा गया ख़तनाहित लोगों में सुसमाचार का कार्य सौंपा गया।

इस प्रकार पेंटिकुस्त के दिन यह सुसमाचार वह नहीं था जो पौलुस ने एकीकृत गुप्त ज्ञान की कलीसिया को सुनाया, जिससे यहूदी अन्यजातीय भविष्य था। परंतु यह यहूदी सुसमाचार था जिसे पतरस ने पूर्ण रूप में यहूदी कलीसिया को सुनाया था। यह निश्चित तौर पर उन चिन्हों और चमत्कारों का उद्देश्य था, जिन्हें प्रेरितों के काम 2 में स्थापित किया गया था। मेरी दृष्टि में, आधुनिक करिश्माईयों की सबसे बड़ी त्रुटि यह है कि यदि योएल की प्रतिज्ञायें आज (वर्तमान) के दिन के लिये होती तो इस्राएल राष्ट्र ने उन्हें पेंटिकुस्त के दिन 'आखिरी वर्षा के उण्डेले जाने पर' क्यों नहीं पाया (ये प्रतिज्ञाएं उनके लिए ही थी)। दूसरे शब्दों में आज गलत लोगों को चिन्ह मिले, उन्हें नहीं जिन्हें इन चिन्हों की प्रतिज्ञा दी गई थी, परंतु विश्वास करने के द्वारा एकीकृत और रहस्यमय अन्यजातीयों की कलीसिया ने उसे पाया। इस पुस्तक के समापन के भाग में मैं इस विषय पर अधिक विस्तार से चर्चा करूंगा।

अन्यजातियों की ओर रूख करना

अन्यजातियों की ओर रूख करना

किस समय परमेश्वर ने स्वर्ग के पूर्ण यहूदी राज्य की स्थापना करने का प्रस्ताव निरस्त कर दिया? हम प्रेरितों के काम 7 में इसका उत्तर पाते हैं।

प्रेरितो के काम 7:51-60

51 हे हठिले लोगों, तुम्हारे मन और कान खतनारहित हैं। तुम सदा पवित्र आत्मा का विरोध करते आए हो। तुम भी वैसे ही करते हो जैसा तुम्हारे पूर्वज करते थे।
52 तुम्हारे पूर्वजों ने नबियों में से किसे नहीं सताया? और उन्होंने उनको भी मार डाला जिन्होने उस धर्मी के आगमन का पहले से सन्देश दिया था, वालों को, उजिके पकड़वाने वाले और हत्यारे अब तुम बन गए हो।
53 और तुम ही हो जिन्होने स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था तो पाई, परन्तु उसका पालन नहीं किया।"
54 जब उन्होने सह सुना तो वे तिलमिला उठे और स्तिफनुस पर दांत पिसने लगे।
55 परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर एकटक देखा तथा परमेश्वर की महिमा की और यीशु को, परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा देखा।
56 तब उसने कहा, "देखो, मै स्वर्ग को खुला हुआ और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खडा देखता हूं।"
57 परन्तु उन्होने जोर से चिल्लाकर अपने कान बन्द कर लिए और एक साथ उस पर झपटे।
58 वे उसे खदेडकर नगर से बाहर ले गए और उसका पथराव करने लगे। गवाहों ने अपने चोगे उतारकर शाऊल नामक एक नवयुवक के पास रख दिये।
59 जब वे पथराव कर रहे थे तो स्तिफनुस ने प्रार्थना की, "हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर!"
60 और अपने घुटनों के बल गिरकर वह जोर से चिल्लाया, "प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा!" यह कहकर वह सो गया।

यद्यपि अध्याय 7 की संपूर्ण बातों का संदर्भ स्तिफनुस द्वारा यहूदी महासभा को दिया भाषण है जिसमें वह राष्ट्र से आग्रह करता है कि वे अपने मसीहा को स्वीकार करें। हम पाते है कि उसकी बातों को सुना नहीं गया। पद 51–52 ताबूत की अंतिम कील थी। स्तिफनुस ने भीड़ को क्रोधित कर दिया, 'उन्होंने उस धर्मी के आगमन का पूर्वकाल से संदेश देने वालों को मार डाला और अब तुम भी उसके पकड़ाने वाले और मार डालने वाले हुए।' 'जब उन्होंने यह

सुना वे जल उठे' (पद 54)। इस स्थिति में धार्मिक और राष्ट्रीय अगुवों को 'यीशु' के विषय में एक निर्णय करना अवश्य था। उन्होंने अपने लिये विकल्प चुना लिया 'उन्होंने उस पर दांत पीसे' जंगली जानवरों के समान (पद 57)। 'वे बड़े शब्द से चिल्ला उठे, उन्होंने अपने कान बंद कर लिये, और एक साथ उस पर झपटे।' वे सत्य पर अमल करना तो दूर उसे सुनना भी नहीं चाहते थे। यह उदाहरण आज के संसार में स्पष्ट रूप में एक मानक है। आगे क्या हुआ? (पद 58) 'उसे नगर के बाहर निकालकर उस पर पथराव करने लगे।' मेरा मानना है कि इतिहास के इस पल में इस्राएल ने तय कर लिया कि वह पहले ही के समान कार्य करेगा। स्तिफनुस मसीही इतिहास में प्रथम मसीही शहीद है जिसके बारे में लिखा गया है। बाद में अन्य प्रेरित, यूहन्ना को छोड़कर सभी इसी कारणवश शहीद हुये। (पद 58) 'गवाहों ने अपने कपड़े शाऊल नामक एक जवान के पांवों के पास उतारकर रख दिये।' यह घटना यहूदियों को दिये प्रस्ताव का अंत और अन्यजातियों का कलीसिया में प्रवेश या सम्मिलन की दिशा में रूख करना दर्शाती है।

प्रेरितों के काम 8:5

5 और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों को मसीह का प्रचार करने लगा।

अध्याय 8 में कुछ बदल गया है। 'फिलिप्पुस सामरिया नगर में गया।' यदि आप कुछ क्षण फिर से मत्ती 10 पर ध्यान करें, जहां प्रेरितो को 'स्वर्ग का राज्य' का संदेश मिला था, उन्हें स्पष्ट रूप में सामरिया न जाने की आज्ञा दी गयी थी।

मत्ती 10:5

5 इन बारहों को यीशु ने यह निर्देश देकर भेजा : "गैरयहूदियों के पास न जाना, और न सामरीयों के किसी नगर में प्रवेश करना।

अब स्तिफनुस के पत्थरवाह किये जाने के बाद हम प्रेरितो के काम 8 में देख सकते हैं कि 'स्वर्ग के राज्य' की घोषणा समाप्त हो गयी थी।

प्रेरितों के काम 8:14-17

14 जब यरूशलेम में प्रेरितों ने सुना कि सामरीयों ने परमेश्वर का वचन ग्रहण किया है, तो उन्होने उनके पास पतरस और यूहन्ना को भेजा।

15 उन्होने वहां पहूंचकर उनके लिए प्रार्थना की कि वे पवित्र आत्मा पाएं।

16 क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर नहीं उतरा था; उन्होने केवल प्रभु यीशु के नाम से बपतिस्मा लिया था।

17 तब उन्होने उन पर हाथ रखे और उन्होने पवित्र आत्मा पाया।

पवित्रात्मा का दिया जाना अब बपतिस्में से जुड़ा नहीं था जैसा कि प्रेरितों के काम के प्रथम 7 अध्यायों में था। पद 14, उन प्रेरितो ने जो अब भी यरूशलेम में थे, इस सत्य को सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है। वे उस स्थान में गये। क्यों? उन्होंने वहां जाकर उनके लिये प्रार्थना की कि वे पवित्रात्मा पाये। इन सामरियों ने उद्धार पाया था परंतु तब तक पवित्रात्मा नहीं पाया था। (पद 16) (क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था, उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया) अब हम एक बड़ा परिवर्तन देख सकते हैं कि प्रेरितों के काम 2:38 का 'केवल यहूदी' सुसमाचार अब सामरियों की ओर चला गया। प्रेरितों के काम 8 में यह पहली बार है। सामरियों को न केवल कलीसिया में प्रवेश मिला, वे अब पवित्रात्मा भी पा सके और यह बपतिस्में के कारण नहीं परंतु प्रेरितो द्वारा उन पर हाथ रखे जाने के कारण था। (पद 17) 'तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्रात्मा पाया।' अब तक ''केवल यहूदी'' सुसमाचार प्रचार की मांग थी, 'पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लो' और पवित्रात्मा का दान भी मिलेगा। अब स्तिफनुस की हत्या के बाद सामरियों की ओर सुसमाचार मुड़ गया जो आधे यहूदी और आधे अन्यजाति थे, और जिन्होंने वचन को ग्रहण किया उन्होंने 'पवित्रात्मा का दान' बपतिस्मे के बिना, हाथों को रखे जाने के द्वारा ही पाया। यह बात प्रेरितों के काम के प्रथम 7 अध्यायों में नहीं सुनी गयी थी। इस प्रकार अब हम यहूदी से आधे यहूदी और तब अन्यजातियों की ओर मार्ग में आगे बढ़ते हैं। यह महान आदेश के अनुरूप है।

लुका 24:47

47 और यरूशलेम से प्रारंभ कर के सब जातियों में उसके नाम से पापों की क्षमा के लिए मन फिराव का प्रचार किया जाएगा।

''यरूशलेम से आरम्भ कर'' अर्थात यहूदि प्रथम। स्थानिय।

प्रेरितों के काम 1:8

8 परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आयेगा तब तुम सामर्थ पाओगे, और यरूशलेम, सारे यहूदिया और सामरीया में, यहां तक की पृथ्वी के छोर तक तुम मेरे साक्षी होंगे।

तुम यरूशलेम (स्थानीय) में और यहूदिया और सामरिया (राष्ट्रीय) और पृथ्वी की छोर तक (विश्व स्तर) मेरे गवाह ठहरोगे। यरूशलेम प्रथम, तब सामरिया वर्ण–मिश्रित जाति, यहूदी अन्यजाति, तब पृथ्वी की छोर तक, 'बचे हुये यहूदी' और 'अन्यजातियां' मिलाकर। इस प्रकार प्रेरितो के काम 1:8 का महान आदेश धीरे–धीरे चरणबद्ध रूप में आगे बढ़ रहा था।

प्रेरितो के काम 9:1-6

1 फिर शाऊल जो अब तक प्रभु के शिष्यों को धमकीयां देने तथा उनकी हत्या करने
की धुन में था, महायाजक के पास गया।
2 और उस से दमिश्क की अराधनालयों के लिए इस अभिप्राय से पत्र प्राप्त किए की
यदि उसे इस पंथ के अनुयायी मिले, वे चाहे स्त्री हों अथवा पुरूष, तो उन्हें बांध
कर यरूशलेम ले आए।
3 और ऐसा हुआ की यात्रा करते हुए जब वह दमिश्क के समिप पहुंचा, तो एका-एक
आकाश से एक ज्योति उसके चारों ओर चमकी।
4 और वह भूमि पर गिर पड़ा, और उसने एक आवाज यह कहते हुए सुनी, "शाऊल!
शाऊल! तू मुझे क्यों सताता है?"
5 उस ने पूछा, "हे प्रभु, तू कौन है?" तब उस ने कहा, "मैं यीशु हूं, जिसे तू
सताता है।
6 परन्तु उठ और नगर में जा, और जो करना है वह तुझे बता दिया जाएगा।

यहां हम परिदृश्य में पौलुस का प्रवेश पाते हैं – यह वहीं शाऊल नामक एक जवान था जो स्तिफनुस के पथराव के समय वहां खड़ा था। पद 3–6 में हम उसका व्यक्तिगत हृदय परिवर्तन देख सकते हैं। ध्यान दे कि शाऊल पूर्ण रूप में कितना बदल चुका था – "हे प्रभु, तू मुझसे क्या चाहता है?"

प्रेरितों के काम 9:15-16

15 परन्तु प्रभु ने उस से कहा, "चला जा, क्योंकि वह तो गैरयहूदियों, राजाओं और
इस्त्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रगट करने के लिये मेरा चुना हुआ पात्र है।
16 और मैं उसे बताऊंगा कि मेरे नाम के लिये उसे कितना दुःख सहना पड़ेगा।

परमेश्वर ने हनन्याह पर शाऊल के हृदय परिवर्तन का उद्देश्य प्रकट किया "वह तो अन्य जातियों, और राजाओं, और इस्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रकट करने के लिये मेरा चुना हुआ पात्र है।" यहां हम 'एकीकृत' यहूदी और अन्य जातियों की मिलीजुली कलीसिया के प्रकाशन का प्रारंभ पाते हैं, जो प्रेरितों के काम 1–8 अध्यायों में सुना नहीं गया था।

अन्य जातिः
प्रवेश का समय

अन्य जातिः प्रवेश का समय

हमने अब तक विभिन्न सुसमाचारों के प्रभागों को देखा जिनमें यहूदियों के लिये परमेश्वर की योजना के खुलासे (प्रकटीकरण) का प्रदर्शन किया गया था। प्रेरितों के काम 2:38 में पतरस के संदेश में पवित्रात्मा का दान पाने अनिवार्य रूप से बपतिस्में की बात कही गई थी, उसके स्थान पर प्रेरितो के काम 8 में आधे यहूदी और आधे अन्यजाति, जिन्हें सामरी कहा जाता था, हाथों के रखे जाने के द्वारा पवित्रात्मा का दान प्राप्त करने की अनुमति पाते हैं। अब हम अन्यजातियों की ओर चलें जिन्होंने बपतिस्मा या हाथों को रखे बिना पवित्रात्मा पाया। हम इस विचार बिंदु पर तब कैसे आते हैं?

प्रेरितो के काम 10:9-16

9 दूसरे दिन, जब वे चलते चलते नगर के पास पहुंने पर थे, उसी समय दोपहर के लगभग पतरस प्रार्थना करने के लिए छत पर गया।

10 उसे भूख लगी तथा कुछ खाने की इच्छा हुई, परन्तु जब वे तैयारी कर ही रहे थे तो वह बेसुध हो गया।

11 और उस ने देखा कि आकाश खुल गया है और बड़ी चादर जैसी कोई वस्तु चारों कोनों से लटकती हुई भुमि पर उतर रही है।

12 जिस में सब प्रकार के चौपाए और पृथ्वी के रेंगने वाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे।

13 उसे एक आवाज सुनाई दी, "पतरस, उठ! मार और खा!"

14 परन्तु पतरस ने कहा, "नहीं प्रभु, कदापि नहीं, क्योंकि मैं ने कभी कोई अपवित्र और अशुद्ध वस्तु नहीं खायी है।"

15 फिर दूसरी बार उसे एक आवज सुनाई दी, "जिसे परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अपवित्र मत कह।"

16 तीन बार ऐसा ही हुआ, तब वस्तु तुरन्त आकाश में उठा ली गई।

आप इन पदों में यहूदियों की ओर से दुसरी ओर स्थानांतरण होता हुआ देखते हैं। मुख्य रूप से खान पान के नियमों में बदलाव। प्रेरितो के काम 10 तक यहूदियों के पारम्परिक खान पान के नियम यथावत जारी थे। प्रेरितो के काम 10 में पतरस को दिये इस दर्शन के साथ स्थितियो में नाटकीय रूप से परिवर्तन आया। पद 12–13 में पतरस को खान पान की एक नयी शैली से अवगत कराया गया। ''पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाये'' जिनमें सूअर और अन्य अशुद्ध पशु

पक्षी भी थे। ''हे पतरस उठ, मार और खा'' पतरस का उत्तर आतंकित था, वह यहूदियों की खान पान व्यवस्था को अच्छी तरह जानता था और उसने एक वास्तविक विरोध दर्शाया, ''नहीं प्रभु, कदापि नहीं, क्योंकि मैने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई'' उत्तर मिला ''जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह।'' वह खानपान की पद्धति जो यहूदी व्यवस्था और विश्वासतंत्र में आवश्यक अंग थी, अब हटा दी गई और ऐसी व्यवस्था दी गई जिसमें सभी पशु पक्षियों, जो अस्तित्व है, का भक्षण करने की अनुमति थी। खाने–पीने की यह व्यवस्था अन्यजातियों में पहले से प्रचलित थी। इस परिवर्तन के बाद इतिहास के प्रथम अन्यजातीय व्यक्तियों का हृदय परिवर्तन हुआ। अब यदि पेंटिकुस्त के संदेश में अन्यजातीय लोग शामिल किये जाते, तो पतरस को खानपान का यह परिवर्तन प्रेरितों के काम अध्याय 2 से पहले बताया जाता, परंतु नहीं बताया गया। किसी भी रीति से संभव नहीं था कि प्रेरितों के काम अध्याय 2 के संदेश में अन्यजातियों को शामिल करने की अनुमति दी जाती।

प्रेरितों के काम 10:43-48

43 सब नबी उस की साक्षी देते हैं कि प्रत्येक जो उस पर विश्वास करता है, उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा पाता है।

44 जब पतरस ये वचन कह ही रहा था, कि तभी वचन के सब सुनने वालों पर पवित्र आत्मा उतर आया।

45 और जितने ख़तना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए हुए थे, वे सब विस्मित हुए गैरयहुदियों पर भी पवित्र आत्मा का वरदान उंडेला गया है।

46 क्योंकि उन्होंने उन्हें भिन्न भिन्न भाषाएं बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुन रहे थे।

47 तब पतरस ने कहा, "क्या कोई जल की रोक कर सकता है, कि ये लोग जिन्हों ने हमारी नाईं पवित्र आत्मा पाया है बपतिस्मा न पाएं?"

48 और उस ने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह ने नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उस से कुछ दिन और ठहरने की बिनती की।

कृपया पद 43 पर ध्यान दे यह अन्यजातियों के लिये सुसमाचार है, ''जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको पापों की क्षमा मिलेगी।'' (पद 44) ''पतरस ये बातें कह ही रहा था'' कि पवित्रात्मा दिया गया। न बपतिस्मा, न हाथों का रखा जाना, केवल विश्वास। अन्य अन्य भाषा क्यों? यह उनके लिये था जो चिन्ह खोजने वाले यहूदी वहां उपस्थित थे, यही पद्धति है जो आज भी कलीसियाओं के लिये है, केवल उसमें अन्य अन्य भाषा नहीं है। इस प्रकार प्रेरितों के काम 10 अन्यजातियों के प्रवेश का समय है। यदि आप प्रथम अन्य जाति व्यक्ति के

हृदय परिवर्तन की घटना और इफिसुस में एकीकृत कलीसिया के लिये उद्धार का नमूना या पद्धति का मिलान करे, वे एक दूसरे से बहुत अधिक मिलते जुलते हैं।

इफिसियों 1:13-14

13 उसी में तुम पर भी, जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी।

14 वह हमे उत्तराधिकार के बयाने के रूप इस उद्देश्य से दिया गया है कि परमेश्वर के मोल लिए हुओं का छुटकारा हो, जिस से परमेश्वर की महीमा की स्तुति हो।

ध्यान दें जब वचन कहता है, ''जब तुम ने सत्य का वचन सुना'', तब कुछ हुआ – ''तुम पर प्रतिज्ञा किये हुये पवित्र आत्मा की छाप लगी।'' यहां अन्य अन्य भाषाओं का प्रमाण या उल्लेख नहीं दिया गया है। (पद 14) ''जो हमारी मीरास का बयाना है।'' शब्द बयाना का अर्थ है – अग्रिम भुगतान। अर्थात जब तक हम उद्धार नहीं पाते। यह समय है जब पवित्रात्मा का वरदान पवित्रात्मा की मोहर के रूप में बदलता है, यह सिद्धांत केवल एकीकृत कलीसिया में ही था। पौलुस ने 2 कुरिन्थियों में इस सत्य की पुष्टि की है। प्रेरितों के काम अध्याय 2 में यहूदियों को और प्रेरितों के काम 8 में सामरियों को छाप इसलिए नहीं लगाई गयी, क्योंकि कुछ प्रकार के काम जैसे कि बपतिस्मा और हाथों का रखा जाना यहूदियों और वर्णसंकर यहूदियों के लिये चिन्ह थे, और उन्हें बपतिस्में और हाथों को रखे जाने के कार्य के द्वारा दर्शाया गया। इसप्रकार 'छाप लगाना' अपने अभिप्राय में चिन्ह नहीं है। केवल छाप किया गया विश्वासी ही जिसका हृदय परिवर्तन हुआ है, इसके बारे में जानता है। और यह अनिवार्य रूप में केवल मसीह पर विश्वास करने के द्वारा दिया गया है।

2 कुरिन्थियों 1:22

22 जिसने हम पर छाप भी कर दी है और बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया है।

यह उन रहस्यों में से एक है जो केवल पौलुस पर प्रकट किया गया और अन्य किसी पर नहीं। अन्यजातियों के प्रवेश के साथ ही हम ''पृथ्वी की छोर तक'' अर्थात महान आदेश के इस भाग के पूरा होने तक पहुंचते है। उद्धार का तरीका अब केवल अनुग्रह है– ''उद्धार केवल अनुग्रह के द्वारा है, कामों के द्वारा नहीं कि कोई घमण्ड करे।''

पौलुस का सुसमाचार

पौलुस का सुसमाचार

पौलुस के सुसमाचार को कौन सी बात पतरस के सुसमाचार से भिन्न बनाती है? दोनों में प्रमुख अन्तर यह है कि 'किसे' और 'किस उद्देश्य' से दोनों सुसमाचार निदेशित है। पतरस और उसका सुसमाचार स्वयं मसीह द्वारा स्थापित किया गया, मसीह के स्वर्गारोहण के पहले और उसका संबंध स्वर्ग के राज्य की स्थापना करने से था। यह विचार बड़ी आसानी से भविष्यद्वाणियों के पूरा होने में देखा जा सकता है, किसी रहस्य के प्रकाशन में नहीं, और यह संपूर्ण रूप से यहूदियों के लिये था। पौलुस का सुसमाचार मसीह के द्वारा विशेष प्रकाशन के माध्यम से दिया गया, और केवल पौलुस को ही दिया गया। पतरस के सुसमाचार का संदर्भ केवल यहूदियों से था जबकि पौलुस का सुसमाचार शेष बचे यहूदियों और अन्यजातियों के संदर्भ में था और आज की कलीसिया के लिये वह एक दर्पण था। परमेश्वर के अनुग्रह से विश्वास के द्वारा अन्य जातीय और यहूदी एकता के सूत्र में एक बना दिये गये।

गलातियों 3:28

28 अब न कोई यहूदी रहा, और न यूनानी, न कोई दास, न कोई स्वतंत्र, न कोई नर
न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।

यह बात एक प्रश्न उत्पन्न करती है। यदि पौलुस वह चुना हुआ व्यक्ति था जो यहूदी और अन्यजातियों के एक देह में मेल या एकता के महान रहस्य को प्रकट करने चुना गया था और जिसे धर्मशिक्षाओं का प्रकाशन मिला था जो इस कार्य को संपन्न करने में आवश्यक था, तब उसकी आरंभ की निर्देशात्मक पुस्तकों में इतनी कम शिक्षायें क्यों दी गई है? क्या हम पवित्र शास्त्र में पौलुस को एकीकृत कलीसिया के लिये परमेश्वर द्वारा प्रयुक्त साधन मान सकते हैं? निश्चय मान सकते हैं।

इफिसियो 3:1-7

1 इसी कारण मैं पौलुस जो तुम गैरयहुदियों के लिये मसीह यीशु का कैदी हूं।
2 यदि तुम ने परमेश्वर के उस अनुग्रह के प्रबन्ध का समाचार सुना हो, जो तुम्हारे
लिये मुझे सौंपा गया।
3 अर्थात यह, कि वह रहस्य मुझ पर प्रकाश के द्वारा प्रगट किया गया, जैसा मैं पहिले
संक्षेप में लिख चुका हूं।
4 जिसे पढ़ कर तुम जान सकते हो कि मैं मसीह के रहस्य कहां तक समझता हूं।

5 जो पिछली पिढीयों में मानव जाति को ऐसा नहीं बताया गया जैसा कि आत्मा
की अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पवित्र आत्मा के द्वारा प्रगट किया
गया है।
6 तात्पर्य यह है कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा गैरयहुदी एक ही देह के अंग
हैं और सह उत्तराधिकारी तथा प्रतिज्ञा के सहभगी हैं।
7 परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार, जो उसकी सामर्थ के प्रभाव के अनुसार
मुझे दिया गया, मैं उस सुसमाचार का सेवक बना।

आप समझ सकते हैं कि पौलुस ने न केवल ऐसा अधिकार पाया परंतु यह अधिकार भी अपने आप में अनुग्रह का एक पूरी तरह नया प्रकाशन था। (पद 3) "वह भेद जो मुझ पर प्रकाश के द्वारा प्रकट हुआ।" ध्यान दे मुझ पर प्रकट हुआ यह एक वचनीय है। यह इस बात को प्रकट करता है कि यह प्रकाशन केवल और केवल पौलुस को दिया गया था। यह एकीकृत कलीसिया क्यों एक रहस्य है? क्या यह पुराने नियम में सुपरिचित तथ्य नहीं था? क्या पुराने नियम के यहूदियों का उद्धार इस विश्वास के कारण नहीं हुआ कि यीशु आने वाला है? नहीं, यहूदी मसीहा की प्रतीक्षा में थे, उद्धारकर्ता की प्रतीक्षा में नहीं थे। यदि शैतान को रहस्य के विषय में वचन का ज्ञान होता, वह यीशु को निश्चय मरने नहीं देता।

1 कुरिन्थियों 2:7-8

7 परन्तु हम परमेश्वर के उस ज्ञान के रहस्य का वर्णन करते हैं, अर्थात उस गुप्त ज्ञान
का जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिये ठहराया।
8 जिस ज्ञान को इस युग शासकों में से किसी ने न समझा, क्योंकि यदि वे समझ
गए होते, तो प्रभु के महीमा को क्रूस पर न चढ़ाते।

कलीसिया के विनाश के लिये शैतान को बस इतना ही करना था कि यीशु को अकेला छोड़ देता। यदि मसीह बूढ़ा होकर मर जाता, शैतान की विजय हो जाती। तब उसने यह क्यों नहीं किया? यह पुराने नियम में एक रहस्य था जो किसी को भी यहां तक कि पुराने नियम के पवित्रजनों को भी नहीं पता था। हम देख सकते हैं कि रहस्यमय कलीसिया और उसका भविष्य केवल पौलुस को दिया गया प्रकाशन था।

रोमियों 16:25

25 जो तुम को मेरे सुसमाचार अर्थात यीशु मसीह के संदेश नुसार स्थिर कर सकता है,
उस भेद के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से गुप्त था।

यह विचार कि आप पवित्र शास्त्र की 66 पुस्तकों के किसी भी भाग से कलीसिया के लिये धर्मशिक्षा बना सकते हैं, एक सही विचार नहीं है। ध्यान दें, "जो तुम को मेरे सुसमाचार..

के..नुसार स्थिर कर सकता है।'' मसीह की देह में विश्वासी यहूदी सुसमाचार के द्वारा नहीं परंतु पौलुस पर प्रकट सुसमाचार के द्वारा स्थापित किया जाता है।

रोमियों 2:16

16 यह उस उस दिन होगा जिस दिन परमेश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा।

मसीहियों का न्याय किस आधार पर होगा? परमेश्वर मनुष्यों के हृदय की गुप्त बातों का न्याय मेरे सुसमाचार के अनुसार करेगा। एक बार फिर यह यहूदी सुसमाचार के द्वारा नहीं है। कलीसियाएं मसीह के न्याय सिंहासन के सामने मसीह के द्वारा न्याय पायेगी। हम 1 कुरिन्थियों में यह तथ्य पाते हैं।

1 कुरिन्थियों 3:9-15

9 क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं; तुम परमेश्वर का खेत हो और परमेश्वर का भवन हो।

10 परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे प्रदान किया गया है, मैंने कुशल राज-मिस्त्री की भांती नीव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है। परन्तु प्रत्येक मनुष्य सावधन रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है।

11 क्योंकि उस नीव को छोड़ जो पड़ी है - और वह यीशु मसीह है - कोई दूसरी नीव नहीं डाल सकता।

12 यदि कोई मनुष्य इस नीव पर सोना, चांदी, बहुमुल्य पत्थर, काठ या घास-फूस से निर्माण करें,

13 तो प्रत्येक मनुष्य का कार्य प्रगट हो जाएगा। वह दिन उसे दीखाएगा, क्योंकि वह दिन अग्नि के साथ प्रगट किया जाएगा, और वह अग्नि ही प्रत्येक मनुष्य के कार्य को परखेगी।

14 यदि किसी मनुष्य का निर्मित कार्य जो उसने किया है स्थिर रहेगा, तो उसे वह प्रतिफल मिलेगा।

15 यदि किसी मनुष्य का कार्य जल जाएगा तो वह हानि उठाएगा, परन्तु वह स्वंय बच जाएगा, फिर भी मानो आग से जलते जलते।

इन पदों में स्पष्ट पहचान दी गई है कि पौलुस ही वह बुनियादी संसाधन (स्त्रोत) और व्यक्ति था जो निर्देश देता है कि हमें मूल आधारशिला अर्थात मसीह पर कौन सी भवन सामग्री रखनी चाहिए। यह कलीसिया के लिये मसीह के न्याय आसन का रहस्य प्रकट करता है। हमें भवन निर्माण की सामग्री किस स्रोत से प्राप्त करनी चाहिये? निश्चय ही पौलुस से और उसकी

कलीसिया की पुस्तकों से। (पद 10) "परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार, जो मुझे दिया गया है, मैंने बुद्धि मान राजमिस्त्री के समान नींव डाली।" पौलुस स्वयं की पहचान कलीसिया और उसकी धर्मशिक्षाओं के राजमिस्त्री के रूप में करता है।

1 कुरिन्थियों 4:15-17

15 यद्यपि मसीह में तुम्हारे असंख्य शिक्षक हैं, फिर भी तुम्हारे अनेक पिता नहीं होते। क्योंकि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा पिता बना।

16 अतः मैं तुम से आग्रह करता हूं, कि तुम मेरा अनुकरण करो।

17 इसी कारण मैं ने तीमुथियुस को, जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है। वह तुम्हें मसीह में मेरे आचरण का स्मरण कराएगा, जैसे कि मैं हर जगह, प्रत्येक कलीसिया को शिक्षा दिया करता हूं।

पौलुस इस अज्ञानी कलीसिया को स्पष्ट रूप में अपने पद (ओहदे) का महत्व बताता है। (पद 16) "तुम मेरी सी चाल चलो।" (पद 17) "वह तुम्हें मसीह में मेरा चरित्र स्मरण करायेगा।" ध्यानपूर्वक कृपया अगला कथन पढ़ें – "जैसा मैं उपदेश करता हूं।" निसंदेह आज की कलीसिया के लिये पौलुस मसीह के द्वारा दिया गया नमूना (उदाहरण) था।.

गलातियों 2:2

2 मैं ईश्वरीय प्रकाशन के फलस्वरूप वहां गया, और जो सुसमाचार में गैरयहुदीयों में प्रचार किया करता हूं वहीं मैने उनके समक्ष प्रस्तुत किया, परन्तु गुप्त रूप से केवल प्रतिष्ठित लोगों को, कि कही मेरी इस समय की या पिछली दौड़ - धूप व्यर्थ न हो जाए।

इफिसियों 6:19

19 और मेरे लिए भी प्रार्थना करो कि बोलते समय मुझे ऐसा प्रबल वचन दिया जाए कि मैं साहस से सुसमाचार के रहस्य के प्रकट कर सकूं।

फिलिप्पियों 4:9

9 जो कुछ तुमने मुझ से सिखा, ग्रहण किया, सुना और मुझ में देखा है, उन्हीं का अनुकरण करो और परमेश्वर जो शान्ति का स्त्रोत है तुम्हारे साथ रहेगा।

कुलुस्सियों 1:25-27

25 इस कलीसिया के लिए मैं परमेश्वर के उस प्रबन्ध के अनुसार सेवक ठहराया गया हूं जो तुम्हारे लाभ के लिए मुझे सौंपा गया, कि मैं परमेश्वर के वचन का पूर्णरूप से प्रचार करूं,

26 अर्थात् उस रहस्य को जो युगों और पीढ़ियों से गुप्त रहा पर अब उसके 'पवित्र लोगों पर प्रकट हुआ है।

27 परमेश्वर ने उन पर यह प्रकट करना चाहा, कि गैरयहूदियों में उस रहस्य की महिमा का धन क्या है, अर्थात् यह कि मसीह तुम में वास करता है और यही महिमा की आशा है।

इस वाक्य पर ध्यान दें "मसीह तुम में महिमा की आशा है।" यह विश्वासियों को निवास करने वाले आत्मा से मोहर करने का सुस्पष्ट प्रकाशन है। निश्चित रूप से यह यहूदी (सुसमाचार) में पवित्रात्मा के वरदान से भिन्न (पृथक) बात है।

2 थेस्सलुनीकियों 2:15

15 इसलिये, हे भाइयों, दृढ़ रहो तथा उन रीति-विधियों मे स्थिर रहो जिनकी शिक्षा तुम ने हमसे मौखिक या पत्रों के द्वारा प्राप्त की है।

पौलुस और उसकी पत्रियों का अनुसरण करने की आवश्यकता के निश्चित अनुप्रयोग में हम इस तथ्य की और अधिक बढ़कर व्याख्या कर सकते हैं कि आज कलीसिया और उसकी धर्मशिक्षाओं के संबंध में पौलुस और उसके प्रकाशनों का अनुसरण करने के लिये हमें जो मसीह की देह के अंग हैं, निश्चित आदेश दिये गये हैं। तब इन बेशकीमती पुस्तकों से इतना कम प्रचार क्यों किया जाता है? पौलुस जो कहता है वह उसके प्रभाव को नहीं रोकता, पर जो नहीं कहता, वह रोकता है। यदि आप पौलुस और उसके प्रकाशनों पर ध्यान दें आप पायेंगे वह कलीसिया के लिये चिन्ह और दान वरदानों को पुर्नस्थापित नहीं करता। इसी बात के कारण आज करिश्माईयों को रुकना चाहिये। पौलुस ने अपनी 13 पत्रियों में किसी को चंगा नहीं किया, और स्वयं के लिये भी चंगाई प्राप्त न कर सका, इस तथ्य के कारण ऐसी गतिविधियों को आरंभ में ही रोका जाना चाहिये। यही कारण है कि यदि आप टेलिविजन अधिक देखते हैं आप शायद ही किसी प्रचारक में पौलुस की पत्रियों का गहराई से अध्ययन पाते हैं। यदि प्रयास होता भी है तो वह यहूदी सुसमाचार और पौलुस के सुसमाचार का मिश्रण करने के लिये होता है, कारण चाहे जो भी हो। यही बात पौलुस के सुसमाचार को एकीकृत कलीसिया के लिये इतना महत्वपूर्ण बनाती है, इस अर्थ मे कि वह आज प्रचार की जा रही झूठी शिक्षा या प्रचार का निर्मूलन करती है। पौलुस के प्रकाशन द्वारा आप संप्रदायों की त्रुटियों के छेद पूरी तरह से बंद कर सकते। यही कारण है कि करिश्माईयों के पास विकल्प नहीं है कि प्रचार करते समय पवित्र शास्त्र के किस स्थल में जाये। सुसमाचारों, पुराने नियम, प्रेरितों के काम, याकूब, और इब्रानियो में, कलीसियाई पत्रियों में बहुत कम जाते हैं।

करिश्माई कहते हैं अन्य–अन्य भाषायें और चिन्ह, जबकि पौलुस कहते हैं भाषायें हो तो वे जाती रहेगी। करिश्माई कहते हैं कि चंगाई सबके लिये है, जबकि पौलुस ने अपनी पत्रियों में चंगाई के विषय से हाथ हटा लिये थे। करिश्माई कहते हैं आर्थिक आधार के लिये बीज बोये या पौधा लगाये और धनवान बनें, जबकि पौलुस कहते हैं कि धन का लोभ सब बुराईयों की जड़ है। "वे जो भक्ति में कमाई करने की शिक्षा देते हैं, उन से दूर रहें।" करिश्माई कहते हैं अनुसरण करें और वह करें जो यीशु ने किया था जबकि पौलुस कहते हैं मेरा अनुसरण करो जैसा मैं मसीह का अनुसरण करता हूं। मुझे यह मजेदार लगता है कि करिश्माई मसीह का पालन करने में इतनी सावधानी बरतते हैं। मैं तब अनुसरण करूंगा जब मुझे कोई तकलीफ न होगी। यीशु ने कहा, "अपना सब कुछ बेचकर मेरे पीछे हो ले।" क्या कोई ग्रहण करने वाला है? जब आप पौलुस के अन्यजातीय सुसमाचार को पतरस के यहूदी सुसमाचार से पृथक करते है तब आप बपतिस्में के द्वारा नया जन्म पाने की बात को भी खारिज करते हैं। यह यहूदियों के लिये आवश्यक परंतु अन्य जातियों के लिये आवश्यक नहीं है। करिश्माई कहते हैं कि अंत के इन दिनों में हम इतिहास की सबसे बड़ी आत्मिक जागृति के बीच में है। पौलुस ने कहा कि अंतिम दिनों में कठिन समय आयेंगे। कौन सही है? मित्रों अपने चारों ओर देखिये और मुझे बताये। मेरे लिए यह आश्चर्यजनक है कि समस्त संसार में इतनी बड़ी आत्मिक गतिविधि जो यहूदी सुसमाचार के कारण है अन्यजातीय कलीसिया को इतना अधिक उत्प्रेरित करती है। पौलुस ने यह प्रकाशन कैसे खो दिया? आप आसानी से कह सकते हैं कि प्रचारक आपको कहां ले जा रहा है। सरल रूप में ध्यान दें कि वह पवित्र शास्त्र में कहां से प्रचार कर रहा है। एक निर्णायक नियम यह है कि सिद्धांतों या नियमों को विकसित करने में पुराने नियम का उपयोग किया जा सकता है जबकि पौलुस की पत्रियों का उपयोग केवल कलीसिया की धर्मशिक्षाओं को विकसित करने में किया जाता है।

पौलुस का सुसमाचार

पौलुस का सुसमाचार

आप स्पष्ट रूप में प्रेरितों के काम पुस्तक में 'यहूदी प्रथम' से शेष बचे यहूदी और अन्यजातीय प्रवेश का अंतर देख सकते हैं। यद्यपि पौलुस ने यहूदी और अन्य जाति दोनों को प्रचार किया, और अपने प्रेरित होने के प्रमाण स्वरूप यहूदियों को चिन्ह भी दिखाये, वह प्रेरितों के काम के प्रारंभ में 'संपूर्ण यहूदी' से स्पष्ट रूप में पत्रियों के 'अन्य जातीय सुसमाचार' की ओर बढ़ रहा था। इसी प्रकार हम स्पष्ट रूप में देख सकते हैं कि प्रेरितो के काम पुस्तक के अंतिम 14 अध्यायों में पतरस और उसका प्रभाव छूटता जा रहा था। ये सभी बातें प्रेरितों के काम में पौलुस के पूरी तौर पर अन्य जातियों की ओर जाना प्रदर्शित करती है।

प्रेरितों के काम 28:28

28 अब तुम जान लो कि परमेश्वर की यह उद्धार कथा अन्यजातियों के पास भेजी गई
है, और वे उसे सुनेंगे।

इस समय के बाद आप पौलुस को शनिवार में आराधनालय जाकर यहूदियों से बहस करता हुआ नहीं पाते। शब्द आराधनालय इसके बाद पौलुस की लिखी पत्रियों में दिखाई नहीं देता। स्पष्ट रूप में अब यह अन्यजातियों पर जोर देने और सब्त आराधना की समाप्ति का संकेत है।

प्रेरितों के काम 1–12 – पतरस का 56 बार उल्लेख
प्रेरितों के काम 13–28 – पतरस का 1 बार उल्लेख
प्रेरितों के काम 1–12 – पौलुस का 0 बार उल्लेख
प्रेरितों के काम 13–28 – पौलुस का 126 बार उल्लेख

प्रेरितों के काम के अंतिम 13 अध्यायों मे पतरस का उल्लेख बिल्कुल भी नहीं मिलता, मानो वह पृथ्वी से जा चुका था। स्पष्ट रूप में यह प्रमाण है कि भविष्य की कलीसिया एक यहूदी चिन्हवादी कलीसिया नहीं परंतु एक अन्यजातीय चिन्ह रहित, विश्वास की कलीसिया थी। कलीसिया की पुस्तकों के लेखन में भी हम पतरस और अन्य प्रेरितों के स्थान पर पौलुस का वर्चस्व पाते हैं। नये नियम में कुल 27 पुस्तकें हैं, मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना के सुसमाचार वास्तव में पुराने नियम की पुस्तकें हैं क्योंकि उनमें पुराने नियम के नियम (व्यवस्थायें) प्रचलित थी। मंदिर पूर्ण रूप में क्रियाशील था और बलिदान भी चढ़ाये जा रहे थे।

इब्रानियों 9:16-17

16 क्योंकि जहां वसियतनामा है वहां उसके लिखने वाले की मृत्यु का होना अवश्यक है।
17 क्योंकि मनुष्यों के मृत्यु के बाद ही वसियतनामा पक्का होता है, क्योंकि जब तक
कोई जीवित रहता है, तब तक वसियतनामा कार्यान्वित नहीं होता।

सुसमाचार इस कारण एकीकृत कलीसिया में पूर्णरूप से नमूने या पद्धति के समान उपयोग नहीं किए जा सकते। इस कारण चारों सुसमाचारों को पुराने नियम का विस्तार माना जा सकता है जिसमें अब तक मसीह की मृत्यु नहीं हुई थी क्योंकि उसे पहले व्यवस्था को पूरा करना था। इस कारण 'नये नियम' के सिद्धांत उसके लोहू में लिखे उसकी मृत्यु से पहले अस्तित्व में नहीं थे। इस कारण अब हमारे पास 23 पुस्तकें हैं जिस पर हमे अध्ययन करना है। जब हम विचार करते है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक 'भविष्य की पुस्तक है, एक ऐसी पुस्तक जिसकी समझ नयी तकनीकी के आरंभ के साथ कलीसिया के लिये सबसे अंतिम दिनों में खोली जायेगी, तब हमारे पास केवल 22 पुस्तकें ही बचती है। इन शेष 22 में 13 पुस्तकें ही है जो स्थानीय एकीकृत यहूदी अन्यजातीय कलीसियाओं के लिये लिखी गई है। इन सबको पौलुस ने लिखा है। नये नियम के सभी अध्याय जिनका संबंध कलीसिया से है, उनमें से 87 पौलुस ने लिखे हैं। अब यदि आप इब्रानियों को भी जोड़े जो कलीसिया की पुस्तक नहीं है परंतु इस्राएल देश को लिखा गया एक पत्र है, तो कुल 149 अध्याय बनते हैं जिनमें से पौलुस ने 100 अध्याय लिखे हैं। शेष 49 का विवरण है, लूका 28, याकूब 5, पतरस 8, यूहन्ना 7 और यहूदा 1। यह बात भरपूरी के साथ स्पष्ट है कि पौलुस को परमेश्वर ने साधन के रूप में उपयोग किया कि गुप्त ज्ञान की एकीकृत कलीसिया के सिद्धांतों और आधारभूत धर्मशिक्षाओं को स्थापित करें। उसे यह कार्य परंपरा के द्वारा नहीं परंतु केवल मसीह की कलीसिया की स्थापना के लिये दिये गये विशेष प्रकाशनों के द्वारा करना था।

रोमियों 16:25

25 जो तुमको मेरे सुसमाचार एवं यीशु मसीह के संदेशानुसार स्थिर कर सकता है, उस भेद के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से गुप्त था,

2 कुरिन्थियों 12:7

7 प्रकाशनों की अधिकता के कारण मैं घमण्ड न करूं, इसलिए मेरे देह में एक कांटा चुभाया गया है, अर्थात शैतान का एक दूत, कि मुझे दुःख दे और घमण्ड करने से रोके रहें।

गलातियों 1:12

12 क्योंकि वह मुझे मनुष्य की ओर से प्राप्त नहीं हुआ, और न किसी ने मुझे उसकी शिक्षा दी, पर वह मुझे यीशु मसीह के प्रकाशन से प्राप्त हुआ।

इफिसियों 3:3-4

3 अर्थात् वह रहस्य जो मुझ पर प्रकाशन के द्वारा प्रकट किया गया, जैसा मैं पहिले ही संक्षेप में लिख चुका हूं,

4 जिसे पढ़कर तुम जान सकते हो कि मैं मसीह के रहस्य को कहां तक समझता हूं,

तो फिर वे विषेश प्रकाशन कौन से है जो केवल पौलुस को दिए गए थे? (कलिसिया का उठा लिया जाना)

1 कुरिन्थियों 15:51-53

51 देखो, मैं तुम्हें एक रहस्य की बात बताता हूँः हम सब सोएंगे नहीं परन्तु सब के सब बदल जाएंगे।

52 यह एक क्षण में, पलक मारते ही, अन्तिम तुरही के बजाए जाने के समय होगा। क्योंकि तुरही बजेगी, मृतक अविनाशी दशा में जिलाए जाएंगे और हम बदल जाएंगे।

53 क्योंकि इस नाशमान का अविनाशी को और मरणशील का अमरता को पहिनना अवश्य है

1 थेस्सलुनीकियों 4:13-17

13 परन्तु हे भाइयो, हम नहीं चाहते कि तुम उनके विषय में अनभिज्ञ रहो जो सो गए हैं, और अन्य लोगों के समान शोकित होओ जो आशारहित है।

14 हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जी भी उठा-इसलिए परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसके साथ ले आएगा।

15 इस कारण हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे सोए हुओं से कदापि आगे न बढ़ेंगे।

16 क्योंकि प्रभु स्वयं ललकार और प्रधान स्वर्गदूत की पुकार और परमेश्वर की तुरही की आवाज के साथ स्वर्ग से उतरेगा, और जो मसीह में मर गए हैं, वे पहिले जी उठेंगे।

17 तब हम जो जीवित हैं और बचे रहेंगे उनके साथ हवा में प्रभु से मिलने के लिए बादलों पर उठा लिए जाएंगे। इस प्रकार हम सदैव प्रभु के साथ रहेंगे।

यहां स्पष्ट है कि पौलुस को छोड यह रहस्य हर किसी के लिए अज्ञात था। ध्यान दें, "मैं तुम्हें एक रहस्य की बात बताता हुं" एकवचनी है

परमेश्वर के निवासस्थान के रूप मे मंदिर अब विश्वासी बन जाता है

1 कुरिन्थियों 3:16-17

16 क्या तुम नहीं जानते कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?

17 यदि कोई परमेश्वर के मन्दिर को नष्ट करे तो परमेश्वर उसे नष्ट करेगा क्योंकि परमेश्वर का मन्दिर पवित्र है, और वह तुम हो।

1 कुरिन्थियों 6:19-20

19 क्या तुम नहीं जानते कि तुम में से प्रत्येक की देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है जो
तुम में है, और जिसे तुमने परमेश्वर से पाया है, और कि तुम अपने नहीं हो?
20 क्योंकि तुम मूल्य देकर खरीदे गए होः इसलिए अपने शरीर के द्वारा परमेश्वर की
महिमा करो।

प्रेरितों के काम में पवित्र आत्मा का दिया जाना (यहुदि) का परिवर्तन पवित्र आत्मा का निवास करने मे (एकरूप कलीसिया) होता है जो पुरी तरह से केवल पौलुस का दिया गया प्रकाशन है।

अनन्त सुरक्षा के लिए विश्वासी पर छाप

इफिसियों 1:13-14

13 उसी में तुम पर भी, जब तुमने सत्य का वचन सुना जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार
है - और जिस पर तुमने विश्वास किया-प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप
लगी।
14 वह हमारे उत्तराधिकार के बयाने के रूप में इस उद्देश्य से दिया गया है कि परमेश्वर
के मोल लिए हुओं का छुटकारा हो, जिस से परमेश्वर की महिमा की स्तुति हो।

इफिसियों 4:30

30 परमेश्वर के पवित्र आत्मा को - शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन
के लिए छाप दी गई है।

अब उध्दार खोने के लिए व्यक्ति को पवित्र आत्मा के निवास को जो छुटकारे के दिन के लिए छाप लगाता है, हटा देना होगा, जो कि एक असंभव कार्य है।

पासबानों के लिए अर्हताएं

1 तिमुथियुस 3:1-7

1 यह कथन सत्य है कि यदि कोई 'अध्यक्ष बनने के अभिलाषा रखता है तो वह एक
भला कार्य करने की इच्छा करता है।
2 इसलिए अवश्य है कि अध्यक्ष निर्दोष हो, एक ही पत्नी का पति हो, संयमी, समझदार,
सम्माननीय, अतिथि सत्कार करने वाला और शिक्षा देने में निपुण हो।
3 शराबी या मारपीट करने वाला न हो, परन्तु नम्र हो, झगड़ालू और धन का लोभी न
हो।

4 वह घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, अपने बाल-बच्चों को ऐसे अनुशासन में रखता
हो कि वे उसका सम्मान करे।
5 यदि कोई व्यक्ति अपने ही घर का प्रबन्ध करना नहीं जानता, तो वह परमेश्वर की
कलीसिया की देखभाल कैसे करेगा?
6 वह कोई नया चेला न हो, कहीं ऐसा न हो कि अहंकार में पड़कर वह शैतान के
समान दण्ड का भागी हो जाए।
7 कलीसिया के बाहर के लोगों में वह सुनामी हो, कहीं ऐसा न हो कि किसी दोष में
पड़कर वह शैतान के फन्दे में फंस जाए।

तीतुस 1:5-6

5 मैं तुझे क्रीत में इस कारण छोड़ कर आया कि शेष बातों को सुधारे और मेरे निर्देश
के अनुसार प्रत्येक नगर में 'प्राचीनों को नियुक्त करे।
6 प्राचीन निर्दोष हो, एक ही पत्नी का पति हो, तथा उसके बच्चे विश्वासी हों, दुराचारी
और निरंकुश न हो।
7 क्योंकि 'अध्यक्ष को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना आवशयक है
वह न तो स्वेच्छाचारी, न क्रोधी, न पियक्कड़, न मारपीट करने वाला और न ही नीच
कमाई का लोभी हो,
8 परन्तु अतिथि-सत्कार करने वाला, भलाई का चाहने वाला, समझदार, न्यायप्रिय, भक्त
व आत्म-संयमी हो।
9 वह उस विश्वासयोग्य वचन पर स्थिर रहे जो धर्मोपदेश के अनुसार है, जिससे कि
वह खरी शिक्षा का उपदेश देने और विरोधियों का मुंह बन्द करने में भी समर्थ हो।

यह प्रकाशन स्पष्ट रूप मे महिलाओं को पासबान बनने से मना करता है।

सेवकों के लिए अर्हताएं

1 तिमुथियुस 3:8-13

8 इसी प्रकार 'धर्म-सेवक भी प्रतिष्ठित व्यक्ति हों, दो-मुंहे या पियक्कड़ न हों और न
नीच कमाई के लोभी हों,
9 परन्तु विश्वास के भेद को निर्मल विवेक से सुरक्षित रखने वाले हो।
10 और ये भी पहिले परखे जाएं, तब यदि दोष रहित हों तो धर्म-सेवक की भांति इन्हें
सेवा करने दो।
11 इसी प्रकार 'स्त्रियां भी सम्माननीय हों, द्वेषपूर्ण गपशप करने वाली न हों, परन्तु
संयमी तथा सब बातों में विश्वासयोग्य हो।

12 धर्म-सेवक एक पत्नी का पति हो और अपने बाल-बच्चों तथा परिवार का अच्छा
प्रबन्धक हो।
13 क्योंकि जिन्होंने धर्म-सेवकों का कार्य अच्छी तरह से पूरा किया है, वे अपने लिए
तो एक उच्च सम्मान तथा उस विश्वास में जो मसीह यीशु में है, दृढ़ निश्चय प्राप्त
करते है।

मुझे यह काफी दिलचस्प लगता है कि उपर्युक्त दो कार्यपदों का उल्लेख प्रेरितों के काम मे मिलता है, परन्तु पौलुस उनकी अर्हताओं के विषय मे प्रकाशन देता है।

सब्त की आराधना कर निर्मुलन

कुलुस्सियों 2:16-17

16 इसलिए खाने-पीने, पर्व, नए चांद या सब्त के दिन के विशय में कोई तुम्हारा न्यायी न
बने।
17 क्योंकि ये सब आने वाली बातों की छाया-मात्र हैं, पर 'मूल-तत्त्व' तो मसीह है।

1 कुरिन्थियों 16:1-2

1 पवित्र लोगों के लिए दान एकत्रित करने के सम्बन्ध में जो निर्देश मैंने गलातिया की
कलीसियाओं को दिया है उसे तुम भी मानो।
2 सप्ताह के पहिले दिन तुम में से प्रत्येक अपनी आय के अनुसार अपने पास कुछ
रख छोड़े कि मेरे आने पर दान एकत्रित न करना पड़े।

कृपया ध्यान दें, 'सप्ताह के पहले दिन' अर्थात रविवार। पौलुस के समस्त लेखन में आप आराधनालय का उल्लेख नहीं पाते, एक बार भी नहीं। यह बात पुनः पौलुस को कलीसिया की धर्मशिक्षा के विषय में दिये गये प्रकाशन को दर्शाती है। प्रेरितों की पुस्तक के बाद से पौलुस शनिवार की आराधना सभाओं में नहीं जाया करता था। केवल अन्यजातीय जाते थे वह भी रविवार के दिन।

मसीह का न्याय सिंहासन

1 कुरिन्थियों 3:8-15

8 बोने वाला और सींचने वाला दोनों एक समान हैं, परन्तु प्रत्येक अपने ही परिश्रम
के अनुसार प्रतिफल पाएगा।
9 क्योंकि हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं, तुम परमेश्वर 'का खेत हो और परमेश्वर का भवन
हो।

10 परमेश्वर के उस अनुग्रह के अनुसार जो मुझे प्रदान किया गया है, मैंने एक कुशल
राजमिस्त्री की भांति नींव डाली, और दूसरा उस पर रद्दा रखता है। परन्तु प्रत्येक
व्यक्ति सावधान रहे कि वह उस पर कैसा रद्दा रखता है।
11 क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है- और वह यीशु मसीह है- कोई दूसरी नींव
नहीं डाल सकता।
12 यदि कोई मनुष्य इस नींव पर सोना, चांदी, बहुमूल्य पत्थर, काठ या घास-फूस से
निर्माण करे,
13 तो प्रत्येक मनुष्य का कार्य प्रकट हो जाएगा। वह दिन उसे दिखाएगा, क्योंकि वह दिन
अग्नि के साथ प्रकट किया जाएगा, और वह अग्नि ही प्रत्येक मनुष्य के कार्य को परखेगी।
14 यदि किसी मनुष्य का निर्मित कार्य जो उसने किया है स्थिर रहेगा तो उसे प्रतिफल
मिलेगा।
15 यदि किसी व्यक्ति का कार्य जल जाएगा तो वह हानि उठाएगा, परन्तु वह स्वयं बच
जाएगा, फिर भी मानो आग से जलते-जलते।

यह मसीही को मसीह के सेवा के लिए मिलने वाले प्रतिफल और सेवा की कमी के कारण होने वाले प्रतिफल की हानी के विषय मे स्पष्ट चेतावनी

इस्त्राएली राष्ट्र को अन्धा किया जाना

रोमियों 11:7-11

7 तो क्या हुआ? इस्राएली जिसकी खोज में थे, वह उन्हें प्राप्त न हुआ, परन्तु उनको
प्राप्त हुआ जो चुने हुए थे, और शेष कठोर कर दिए गए।
8 जैसा लिखा है, "परमेश्वर ने उन्हें आज तक भारी नींद की आत्मा में डाल रखा है,
उसने उसे ऐसी आंखें दी जो न देखें और ऐसे कान जो न सुने।"
9 दाऊद कहता है, "उनका भोजन उनके लिए जाल और फन्दा और ठोकर और दण्ड
का कारण हो जाए।
10 उनकी आंखों में अंधेरा छा जाए कि न देखें, और उनकी पीठ सदा के लिए झुकी
रहे।" कलम लगाने का उदाहरण
11 तब मैं कहता हूँ, क्या उन्होंने गिरने के लिए ठोकर खाई? कदापि नहीं! परन्तु उनके
अपराध के कारण गैरयहूदियों में उद्धार आया कि उनमें ईर्ष्या उत्पन्न करे।

रोमियों 11:25

25 क्योंकि भाइयो, मैं नहीं चाहता कि कहीं तुम अपने आप को बुद्धिमान समझ कर इस रहस्य से अनभिज्ञ रहो कि इस्राएल का एक भाग तब तक कठोर बना रहेगा, जब तक गैरयहूदियों की संख्या पूर्ण न हो जाए।

2 कुरिन्थियों 3:13-15

13 और हम मूसा के सदृश नहीं, जो अपने चेहरे पर परदा डाले रहता था कि इस्राएल की सन्तान एकटक होकर उस लोप होते हुए तेज के अन्त को न देख सके।

14 परन्तु उनके मन कठोर हो गए, क्योंकि आज भी इस पुरानी वाचा को पढ़ते समय वही परदा यथावत 'पड़ा रहता है, क्योंकि वह केवल मसीह में हटाया जाता है।

15 आज के दिन जब कभी मूसा की पुस्तक पढ़ी जाती है तो उनके हृदय पर परदा पड़ा रहता है।

हमें इस सत्य का निश्चित प्रकाशन मिला है कि मसीहा का इंकार करने के द्वारा इस्त्राएल राष्ट्र ने न केवल 'स्वर्ग के राज्य' का निर्माण करना बंद कर दिया, परंतु इस सत्य को देख भी नहीं पाया। रोमियो अध्याय 11, पद 5 में प्रकट है 'एक भाग ऐसा ही कठोर (अंधा) बना रहेगा' जब तक कि 'अन्यजातियां पूरी रीति से प्रवेश न कर लें।' इसका सरल रूप में अर्थ यह है कि कलीसिया का 'यहूदी पहले' वाला तत्व अब इतिहास बन चुका था, और प्रेरितों के काम के आरंभिक अध्यायों में जिन यहूदियों ने बड़ी संख्या में उद्धार पाया था, वे अब इस्राएल का शेष बचा भाग बन चुके हैं।

रोमियो 11:5

5 ठीक उसी तरह वर्तमान समय में भी परमेश्वर के अनुग्रहमय चुनाव के अनुसार कुछ लोग शेष है

शब्द 'अनुग्रहमय चुनाव' पर ध्यान दें – पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा नहीं, जैसा पहले था परंतु ये बचे हुये (यहूदी) अन्यजातियों के समान ही उद्धार पाये हैं, और यह पौलुस के अनुग्रह के सुसमाचार के द्वारा हुआ। रोमियों 11:7 पर ध्यान दे, 'परंतु चुने हुओं को मिला और शेष लोग कठोर किये गये।' चुने हुये यहूदी वास्तव में एक बहुत छोटी संख्या है। मैं आज भी किसी ऐसी कलीसिया को नहीं जानता जिसमें उद्धार प्राप्त यहूदियों की बड़ी संख्या हो। मैं इन 25 वर्ष के दौरान कुछ लोगों से मिला हूं। उन मे से बीस वर्ष की आयु से भी कम थे। अब इनकी तुलना उन हजारों अन्यजातियां से करें जिनसे मैं मिला हूं, और यह बात तस्वीर को स्पष्ट करती है। यह बात पतरस के 'यहूदी प्रथम' के सुसमाचार से इस समय अन्यजातीय और शेष बचे यहूदियों की ओर लेकर जाती है जिसमें अनुग्रह का सुसमाचार पौलुस को दिया

गया था। किंतु यह एक स्थायी दशा नहीं है। पवित्र शास्त्र स्पष्ट रूप में प्रकट करता है कि कलीसिया के उठाये जाने के बाद परमेश्वर फिर एक बार यहूदियों की ओर रूख करेगा।

प्रकाशितवाक्य 7:4-8

4 तब मैंने उन लोगों की संख्या सुनी जिन पर छाप दी गई थी, अर्थात् एक लाख चौवालीस हजार। इस्राएली सन्तानों के प्रत्येक गोत्र में से इन पर मुहर लगाई गई थी।

5 यहूदा के गोत्र से बारह हजार पर, रूबेन के गोत्र से बारह हजार पर, गाद के गोत्र से बारह हजार पर,

6 आशेर के गोत्र से बारह हजार पर, नप्ताली के गोत्र से बारह हजार पर, मनश्शे के गोत्र से बारह हजार पर,

7 शमौन के गोत्र से बारह हजार पर , लेवी के गोत्र से बारह हजार पर, इस्साकार के गोत्र से बारह हजार पर,

8 जबूलून के गोत्र से बारह हजार पर, यूसुफ के गोत्र से बारह हजार पर, और बिन्यामीन के गोत्र से बारह हजार पर मुहर दी गई।

यहां सभी गोत्रों से 12,000 उद्धार पाये लोग हैं। इनमें दान के बदले मनश्शे के गोत्र को शामिल किया गया है। दान ने बाल की आराधना का एक तंत्र स्थापित किया था, इस कारण उसने अपना स्थान खो दिया। कुल मिलाकर उद्धार पाये हुये 144,000 लोग हैं।

यहुदि और अन्यजातिय अनुग्रह मे एक

गलातियों 3:26-29

26 क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो।

27 तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।

28 अब न कोई यहूदी है और न यूनानी, न दास है और न स्वतन्त्र, न पुरुष है और न स्त्री, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।

29 और यदि तुम मसीह के हो तो इब्राहीम की सन्तान और प्रतिज्ञा के अनुसार उत्तराधिकारी भी हो।

गलातियों 5:3-4

3 और मैं प्रत्येक को जो खतना कराता है बतलाए देता हूं कि उसे सम्पूर्ण व्यवस्था का पालन करना पड़ेगा।

4 तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से
वंचित हो गए हो।

इफिसियों 2:5-9

5 जबकि हम अपने अपराधों के कारण मरे हुए थे उसने हमें मसीह के साथ जीवित
किया-अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है,
6 और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया और स्वर्गीय स्थानों में बैठाया,
7 जिससे कि आने वाले युगों में वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर
है अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।
8 क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है - और यह तुम्हारी
ओर से नहीं वरन् परमेश्वर का दान है,
9 यह कार्यों के कारण नहीं जिससे कि कोई घमण्ड करे।

सब कुछ अनुग्रह है, न कि कर्म। मसीह मे अन्यजाति एक हो गए है। यह महान रहस्य है।

पौलुस कलीसिया के संबंध मे अन्तिम दिनो की परिस्थिती को प्रकट करता है

1 तिमुथियुस 4:1

1 परन्तु आत्मा स्पष्ट कहता है कि अन्तिम समय में कुछ लोग भरमानेवाली आत्माओं
और दुष्टात्माओं की शिक्षा पर मन लगाने के कारण विश्वास से भटक जाएंगे।

2 तिमुथियुस 3:1-5

1 परन्तु ध्यान रख कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे।
2 क्योंकि मनुष्य स्वार्थी, लोभी, अहंकारी, उद्दण्ड, परमेश्वर की निन्दा करनेवाले,
माता-पिता की आज्ञा न मानने वाला, कृतघ्न, अपवित्र,
3 स्नेहरहित, क्षमारहित, परनिन्दक, असंयमी, क्रूर, भलाई से घृणा करने वाले,
4 विश्वासघाती, ढीठ, मिथ्याभिमानी, परमेश्वर से प्रेम करने की अपेक्षा सुख-विलास से
प्रेम करने वाले होंगे।
5 यद्यपि ये भक्ति का वेश तो धारण करते हैं, फिर भी उसकी शक्ति को नहीं मानतेः
ऐसे लोगों से दूर रहना।

पौलुस वास्तविक दशा प्रकट करते हैं जो अंत के दिनों में होगी, और यह स्थिति करिश्माई मत और अंतिम दिनों के उसके अनुमानों से बहुत अधिक भिन्न हैं। यदि अंतिम वर्षा की महान आत्मिक जागृति वास्तव में सही है तो पौलुस ने कैसे इस बात को पूरी तरह अनदेखा कर दिया? इतिहास में कभी ऐसी बड़ी आत्मिक जागृति का उल्लेख नहीं है जो कभी किसी

स्थान में हुई हो जिसमें अन्यान्य भाषायें और चंगाई शामिल हो। जॉन नॉक्स, बिली सण्डे, चार्ल्स स्पर्जन, इत्यादि ने विश्वस्तर पर बड़ी आत्मिक जागृति लाई जिनमें यहूदियों के चिन्ह अन्यान्य भाषायें और चंगाईयां नहीं थी। आप स्वयं से पूछिये यह कैसे संभव है? सरल शब्दों में ये आत्मिक जागृतियां वास्तविक थी और तथाकथित अंतिम दिनों की आत्मिक जागृति झूठी और धोकेबाज है। 1 तीमुथियुस 4:1 में लिखा है, 'आत्मा स्पष्ट कहता है।' यह प्रकटीकरण पवित्रात्मा की ओर से है कि एक और आत्मा आयेगा जिसे 'भरमाने वाला आत्मा कहा गया है। भरमाने का अर्थ क्या है? वेबवस्टर यह परिभाषा देते हैं, 'गलत या त्रुटि करने में अगुवाई करना; परीक्षा में डालना।' मेरे अनुसार यह करिश्माई आंदोलन की आत्मा या भावना का सटीक चित्रण (वर्णन) है। इस आत्मा के निर्देश पर बाइबल की प्रमुख धर्मशिक्षायें तोड़ी मरोड़ी गई हैं और उनका पूर्ण रूप से परित्याग कर दिया गया है। यह समझ ने मे कोई गलती न करें कि पवित्रात्मा कभी परमेश्वर के लिखित वचन के विपरीत अगुवाई नहीं करता।

2 कुरिन्थियों 11:13-15

13 क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित और धूर्त कार्यकर्ता हैं, तथा मसीह के प्रेरित होने का सा रूप धारण करते है।

14 इसमें कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि शैतान भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है।

15 इसलिए यदि उसके सेवक भी धार्मिकता के सेवक होने का रूप धारण करते हैं तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं, और उनका अन्त उनके कार्यों के अनुसार होगा।

करिश्माई आंदोलन ने ऐसों को जन्म दिया है जिनका अंत उनके कामों के अनुसार होगा।

करिश्माई आंदोलन इस धोके से भरी बात से प्रज्वलित है, "जिनका अंत उनके कामों के अनुसार होगा।"

हम इन दस प्रकाशनों का उल्लेख (सूची) करते हुये इस भाग का समापन करेंगे। कहने का अभिप्राय यह नहीं कि इससे अधिक प्रकाशन नहीं है। आप सावधानीपूर्वक कम से कम अध्ययन के द्वारा इस सूची को 30 से ऊपर ले जा सकते हैं। ऐसे बहुत से प्रकाशन इस पूरी पुस्तक में सुझाये गये हैं।

कुरिन्थ की कलीसिया का परीक्षण

करिश्माई लोग अपनी चिन्ह और चमत्कारों की धर्मशिक्षा के लिये कलीसिया की पत्रियों में कहां जाते है? पौलुस द्वारा लिखी 13 पुस्तकों में केवल एक ही स्थल है, जहां चिन्हों का उल्लेख है, वह है 1 कुरिन्थियों अध्याय 12, 13, 14। मुझे यह करिश्माई आंदोलन और उनकी धार्मिक परंपराओं में बहुत ही गंभीर त्रुटि दर्शाता है। यदि पौलुस दान वरदानों का इतना बड़ा पक्षधर था तो वह 87 में से केवल 3 में ही क्यों इस मसले पर चर्चा करता है। साथ ही उन्हीं विश्वासियों को लिखे पत्र 2 कुरिन्थियों में वह चिन्हों के अनुप्रयोग को लेकर कहीं कोई चर्चा तक नहीं करता। इसे बेहतर रूप में समझने के लिए हमें 1 कुरिन्थियों के एक–एक अध्याय की रूपरेखा चाहिये, ताकि हम बेहतर रूप में उस समय की परिस्थितियों को समझ सके जिनके कारण इस कलीसिया को पवित्रात्मा का यह महिमामय प्रकटीकरण सौंपा गया जबकि अन्य कलीसियाओं को यह नहीं सौंपा गया।

1 कुरिन्थियों की रूपरेखा

1 कुरिन्थियों की रूपरेखा

यह बात मुझे परेशान करती है कि कैसे कोई कुरिन्थ की कलीसिया से कलीसिया के लिये 'स्वस्थ धर्मशिक्षा' बनाने की आशा भी कर सकता है। परंतु करिश्माईयों के पास और कोई मार्ग नहीं बचा है। निःसंदेह यह कलीसिया उन सभी गैर आत्मिक कलीसियाओं में से अधिकांश कलीसियाओं से कहीं बढ़कर उच्चस्तर पर थी, जिन्हें पौलुस ने पत्रियां लिखी थी। धर्मशिक्षा की दृष्टि से कलीसिया इतनी असंतुलित थी कि पौलुस को मण्डली में तीमुथियुस को भेजना पड़ा कि वह उन्हें व्यक्तिगत रूप में सिखाये और उनकी गलतियों को सुधारे।

1 कुरिन्थियों 4:15-21

15 यद्थापि मसीह में तुम्हारे असंख्य शिक्षक हैं, फिर भी तुम्हारे अनेक पिता नहीं होते। क्योंकि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा पिता बना।
16 अतः मैं तुम से आग्रह करता हूं कि तुम मेरा अनुकरण करो।
17 इसी कारण मैंने तीमुथियुस को, जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है। वह तुम्हें मसीह में मेरे आचरण का स्मरण कराएगा, जैसे कि मैं हर जगह, प्रत्येक कलीसिया को शिक्षा दिया करता हूं।
18 कुछ लोग घमण्ड से ऐसे फूल गए हैं, मानो अब मैं तुम्हारे पास आऊंगा ही नही।
19 परन्तु यदि प्रभु की इच्छा हुई तो मैं तुम्हारे पास शीघ्र आऊंगा, और घमण्डियों की बातों का नहीं, परन्तु उनकी सामर्थ का पता लगा लूंगा।
20 क्योंकि परमेश्वर का राज्य बातों में नहीं, वरन् सामर्थ में है।
21 तुम्हारी क्या इच्छा है? क्या मैं तुम्हारे पास छड़ी के साथ आऊं, या प्रेम और नम्रता की आत्मा के साथ?

पद 16 पर ध्यान दें, स्पष्ट रूप में वे पौलुस के सुसमाचार से गिर चुके थे जो सुसमाचार पौलुस को एक सही धर्मशिक्षा की दृष्टि से संतुलित (स्वस्थ), एकीकृत कलीसिया के लिये दिया गया था। पद 17 में तीमुथियुस को भेजने का एकमात्र उद्देश्य मसीह में 'मेरे आचरण' का 'स्मरण कराना' था, और पौलुस की याद दिलाना था। इन शब्दों पर ध्यान दें 'जैसा मैं हर जगह प्रत्येक कलीसिया को शिक्षा दिया करता हूं।' सभी कलीसियाओं को एक निश्चित और एकीकृत संदेश जो मसीह द्वारा पौलुस को विशेष प्रकाशनों के साथ दिया गया था।

कृपया पद 21 पर ध्यान दें 'क्या मैं तुम्हारे पास छड़ी लेकर आऊं।' यह कलीसिया को दी गई स्पष्ट चेतावनी है। सही करो नहीं तो मैं आऊंगा और स्वयं पीड़ादायी सुधार करूंगा, यह निश्चित है। क्या यह चेतावनी काम आई? हां आप 2 कुरिन्थियों पढ़ें और संपूर्ण रूप में

एक बदली हुई कलीसिया देखें। अन्य–अन्य भाषायें, चंगाई, और वास्तव में सभी चिन्ह के वरदान ओझल हो चुके थे, और अध्याय 12, 13 और 14 में अभिव्यक्त विश्वासियों के बीच विभाजन (मतभेद) भी जा चुके थे, और पूरे नये नियम की किसी पुस्तक में उन्हें दोहराया नहीं गया है।

तो वे समस्याएं कौन सी थी जो इस अज्ञानी कलीसिया में फैल चुकी थी? उनमें से बहुत सी समस्याएं आज भी कलीसिया में अस्तित्व में है।

1 कुरिन्थियों 1:10

10 अब हे भाइयों, मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से तुमसे आग्रह करता हूं कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु तुम्हारे मन और विचारों में पूर्ण एकता हो।

यहां पर हम भाईयों के बिच मे गम्भीर विभाजन देख सकते हैं। मुख्यतः यहूदी बनाम अन्यजातिय और चिन्ह बनाम विश्वास

वचन 22 और 23

22 क्योंकि यहूदी 'चिन्ह मांगते हैं और यूनानी ज्ञान की खोज में रहते हैं,

23 परन्तु हम तो क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह का प्रचार करते हैं, जो यहूदियों की दृष्टि में ठेकर का कारण और गैरयहूदियों के लिए मूर्खता है,

अध्याय 2 के 7-8 वचन

7 परन्तु हम परमेश्वर के उस ज्ञान के रहस्य का वर्णन करते हैं अर्थात् उस गुप्त ज्ञान का जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिए ठहराया,

8 जिस ज्ञान को इस युग के शासकों में से किसी ने न समझा, यदि वे समझ गए होते तो महिमा के प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते।

यहां पौलुस स्पष्ट रूप में एकीकृत कलीसिया के संबंध में जो उसके सुसमाचार के द्वारा स्थापित की जायेगी विशेष गुप्तज्ञान के प्रकाशनों की ओर संकेत करते हैं। यह कहना कि पौलुस को दिया गया सुसमाचार समस्त पुराने नियम को ज्ञात था, अनुवाद की आधारहीन त्रुटि है। (पद 8) 'यदि वे समझ गये होते तो महिमा के प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते।' शैतान को बस इतना ही करना था कि मसीह को पराजित करने वह कुछ न करता। वास्तव में यदि मसीह बूढ़ा होकर मर जाता और क्रूस पर न मरता तो यह उद्धार की समस्त योजना को निरस्त कर देता। पुराने नियम के संतों को शेष बचे यहूदी और अन्यजातीय लोगों से बनी कलीसिया के बारे में कुछ ज्ञान नहीं था।

अध्याय 3 के पद 1-3

1 भाइयो, मैं तुमसे ऐसे बातें न कर सका जैसे आत्मिक लोंगों से, परन्तु जैसे शरीरिक लोगों से, और उनसे जो मसीह में बालक है।

2 मैंने तुम्हें दूध पिलाया-अन्न नहीं खिलाया क्योंकि तुम इसे पचा नहीं सकते थे। वास्तव में तुम अभी भी पचा नहीं सकते,

3 क्योंकि तुम अब तक शरीरिक हो। जबकि तुम में द्वेष और झगड़े हैं, तो क्या तुम शरीरिक नहीं? और क्या तुम्हारा आचरण साधारण मनुष्यों की तरह नहीं?

यहां एक बार फिर कुरिन्थ की कलीसिया की शोचनीय दशा का वर्णन है। शब्द शारीरिक का अर्थ है दैहिक, आत्मिक नहीं। यह शब्द संकेत करता है कि वे धर्मशिक्षा से नहीं परंतु भावनाओं से प्रेरित थे। कृपया पद 2 पर ध्यान दें 'मैंने तुम्हें दूध पिलाया।' यह अपरिपक्व शिशु होने का निश्चित अनुप्रयोग है, जबकी पुर्ण परिपक्व मसीहियों को वचन का अन्न खिलाया जाता है। क्या एक शारीरिक कलीसिया का उपयोग कलीसियाओं को निर्देश देने के लिये मूलभूत स्वस्थ धर्मशिक्षाओं को तैयार करने किया जा सकता है?

रोमियों 8:6-8

6 शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।

7 क्योंकि शारीरिक मन तो परमेश्वर से शत्रुता करता है। वह न तो परमेश्वर की व्यवस्था के अधीन है और न ही हो सकता है।

8 जो शारीरिक हैं, वे परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकते।

पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि शारीरिक होने का अर्थ परमेश्वर के साथ शत्रुता करना है। शत्रुता का अर्थ क्या है? वेबस्टर इसकी परिभाषा करते हैं – 'शत्रु होने की दशा अर्थात बलवती बुरी भावना (विचार) रखना।' मैं इसे असामान्य पाता हूं कि परमेश्वर अपनी भविष्य की कलीसिया के लिये एक दैहिक, शारीरिक और शत्रुवत कलीसिया को नमूने के तौर पर उपयोग करेगा। कम से कम यह आधारहीन बाइबल सिद्धांत के विषय में कहा जा सकता है।

अध्याय 4 का पद 7

7 क्योंकि कौन तुझे दूसरे से उत्तम समझता है? और तेरे पास क्या है जो तुझे नहीं मिला? यदि वह तुझे मिला है तो फिर घमण्ड क्यों करता है मानो तुझे मिला ही नहीं?

यहां हम बंटवारे (या विभाजन) का स्पष्ट अनुप्रयोग देखते हैं। कुछ ने पाया और अपनी विशेष दशा में महिमान्वित हो रहे थे। यहूदी जन चिन्हों में, और अन्यजातीय बिना चिन्हों के।

अध्याय 5 पद 1-2

1 यह वास्तव में सुनने में आया है कि तुम्हारे मध्य व्यभिचार होता है, और ऐसा व्यभिचार जो गैरयहूदियों में भी नहीं होता, अर्थात् एक मनुष्य अपने पिता की पत्नी को रखता है।

2 पर 'तुम घमण्ड से फूल गए हो, और 'तुम इसके बदले शोकित नहीं होते, जिससे कि ऐसा कार्य करने वाला तुम्हारे मध्य से निकाला जाता।

पौलुस इस अति शारीरिक कलीसिया की समस्याओं में से एक का सामना करता है। व्याभिचार न केवल चलन में था पर उसे सहन भी किया जा रहा था। 'परमेश्वर के वचन और सृजन करने के उसके अभिप्राय को तोड़ा मरोड़ा गया कि वे स्वयं को सही ठहरा सके।' 1 कुरिन्थियों 6:13

अध्याय 6 पद 1-7

1 जब तुम्हारे मध्य आपस में झगड़ा होता है तो क्या तुम में से ऐसा कोई है जो पवित्र लोगों के पास जाने के बदले अधर्मियों से न्याय करवाने का दुस्साहस करता है?

2 क्या तुम नहीं जानते कि पवित्र लोग जगत का न्याय करेंगे? और यदि तुम्हारे द्वारा संसार का न्याय किया जाएगा तो क्या तुम इन छोटे-छोटे झगड़ों का निर्णय करने के योग्य नहीं?

3 क्या तुम नहीं जानते कि हम स्वर्गदूतों का न्याय करेंगे? तो क्या हम इन सांसारिक बातों का न्याय करने के योग्य नहीं?

4 फिर जब तुम्हारे मध्य सांसारिक बातों के लिए न्यायालय हैं, क्या तुम ऐसे व्यक्तियों को न्यायी नियुक्त करते हो जिनका कलीसिया में कोई महत्त्व नहीं?

5 मैं तुम्हें लज्जित करने के लिए यह कह रहा हू। क्या यह सच है कि तुम्हारे मध्य एक भी बुद्धिमान नहीं जो अपने भाइयों के आपसी झगड़े सुलझा सके?

6 क्या भाई अपने भाई पर मुकद्दमा चलाता है और वह भी अविश्वासियों के सम्मुख?

7 तब तो वास्तव में तुम्हारी पहली हार यही है कि तुम्हारे आपस में मुकद्दमें चलते है। इसकी अपेक्षा तुम अन्याय क्यों नहीं सह लेते? तुम ही छल क्यों नहीं सह लेते?

यह शारीरिक कलीसिया एक दूसरे के साथ अपनी समस्याओं का हल, कलीसिया के भीतर आपस में करने के बदले अदालत में गयी थी। (पद 5) 'मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये कह रहा हूं कि क्या यह सच है कि तुम्हारे मध्य एक भी बुद्धिमान नहीं है।' पौलुस इस अध्याय

में कलीसिया की प्रशंसा नहीं कर रहा था पर उनमें बुद्धि की कमी को लेकर उन्हें लज्जित कर रहा था।

अध्याय 7 पद 1-2

1 अब उन बातों के विषय में जो तुमने लिखीं, अच्छा तो यह है कि पुरुष, स्त्री को न छुए।

2 परन्तु व्यभिचार से बचने के लिए प्रत्येक पुरुष की अपनी पत्नी और प्रत्येक स्त्री का अपना पति हो।

स्पष्ट रूप से, एक समस्या उठ चुकी थी जिसका संबंध यौन संबंधों से दूर रहने या अविवाहित अवस्था के पालन से था। पौलुस पति और पत्नी के बीच के संबंधों की व्याख्या करता है।

अध्याय 8 पद 8-13

8 परन्तु भोजन हमें परमेश्वर के निकट नहीं पहुंचाता। यदि हम न खाएं तो हमारी कुछ घटी नहीं और यदि खाएं तो हमारी कुछ बढ़ती नही।

9 सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी यह 'स्वतन्त्रता निर्बलों कें लिए ठोकर का कारण बन जाए।

10 यदि कोई व्यक्ति तुझ जैसे ज्ञानी को मूर्ति के मन्दिर में भोजन करते देखे और वह निर्बल हो तो क्या इस से उसके विवेक को मूर्ति के सामने बलि की हुई वस्तुएं खाने का साहस न होगा?

11 क्योंकि तेरे ज्ञान के द्वारा वह जो निर्बल है नाश हो जाएगा - अर्थात् वह भाई जिसके लिए मसीह मरा।

12 इस प्रकार भाइयों के विरुद्ध अपराध करने और उनके निर्बल विवेक को ठेस पहुंचाने के कारण, तुम मसीह के विरुद्ध पाप करते हो।

13 इसलिए यदि भोजन मेरे भाई को ठोकर खिलाता है तो मैं फिर कभी मांस नहीं खाऊंगा, जिस से मैं अपने भाई के लिए ठोकर का कारण न बनू।

यहां पौलुस यहूदियों और अन्य जातियों की मिश्रित कलीसिया में अन्यजाति भाग को खानपान के विषय में परामर्श देता है। अन्य जातियों की भोजन पद्धति पर प्रश्न उठाये गये हैं – मूर्तियों को अर्पित किये गये भोजन खाने से कलीसिया मे मौजुद आधे यहूदीयों को ठोकर लगी थी।

अध्याय 9 पदें 9-14

9 क्योंकि मूसा की व्यवस्था में लिखा है, "दांवनी में चलते हुए बैल का मुंह मत बांधना।" क्या परमेश्वर को केवल बैलों की ही चिन्ता है?

10 या वह सब कुछ हमारे लिए कहता है? हां, हमारे लिए ही यह लिखा गया है, क्योंकि उचित है कि हल चलाने वाला आशा से खेत जोते, और दांवने वाला फसल पाने की आशा से दांवनी करे।

11 जबकि हमने तुम में आत्मिक बातें बोईं तो क्या यह बड़ी बात है यदि हम भौतिक वस्तुओं की फसल तुमसे प्राप्त करें?

12 यदि तुम पर अन्य लोग अधिकार जताते हैं तो क्या हमारा तुम पर और अधिक अधिकार नहीं? फिर भी हमने इस अधिकार का उपयोग नहीं किया, परन्तु हम सब कुछ सहते हैं कि हमारे द्वारा मसीह के सुसमाचार में विघ्न न पड़े।

13 क्या तुम नहीं जानते कि जो लोग मन्दिर में सेवा करते हैं, वे मन्दिर से खाते हैं और जो नित्य वेदी की सेवा करते हैं, वेदी की भेंट के सहभागी होते हैं?

14 इसी रीति से प्रभु ने आदेश दिया है कि वे जो सुसमाचार-प्रचार करते हैं उनकी जीविका सुसमाचार से हो।

कुरिन्थ की इस कलीसिया में परमेश्वर के सेवकों को सहयोग (सहायता) देने के विषय पर एक छोटी सी समस्या थी। पौलुस पद 14 में लिखता है, 'इसी रीति से प्रभु ने आदेश दिया है कि वे जो सुसमाचार प्रचार करते हैं, उनकी जीविका सुसमाचार से हो।' ध्यान दें, पौलुस ने संगठन या संस्थानों की बात नहीं की है। करिश्माई जगत में विश्व संगठन आर्थिक सहयोग के ढांचे में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं।

अध्याय 10 पदें 1-10

1 हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम इस बात से अनभिज्ञ रहो कि हमारे सभी पूर्वज बादल की अगुवाई में चले और सब के सब समुद्र के बीच से पार हुए।

2 सब ने उस बादल और समुद्र में मूसा का बपतिस्मा लिया,

3 सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया,

4 और सब ने एक ही आत्मिक जल पिया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ-साथ चलती थी और वह चट्टान मसीह था।

5 परन्तु फिर भी उनमें से अधिकांश से परमेश्वर प्रसन्न नहीं हुआ-वे जंगल में मर कर ढेर हो गए।

6 ये बातें हमारे लिए उदाहरण ठहरीं कि हम भी बुरी बातों की लालसा न करें, जैसे कि उन्होंने की थी।

7 और मूर्तिपूजक न बनो जैसे कि उनमें से कुछ थे, जैसा लिखा है, ''लोग खाने-पीने को बैठे, और खेलने-कूदने को उठे।''

8 और न हम व्यभिचार करें, जैसे कि उनमें से बहुतों ने किया - और एक दिन में तेईस हजार मर गए।

9 और न हम प्रभु को परखें, जेसे कि उनमें से बहुतों ने किया-तथा सर्पो द्वारा नाश हुए।

10 न तुम कुड़कुड़ाओ, जैसे कि उनमें से बहुतों ने किया-और नाश करने वाले के द्वारा नाश किए गए।

अध्याय 10 में यहूदियों के लिये चेतावनियों की एक सूची है। लगता है कि यहूदियों की बहुत सी व्यवस्था संबंधी गलतियां, उन मसीहियों के जीवन में भी आ गयी थी जो यहूदियों में से आये थे। (पद 8) 'और न हम व्याभिचार करें, जैसे कि उनमें से बहुतों ने किया था।' हम वापस अध्याय 5 में जाकर देख सकते हैं कि पद 1 में जिस व्याभिचार का वर्णन है, वह इस एकीकृत गुप्त ज्ञान की कलीसिया के यहूदी भाग में थी। उसमे अन्य समस्याएं भी व्याप्त थी। (पद 9) 'और न हम प्रभु को परखें।' इस तथ्य के बावजूद कि उन्हें मसीह द्वारा अनुमोदन नहीं दिया गया था, गलत रीति से बातें की जा रही थी। पद 10 में संकेत है कि वे कुड़कुड़ाते थे और अकसर शिकायत करते थे, इस प्रकार वे विभाजन उत्पन्न करते थे।

पद 19-22

19 मेरे कहने का तात्पर्य क्या है? क्या मूर्तियों के आगे बलि की हुई वस्तु कुछ है? या मूर्ति कुछ है?

20 नहीं, पर मैं यह कहता हूं कि गैरयहूदी जिन वस्तुओं की बलि चढ़ाते हैं, उन्हें परमेश्वर के लिए नहीं वरन् दुष्टात्माओं के लिए चढ़ाते है। मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं के सहभागी बनो।

21 तुम प्रभु के कटोरे और दुष्टात्माओं के कटोरे दोनों में से नहीं पी सकते। तुम प्रभु की मेज और दुष्टात्माओं की मेज दोनों के सहभागी नहीं हो सकते।

22 क्या हम प्रभु के क्रोध को भड़काते हैं? क्या हम उस से अधिक शक्तिशाली हैं?

यहूदियों में से कुछ ने अन्यजातीय देवी देवताओं को चढ़ाया हुआ भोजन करने का फैसला किया और उनके संगी भाइयो को उससे ठोकर लगी। (पद 21) प्रभु की मेज और दुष्टात्माओं की मेज दोनों में सहभागिता नहीं हो सकती।

अध्याय 11 पदें 1-3

1 जैसा मैं मसीह का अनुकरण करता हूं, वैसा ही तुम भी मेरा अनुकरण करो।

2 मैं तुम्हारी प्रशंसा करता हूं, क्योंकि तुम सब बातों में मुझे स्मरण करते हो, और परम्पराओं का पालन दृढ़ता से ठीक उसी प्रकार करते हो जिस प्रकार मैंने तुम्हें सौंपा था।

3 परन्तु मैं चाहता हूं कि तुम यह जान लो कि प्रत्येक पुरुष का सिर मसीह है, और
स्त्री का सिर पुरुष है, और मसीह का सिर परमेश्वर है।

पौलुस ने सेवकाई के क्रम में उचित भूमिकाओं को स्पष्ट रूप में निर्धारित किया है। 'प्रत्येक पुरुष का सिर मसीह है।' और 'स्त्री का सिर पुरुष है।' और 'मसीह का सिर परमेश्वर है।' आपके लिये भूमिकाओं का क्रम है – *परमेश्वर, मसीह, पुरुष और स्त्री।* यह क्रम निश्चय ही स्त्रियों को पासबान बनने का पात्र नहीं ठहराता। क्यों? उसके ऊपर पहले से एक अधिकारी है – उसका पति। यदि स्त्री पासबान बने तो उसे दो अधिकारों का सामना करना होगा।

वचन 14

14 क्या प्रकृति स्वयं नहीं सिखाती कि यदि पुरुष लम्बे बाल रखे तो यह उसके लिए
लज्जाजनक है।

एक बार फिर पौलुस ने पुरुषों के लंबे बाल रखने पर आपत्ति की है। लंबे बाल रखने में बुराई क्या है? क्योंकि लंबे बालों के कारण पुरुष जनाना या स्त्रियों जैसे लगते हैं।

1 कुरिन्थियों 6:9

9 क्या तुम नहीं जानते कि दुष्ट लोग परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी न होंगे? धोखा
न खाओ : न व्यभिचारी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न कामातुर, न पुरुषगामी।

पौलुस ने पहले अध्याय 6 में इस स्थिति की विवेचना की थी। आप पढ़ सकते है कि वह 'पुरुषगामियों' और स्त्रियों जैसे लगने वाले पुरुषों को पृथक रखता है। 'क्या तुम नहीं जानते कि दुष्ट लोग परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी न होंगे?' कृपया अधार्मिकता के कामों की सूची पर ध्यान दें: 'न व्याभिचारी, न मूर्तिपूजक, न परस्त्रीगामी, न कामातुर, न पुरुषगामी...।' एक पुरुष को पुरुष जैसा दिखना चाहिये। परंतु यीशु के भी लंबे बाल थे? बिल्कुल नहीं, यीशु नाजीर नहीं थे। उसने अकसर दाख रस पिया और मृतकों को स्पर्श किया, ये दो बातें नाजीरों के लिये कठोरता से वर्जित थी। यीशु नासरी था, और इसका सरल अर्थ है कि वह नासरत नगर से था।

नाजीर होने के लिये अर्हतायें:

गिनती 6:1-6

1 यहोवा ने मूसा से फिर कहा,
2 "इस्राएलियों से कह, 'जब कोई पुरुष या स्त्री विशेष मन्नत, अर्थात् नाजीर की
मन्नत मानकर अपने को यहोवा के लिए समर्पित करे,

3 तो वह मदिरा और मादक पेय-पदार्थों से अलग रहे। वह न मदिरा और न शराब का
बना सिरका पीए, न अंगूर का कोई रस पीए। वह न ताजा, न सूखा अंगूर खाए।
4 वह अपने अलगाव की पूर्ण अवधि तक बीज से लेकर छिलके तक दाखलता से उत्पन्न
कोई वस्तु न खाए।
5 अपने मन्नत की पूर्ण अवधि तक कभी उसके सिर पर उस्तरा न फिरे। जितने दिनों
के लिए उसने अपने को यहोवा के लिए अलग किया है उतने दिन वह पवित्र बना
रहे और अपने सिर के बालों की लटों को बढ़ने दे।
6 'यहोवा के लिए अपने अलगाव की पूर्ण अवधि तक वह किसी शव के पास न जाए।

स्पष्ट रूप में, यीशु नाजीर होने की अर्हता नहीं रखता था। करिश्माई मत के बहुतेरे जो प्रमुख सदस्य है, उन्होंने लंबे बालों और स्त्रियों जैसे दिखने की चेतावनी का उल्लंघन किया है। विश्वास करे या न करें कुछ ने अपने बाल इतने लंबे कर लिये हैं कि वे अधिक से अधिक यीशु के समान दिखने लगे। आप इन नियमों या सिद्धांतों का सबसे अधिक उल्लंघन संगीत में पायेंगे जो करिश्माई मत की ऊर्जा है – अर्थात मसीही रॉक संगीत। यदि कोई ईमानदारी पूर्वक अवलोकन करे तो वह इस निर्णय पर पहुंचेगा कि संसार के विकृत और ईश्वरविहीन संगीत और मसीही रॉक संगीत के बीच केवल शब्दों का अंतर है। मसीही रॉक संगीत का दल, शैतान की टोली जैसा दिखता, कार्य करता और महकता है। जब मैंने नेवी ज्वाइन की मुझे एक यूनिफार्म दिया गया था। मैं जहां भी जाता वह वेशभूषा मेरी पहचान थी। किसी को पूछने की आवश्यकता नहीं थी कि वह यूनीफार्म किसका प्रतिनिधित्व करती थी। आप देखने के बाद एक क्षण में नेवी की 200 वर्ष पुरानी परंपरा को पहचान सकते हैं। यदि मैं आज सड़कों पर टहलूं कोई मुझे नाविक के रूप में नहीं पहचानेगा। क्यों? क्योंकि मैंने यूनिफार्म नहीं पहनी है। यदि ये करिश्माई, रॉक बैण्ड्स वास्तव में यीशु से प्रेम करते हैं, तो वे अब तक क्यों शैतान की यूनिफार्म पहनते हैं? वह ऐसी यूनिफार्म है जिसे संसार के परमेश्वर विहीन लोग भी उनकी परमेश्वर से नफरत करने की परंपरा के कारण पहचान सकते हैं। तब क्या मात्र शब्दों से, रॉक की धुन और नर्क की वेशभूषा वाला बैण्ड ईश्वरीय बन जाता है?

प्रेरितों के काम 16:16-18

16 तब ऐसा हुआ कि जब हम प्रार्थना करने के स्थान को जा रहे थे तो हमें एक दासी
मिली जिसमें भविष्य बताने वाली आत्मा थी। वह शकुन विचारने के द्वारा अपने
स्वामियों के लिए बहुत लाभ कमा लाती थी।
17 वह पौलुस के और हमारे पीछे आकर बार बार चिल्लाने लगी, "ये मनुष्य परमप्रधान
परमेश्वर के दास हैं, जो तुम्हें उद्धार के मार्ग का सन्देश सुनाते है।"

18 वह कई दिनों तक ऐसा ही करती रही। परन्तु पौलुस अत्यन्त क्रोधित हुआ और
उसने मुड़कर उस आत्मा से कहा, "मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूँ
कि उसमें से निकल जा!" और वह उसी क्षण उसमें से निकल गई।

यहां एक पारलौकिक शक्ति संपन्न जवान स्त्री पौलुस के पीछे आकर कुछ सत्य बातें कहती है जबकि वह दुष्टात्मा से ग्रस्त थी – 'ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास है, जो तुम्हें उद्धार के मार्ग का संदेश सुनाते हैं।' उसके शब्द वास्तव में सत्य थे परंतु संदेश देने वाला सही नहीं था।

2 कुरिन्थियों 11:13-15

13 क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित और धूर्त कार्यकर्ता हैं, तथा मसीह के प्रेरित होने का
सा रूप धारण करते है।
14 इसमें कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि शैतान भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण
करता है।
15 इसलिए यदि उसके सेवक भी धार्मिकता के सेवक होने का रूप धारण करते हैं तो
इसमें कोई आश्चर्य नहीं, और उनका अन्त उनके कार्यों के अनुसार होगा।

आईये 1 कुरिन्थियों अध्याय 11 में वापस चलें।

1 कुरिन्थियों 11:27-34

27 इसलिए जो कोई अनुचित रीति से यह रोटी खाता और प्रभु के इस कटोरे में से
पीता है, वह प्रभु की देह और लहू का दोषी ठहरेगा।
28 अतः मनुष्य अपने आप को परखे तब इस रोटी को खाए और इस कटोरे में से
पीए।
29 क्योंकि जो खाता और पीता है, यदि उचित रीति से प्रभु की देह को पहिचाने बिना
खाता-पीता है तो अपने ऊपर दण्ड लाने के लिए ही ऐसा करता है।
30 इसी कारण तुम में से बहुत-से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत-से सो भी गए।
31 यदि हम अपने आप को ठीक से जांचते तो दण्ड न पाते।
32 परन्तु प्रभु दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है कि हम संसार के साथ दोषी न ठहराए
जाए।
33 अतः हे मेरे भाइयो, जब तुम भोजन करने एकत्रित होते हो, तो एक दूसरे क लिए
ठहरा करो।
34 यदि कोई भूखा हो तो अपने घर में ही खा ले ऐसा न हो कि तुम्हारा एकत्रित होना
दण्ड का कारण बन जाए। मैं शेष बातों को स्वयं आकर ठीक करूंगा।

प्रभु–भोज के संदर्भ में क्या पाप था जो इस कलीसिया में व्याप्त था? पद 29 'प्रभु की देह को पहचाने बिना।' इसका अर्थ क्या है? प्रभु ने भविष्य की कलीसिया को सिखाने के एक अवसर के रूप में प्रभु भोज की स्थापना की थी। इसका सरल अर्थ है जब हम इस भोज में भाग लेते हैं, उसका पूरा उद्देश्य उसके बहाये लोहू और तोड़ी गई देह को स्मरण करना है और प्रभु भोज में इन महत्वपूर्ण मसीही सत्यों की पहचान करनी है। कुरिन्थ की इस कलीसिया ने इस सभा के वास्तविक अभिप्राय पर जोर न देकर, मसीह के पाप के लिये अंतिम बलिदान को पुनः स्मरण न करके पीने खाने का अवसर बना दिया था और पद 30 के अनुसार परमेश्वर ने कलीसिया में कुछ लोगों को बीमारी का दण्ड दिया था और बहुत से मर भी गये थे। (पद 34) 'यदि कोई भूखा हो तो अपने घर में ही खा ले।'

अध्याय 12–14

हम अध्याय 12, 13 और 14 का अध्ययन अधिक विस्तार से करेंगे क्योंकि करिश्माई अभिमत वाले इन अध्यायों से अपनी धर्मशिक्षा बनाते हैं। और उन्हें आंदोलन की केंद्रीय बात के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिन पर वे अमल करते हैं। मैं यह कहना चाहूंगा कि पौलुस द्वारा लिखी सभी 14 पत्रियों में केवल ये 3 अध्याय ऐसे हैं जिनमें चिन्ह के दान वरदानों का उल्लेख है। यह बात उन मसीहियों के मनों में गंभीर शंका उत्पन्न करने पाएं जो वास्तव में सत्य जानना चाहते हैं कि यदि वर्तमान समय की एकीकृत गुप्त ज्ञान की अन्यजातीय कलीसियाएं वास्तव में यहूदियों के समान चिन्हों पर अमल करने की आशा करती हैं, तो प्रेरित पौलुस के द्वारा लिखे गये 100 अध्यायों में केवल इन 3 अध्यायों में ही क्यों दान वरदानों की चर्चा है। यदि करिश्माई अभिमत के चिन्ह और आश्चर्य कर्म वास्तव में विधि सम्मत है तो निश्चय पौलुस से चूक हुई थी।

अध्याय 15, पदें 12–19

12 अब यदि मसीह का यह प्रचार किया जाता है कि वह मृतकों में से जिलाया गया है तो तुम में से कुछ यह क्यों कहते हैं कि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं?

13 यदि मरे हुओं का पुनरुत्थान नहीं है तो मसीह भी नहीं जिलाया गया।

14 और यदि मसीह जिलाया नहीं गया तो हमारा प्रचार करना व्यर्थ है, और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है।

15 इस से भी बढ़कर हम परमेश्वर के झूठे गवाह ठहरते हैं, क्योंकि हमने परमेश्वर के विषय में यह साक्षी दी कि उसने मसीह को जिला उठाया। परन्तु यदि मृतक वास्तव में जिलाए नहीं जाते तो उसने मसीह को भी नहीं जिलाया।

16 क्योंकि यदि मृतक जिलाए नहीं जाते तो मसीह भी जिलाया नहीं गया है,

17 और यदि मसीह नहीं जिलाया गया है तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है। तुम अब तक
अपने पापों में पड़े हो।
18 तब तो वे भी जो मसीह में सो गए हैं, नाश हो गए।
19 यदि हमने केवल इसी जीवन में मसीह पर आशा रखी है तो हमारी दशा सब मनुष्यों
से अधिक दयनीय है।

पौलुस ने अविश्वास की समस्या पर चर्चा की है। (पद 12) 'तुम में से कुछ यह क्यों कहते हैं कि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं?' पता नहीं कैसे कुरिन्थ की इस कलीसिया के कुछ मसीहियों ने यह मान लिया कि विश्वासियों का पुनरुत्थान एक धोका था, और वे खुलकर इसका प्रचार कर रहे थे और बहुतों को तनाव में डाल रहे थे।

पद 51-57

51 देखो, मैं तुम्हें एक रहस्य की बात बताता हूँः हम सब सोएंगे नहीं परन्तु सब के
सब बदल जाएंगे।
52 यह एक क्षण में, पलक मारते ही, अन्तिम तुरही के बजाए जाने के समय होगा।
क्योंकि तुरही बजेगी, मृतक अविनाशी दशा में जिलाए जाएंगे और हम बदल जाएंगे।
53 क्योंकि इस नाशमान का अविनाशी को और मरणशील का अमरता को पहिनना
अवशय है
54 परन्तु जब यह नाशमान, अविनाश को पहन लेगा और यह मरणशील अमरता को
पहन लेगा, तो यह लिखा हुआ वचन पूरा हो जाएगाः "मृत्यु को विजय ने निगल
लिया है।
55 हे मृत्यु, तेरी विजय कहां है? हे मृत्यु, तेरा डंक कहां?"
56 मृत्यु का डंक तो पाप है, और पाप की शक्ति व्यवस्था है।
57 परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो हमें प्रभु यीशु मसीह के द्वारा विजयी करता है।

ये पदें स्पष्ट रूप में केवल पौलुस को दिये गये कलीसिया के एक गुप्तज्ञान (रहस्य) का प्रकटीकरण करती है। इसका संदर्भ एक स्पष्ट वर्णन है जिसे मसीहत में कलीसिया का स्वर्ग पर उठाया जाना कहा जाता है। यह रहस्य और अन्य कुछ रहस्य केवल और केवल पौलुस को दिये गये थे अर्थात वे अन्य किसी प्रेरित को नहीं दिये गये थे।

अध्याय 16, पदें 10-11

10 यदि तीमुथियुस आ जाए तो ध्यान रखना कि वह तुम्हारे साथ निर्भय होकर रहे,
क्योंकि वह भी मेरे समान प्रभु का कार्य कर रहा है।

11 इसलिए कोई उसे तुच्छ न जाने, परन्तु उसे कुशल से विदा करना कि वह मेरे पास आ जाए, क्योंकि मैं भाइयों के साथ उसके आने की प्रतीक्षा कर रहा हूं।

समापन में पौलुस तीमुथियुस और उसके आगमन के बारे में इस कलीसिया को चेतावनी देता है कि व्यक्तिगत रूप में जो पहले हो चुका उसे सुधारे और गलतियों को ठीक करे। 'कोई तुझे तुच्छ न जाने।' तीमुथियुस के पास एक कठिन काम था, और जैसा पौलुस ने सभी कलीसियाओं को सिखाया था उसी प्रकार वह इस कलीसिया को सुधारने और सिखाने में सफल हुआ।

1 कुरिन्थियों 4:16-17

16 अतः मैं तुम से आग्रह करता हूं कि तुम मेरा अनुकरण करो।

17 इसी कारण मैंने तीमुथियुस को, जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है। वह तुम्हें मसीह में मेरे आचरण का स्मरण कराएगा, जैसे कि मैं हर जगह, प्रत्येक कलीसिया को शिक्षा दिया कर।

निष्कर्ष के रूप में 1 कुरिन्थियों लिखे जाने के समय कुरिन्थ में जो कलीसिया थी वह कम से कम आत्मिक तो नहीं कही जा सकती थी, उसके ठीक विपरीत थी। यदि आप निष्कर्ष निकाले और इस एक पत्री में बताई गई त्रुटियों की सूची बनायें, तब यह हतप्रभ करने वाली बात है कि यह कलीसिया कितने निचले स्तर पर चली गई थी – मतभेद (विभाजन) शारीरिकता, व्याभिचार, भाइयों के विरुद्ध अदालती मुकदमें, अविवाहित रहना, लालच, रगड़े–झगड़े, शिकायतें, विश्वासियों के लिए ठोकर के कारण, पुरुषों के लंबे बाल, मद्यपान के द्वारा प्रभु भोज का निरादर, और विश्वासियों के पुनरुत्थान को असत्य बताकर प्रचार करना इत्यादि। इस बात को ध्यान में रखें कि पौलुस को व्यक्तिगत रूप में उन्हें सुधारने, शारीरिकता, बचकानी बातों और कलीसिया की गुप्त गंदगी से दूर रखने तीमुथियुस को भेजना पड़ा। कैसे पृथ्वी पर कोई कलीसिया इन सब बातों को जानने के बाद एक परमेश्वर में केंद्रित और मसीह में आशीषित कलीसिया विकसित करने के लिये कुरिन्थ की कलीसिया के पास पद्धति या नमूना लेने जा सकती है। परंतु यही काम करिश्माई लोग बिना पलक झपकाये करते हैं, क्यों?

1 कुरिन्थियों 2:13-14

13 उन्हीं को हम मनुष्यों के ज्ञान के सिखाए हुए शब्दों में नहीं, परन्तु आत्मा के द्वारा सिखाए हुए शब्दों में, अर्थात् आत्मिक विचारों को आत्मिक शब्दों से मिलाकर व्यक्त करते है।

14 परन्तु शरीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातों को ग्रहण नहीं करता, क्योंकि
वे उसके लिए मूर्खतापूर्ण हैं और वह उन्हें समझ नहीं सकता क्योंकि उनकी परख
आत्मिक रीति से होती है।

उनमें समझ (परख) नहीं है और वे आत्मिक बातों को आत्मिक बातों से मिला मिलाकर नहीं देखते।

इब्रानियों 5:13-14

13 प्रत्येक जो दूध ही पीता है, वह धार्मिकता के वचन का अभ्यस्त नहीं, क्योंकि वह
बालक है।
14 परन्तु ठोस भोजन तो बड़ों के लिए है, जिनकी ज्ञानेन्द्रियां अभ्यास के कारण भले-बुरे
की पहिचान करने में निपुण हो गई है।

यदि यह पवित्र शास्त्र का सत्य नहीं है तो फिर वे आन्दोलन के इन तरीकों को कहां से लाते हैं?

2 कुरिन्थियों 10:9-12

9 मैं नहीं चाहता कि अपने पत्रों के द्वारा तुम्हें डराने वाला ठहरूं।
10 क्योंकि उनका कहना है, ''उसके पत्र तो गम्भीर और प्रभावशाली होते हैं, परन्तु
उसकी व्यक्तिगत उपस्थिति प्रभावहीन और उसका प्रवचन व्यर्थ है।"
11 ऐसा व्यक्ति यह समझ ले कि अनुपस्थिति के समय हम पत्रों में जो लिखते हैं, वैसे
ही उपस्थिति के समय अपने कामों में भी है।
12 क्योंकि हमें साहस नहीं कि हम अपनी गणना या तुलना उनके साथ करें जो अपनी
प्रशंसा स्वयं करते हैं, पर जब वे अपने को अपने आप ही से नापते हैं, और अपनी
तुलना अपने आप ही से करते हैं तो वे नासमझ है।

वे अपनी तुलना पवित्र शास्त्र में दिये प्रकाशन से नहीं करते। ''वे अपना मूल्यांकन अपने आप से करते हैं, और अपने आप की तुलना अपने बीच में ही करते हैं, वे बुद्धिमान नहीं हैं।'' सरल शब्दों में कहें तो करिश्माईयों का मानक निर्धारण उन बातों से होता है जो उनमें उच्च पदधारी करिश्माई लोग करते हैं। यही इस तथ्य का कारण है कि वे प्रतिवर्ष और भी अधिक अजीब बनते जाते हैं। शरीर को संतुष्टि के लिये एक नया अनुभव चाहिये और आंदोलन उन्हें बाइबल के सुस्पष्ट मार्गदर्शन की परवाह किये बिना, जो उन्हें ऐसी गतिविधियों से बचाकर रख सकता है, नये नये रोमांच प्रदान करता है।

1 कुरिन्थियों अध्याय 12-14 का परीक्षण

1 कुरिन्थियों अध्याय 12-14 का परीक्षण

1 कुरिन्थियों 12 में समस्या यह वास्तविकता थी कि कलीसिया को बनाने वाले विश्वासी–जन दोनों सुसमाचारों के प्रतिनिधि थे। पतरस द्वारा प्रचारित खतने का सुसमाचार जो यहूदियों को दिया गया जिसमें चिन्ह और चमत्कार शामिल थे, और बिना खतने का सुसमाचार जो अन्यजातियों को दिया गया वह चिन्हों और चमत्कारों के बिना, केवल विश्वास का था। आप 1 कुरिन्थियों की पुस्तक में इन दो समूहों की स्पष्ट पहचान कर सकते हैं।

1 कुरिन्थियों 1:22

22 क्योंकि यहूदी चिन्ह मांगते हैं, और यूनानी ज्ञान की खोज में रहते हैं

यहां हम कलीसिया के भीतर समस्या के इन दो पहलुओं को देखते हैं

1 कुरिन्थियों 10:1-3

1 हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम इस बात से अनभिज्ञ रहो कि हमारे सभी पूर्वज बादल की अगुवाई में चले और सब के सब समुद्र के बीच से पार हुए।

2 सब ने उस बादल और समुद्र में मूसा का बपतिस्मा लिया,

3 सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया,

हम पाते हैं कि पौलुस यहां यहूदी सदस्यों से चर्चा करते हुये यह कहता है 'हमारे सभी पूर्वज बादल की अगुवाई में चले।' इसका संबंध उस बादल से है जो उनके जंगल में भटकाव के दिनों में उनके साथ उपस्थित था।

निर्गमन 13:21

21 और यहोवा उनको दिन में मार्ग दिखाने के लिए मेघ के खम्भे में और रात को उजियाला देने के लिए आग के खम्बे में होकर उनके आगे आगे चला करता था जिससे वे दिन और रात दोनों में यात्र कर सके।

और वे समन्दर से पार हुए

निर्गमन 14:21-22

21 तब मूसा ने समुद्र के ऊपर हाथ बढ़ाया, और यहोवा ने रात भर प्रचण्ड पुरवाई चलाई और समुद्र को हटाकर उसे सूखी भूमि कर दिया। अतः जल दो भागों में विभाजित हो गया।

22 तब इस्राएली समुद्र के मध्य सूखी भूमि से होकर गए और जल उनकी दाहिनी और
बाईं ओर दीवार के समान था।

ये सभी घटनायें यहूदियों के साथ घटी, एक भी अन्यजाति उनमें शामिल न था जबकि कुरिन्थ की कलीसिया दोनों प्रकार के विश्वासियों से मिल कर बनी थी, जो अभी तक मसीह की कलीसिया के एक देह होने का सिद्धांत पूरी तरह नहीं समझे थे। वास्तव में, यही पौलुस की पत्री का संपूर्ण विचार था।

अब आप 1 कुरिन्थियों, अध्याय 12 में दूसरे समूह की पहचान कर सकते हैं।

1 कुरिन्थियों, 12:2

2 तुम्हें मालूम है कि जब तुम अन्यजाति थे तब गूंगी मूर्तियों की ओर जिस प्रकार
भटकाए जाते थे उसी प्रकार चलते थे।

''तुम्हें मालूम है कि जब तुम अन्यजातीय थे तब गूंगी मूर्तियों की ओर जिस प्रकार भटकाये जाते थे उसी प्रकार चलते थे।'' यह पद किसी भी प्रकार यहूदियों पर लागू नहीं होता। कृपया ध्यान दें क्रिया शब्द भूतकाल में है और दर्शाता है कि वे बदल चुके थे। प्रथम द्विभागी कलीसिया की समस्या यह थी कि वे पौलुस को मिले कलीसिया के गुप्त ज्ञान को पूर्ण रीति पर समझ नहीं पाये थे, जिसका सरल अर्थ था दोनों समूह मिलकर विश्वासियों की एक देह में आ जायें, जिसका एकीकरण चिन्हों के द्वारा नहीं परंतु विश्वास के द्वारा है, और यह रोमियों में बताये गये यहूदियों के एक भाग की कठोरता (अंधत्व) के कारण है।

रोमियों 11:7-13

7 तो क्या हुआ? इस्राएली जिसकी खोज में थे, वह उन्हें प्राप्त न हुआ, परन्तु उनको
प्राप्त हुआ जो चुने हुए थे, और शेष कठोर कर दिए गए।
8 जैसा लिखा है, "परमेश्वर ने उन्हें आज तक भारी नींद की आत्मा में डाल रखा है,
उसने उसे ऐसी आंखें दी जो न देखें और ऐसे कान जो न सुने।"
9 दाऊद कहता है, "उनका भोजन उनके लिए जाल और फन्दा और ठोकर और दण्ड
का कारण हो जाए।
10 उनकी आंखों में अंधेरा छा जाए कि न देखें, और उनकी पीठ सदा के लिए
झुकी रहे।"
11 तब मैं कहता हूँ, क्या उन्होंने गिरने के लिए ठोकर खाई? कदापि नहीं! परन्तु उनके
अपराध के कारण गैरयहूदियों में उद्धार आया कि उनमें ईर्ष्या उत्पन्न करे।
12 अब यदि उनका अपराध संसार के लिए धन और उनका पतन गैरयहूदियों के लिए
धन-सम्पत्ति ठहरा, तो उनकी परिपूर्णता से क्या कुछ न होगा!

13 परन्तु मैं तो तुमसे जो गैरयहूदी हो, कह रहा हूँ। अब जब कि मैं गैरयहूदियों के
लिए प्रेरित हूँ, तो मैं अपनी सेवा को ऐसा महत्त्व देता हूँ,

यहां स्पष्ट रूप में यह देखा जा सकता है कि अन्यजातीय विश्वासीजनों (खतनारहित सुसमाचार वाले) को कलीसिया के भावी युग में प्रधानता या महत्व मिलेगा, जिसमें यहूदियों का एक भाग कठोर बना रहेगा, और यहूदियों में से उद्धार पाने वाले चुने हुओं की संख्या (बचे हुये) बहुत सीमित होगी, और वे भी अन्यजातीय विश्वासियों के समान केवल मसीह पर विश्वास करने से बचाये जायेंगे, और इस प्रकार मसीह की देह को पूर्ण करेंगे।

अब 1 कुरिन्थियों 12 अध्याय ऐसा है जिसके अंत में पौलुस ने समायोजन किया है। कृपया अध्याय 12 में प्रस्तुत एकीकृत विचारधारा पर ध्यान दें।

1 कुरिन्थियों 12:1-11

1 हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आत्मिक वरदानों के विशय में तुम अनभिज्ञ रहो।
2 तुम्हें मालूम है कि जब तुम अन्यजाति थे तब गूंगी मूर्तियों की ओर जिस प्रकार भटकाए जाते थे उसी प्रकार चलते थे।
3 इसलिए मैं तुम्हें बताए देता हूं कि परमेश्वर के आत्मा के द्वारा कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं कहता कि "यीशु शापित है" और न पवित्र आत्मा के बिना कोई यह कह सकता है कि "यीशु प्रभु है।"
4 वरदान तो विभिन्न प्रकार के हैं, पर आत्मा एक ही है।
5 और सेवाएं भी कई प्रकार की हैं, परन्तु प्रभु एक ही है।
6 प्रभावशाली कार्य भी अनेक प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है जो सब में सब कुछ करता है।
7 परन्तु प्रत्येक को सब की भलाई के लिए आत्मिक वरदान दिया जाता है।
8 क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि का वचन और दूसरे को उसी आत्मा के द्वारा ज्ञान का वचन दिया जाता है।
9 किसी को उसी आत्मा से विश्वास का तथा किसी और को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है,
10 फिर किसी को सामर्थ्य के कार्यों की शक्ति और किसी को नबूवत करने, किसी को आत्माओं की परख, किसी को भिन्न भिन्न प्रकार की भाषाए बोलने, और किसी को भाषाए का अर्थ बताने का वरदान दिया जाता है।
11 परन्तु वही एक आत्मा ये सब कार्य करवाता है और अपने इच्छानुसार जिसे जो चाहता है अलग-अलग बांट देता है।

इन पदों में पौलुस दोनों समूहों को दिये गये दान वरदानों और चिन्हों की पहचान करते हैं। स्पष्ट रूप में कुछ यहूदीयों के लिए है और कुछ अन्य जातीयों के लिए है। (पद 5) शब्द 'सेवाएं' भविष्य की कलीसियाओं में अत्याधिक उपयोगी साबित होने वाला था। इसमें चिन्हों की कोई बात नहीं है इस कारण यह अन्य जातीय वरदान होगा। (पद 8) बुद्धि का वचन, ज्ञान का वचन दोनों बिना चिन्ह के वरदान है और बिना चिन्ह और चमत्कारों के दिये जाते हैं। इसी प्रकार पद 9 में, चंगाई का वरदान निश्चय ही यहूदियों के लिये चिन्ह का वरदान है। (पद 10) यहां हम 'आश्चर्यकर्मों का करना' विभिन्न भाषाएं बोलना, और भाषाओं का अर्थ बताना, इत्यादि का मिश्रण देखते है, जो निश्चय ही यहूदी है। भविष्यद्वाणी और आत्माओं की परख अन्यजातीय वरदान है। टकराव इस बात में है कि कलीसिया में किस बात (भाग) का महत्व सबसे अधिक है।

1 कुरिन्थियों 12:13-24

13 क्योंकि हम सब ने, चाहे यहूदी हों या यूनानी, दास हों या स्वतन्त्र, एक ही आत्मा
द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा पाया, और हमें एक ही आत्मा पिलाया गया।
14 क्योंकि देह तो एक अंग का नहीं पर अनेक अंगों का समूह है।
15 यदि पैर कहे, "मैं हाथ नहीं, इसलिए मैं देह का अंग नहीं," तो क्या वह इस कारण
देह का अंग नहीं?
16 यदि कान कहे, "मैं आंख नहीं, इसलिए मैं देह का अंग नहीं," तो क्या वह इस
कारण देह का अंग नहीं?
17 यदि पूरी देह आंख ही होती, तब सुनना कहां होता? और यदि सारी देह से सुनना
ही होता तो सूंघना कहां होता?
18 परन्तु परमेश्वर ने सब अंगों को अपनी इच्छा के अनुसार एक-एक करके देह में
रखा है।
19 और यदि वे सब के सब एक ही अंग होते तो देह कहां होती?
20 अंग तो अनेक हैं, परन्तु देह एक है।
21 आंख, हाथ से नहीं कह सकती कि मुझे तेरी आवश्यकता नहीं न सिर, पांव से कि
मुझे तुम्हारी आवश्यकता नही।
22 इसके विपरीत, देह के वे अंग जो निर्बल प्रतीत होते हैं और भी अधिक
आवश्यक हैं,
23 और देह के जिन अंगों को हम कम आदर के योग्य समझते हैं उन्ही को अधिक
आदर देते हैं, और हमारे शोभाहीन अंग अत्यधिक शोभनीय हो जाते हैं,

24 जबकि हमारे शोभनीय अंगों को इसकी आवश्यकता नहीं होती। परन्तु परमेश्वर ने हमारी देह को ऐसा बनाया है कि दीन-हीन अंगों को अधिक आदर मिले।

पद 13 में पौलुस संपूर्ण देह को उचित रूप में जैसा होना चाहिये, वैसा एकीकृत करता है। तब वह देह के विभिन्न अंगों की और देह में उनके महत्व की चर्चा करता है। जब वह परीक्षण समाप्त करता है, वह यह निष्कर्ष निकालता है कि शरीर के वे अंग जो निर्बल जान पड़ते हैं वे ही अधिक आदर के योग्य है। (पद 24) अन्यजातीय जो चिन्ह के दान वरदानों में अधिक उच्च स्तरीय नहीं है (यहूदियों की तुलना में) वे देह (कलीसिया) के जीवन में उतने ही महत्वपूर्ण है जितने अन्य सदस्य (अंग) है। तब विभाजन इस प्रकार होगा – उच्च स्तरीय चिन्हों के वरदान, चंगाई, अन्यान्य भाषाएं इत्यादि.....यहूदी थे और कम दिखने वाले दान वरदान, सेवायें, विश्वास, आत्माओं की परख, इत्यादि अन्यजातीय थे।

1 कुरिन्थियों 12:25

25 कि देह में कोई फूट न पड़े, परन्तु सब अंग अपने समान एक दूसरे की चिन्ता करे।

कुरिन्थ की कलीसिया में एक बड़ी दरार थी जिसे सुधारना अवश्य था। यहूदी विश्वासीजन (खतने का सुसमाचार) अपने चिन्ह और चमत्कारों के साथ यह सोचते थे कि वे निम्न अन्यजातीय विश्वासियों से अत्याधिक श्रेष्ठ थे। इन दीन अन्य जातियों के पास चिन्ह नहीं थे। यह विचारधारा आज भी कलीसिया में व्याप्त है। करिश्माई लोग वास्तव में विश्वास करते हैं कि अन्य अन्य भाषाओं का वरदान उन्हें औसत विश्वासियों की तुलना में बहुत ऊंचे पर रखता है।

1 कुरिन्थियों 12:26

26 और यदि एक अंग दुःख पाता है तो उसके साथ सब अंग दुःख पाते हैं, और यदि एक अंग सम्मानित होता है तो सब अंग उसके साथ आनन्दित होते है।

पौलुस विश्वासियों के अलगाव के स्थान पर उनकी एकता के महत्व की ओर संकेत करता है। पौलुस ने यह सत्य भी पूरी तरह समझ लिया था कि चिन्ह के दान वरदान (यहूदी) शीघ्र ओझल हो जायेंगे, और उनका स्थान दृष्टि (देखना) नहीं परंतु विश्वास लेगा।

1 कुरिन्थियों 12:31

31 तुम बड़े से बड़े वरदान की धुन में रहो। परन्तु मैं तुम्हें सब से उत्तम मार्ग दर्शाता हूँ।

तब सबसे उत्तम मार्ग कौन सा है?

1 कुरिन्थियों अध्याय 13 में पौलुस अब कुरिन्थ की इस कलीसिया की वर्तमान दशा पर चर्चा करता है और उन्हें एकीकृत कलीसिया के भविष्य के संबंध में शिक्षा (निर्देश) देता है।

1 कुरिन्थियों 13:1-7

1 यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाएं बोलूं पर प्रेम न रखूं तो मैं ठनठनाती
'घन्टी और झनझनाती झांझ हूँ।
2 यदि मुझे नबूवत करने का वरदान प्राप्त हो और मैं सब भेदों तथा सब प्रकार के
ज्ञान को जानूं, और यदि मुझे यहां तक पूर्ण विश्वास हो कि मैं पहाड़ों को हटा सकूँ,
पर प्रेम न रखूं तो मैं कुछ भी नहीं हू।
3 यदि मैं अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति कंगालों को खिलाने के लिए दान कर दूं, और अपनी
देह जलाने के लिए सौंप दूं, परन्तु प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नही।
4 प्रेम धैर्यवान है, प्रेम दयालु है और वह ईर्ष्या नहीं करता। प्रेम डींग नहीं मारता,
अहंकार नहीं करता,
5 अभद्र व्यवहार नहीं करता, अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुराई का लेखा
नहीं रखता,
6 अधर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है।
7 सब बातें सहता है, सब बातों पर विश्वास करता है, सब बातों की आशा रखता है,
सब बातों में धैर्य रखता है।

पौलुस अब कलीसिया को उनके बीच की दरार (विभाजन) जो अध्याय 12 में थी उससे दूर एक सरल शब्द 'प्रेम' के द्वारा अधिक सकारात्मक और एकीकृत कलीसिया बनने की ओर ले जाता है। वह बाहर दिखने वाले कामों की एक सुंदर तुलना प्रस्तुत करता है विश्वास जो पहाड़ों को हटा सकता है, कंगालों को खिलाना, देह को जलाना, इत्यादि और आंतरिक दशा जिसे बाहर से नहीं देखा जा सकता– वह प्रेम है। पद 4 में, पौलुस प्रेम का मूल्य दर्शाता है– 'प्रेम धैर्यवान है, प्रेम दयालु है, वह ईर्ष्या नहीं करता, डींग नहीं मारता, अहंकार नहीं करता' पद 4–6 उन समस्याओं की सूची देता है जो अधिकतर यहूदी (खतने का सुसमाचार) कलीसिया में है। इस समस्याओं ने कम करिश्माई अन्यजातीय विश्वासियों (बिना खतने का सुसमाचार) से अलगाव उत्पन्न किया था।

1 कुरिन्थियों 13:8-11

8 प्रेम कभी मिटता नही। नबूवतें हों तो समाप्त हो जाएंगी, भाषाएं हों तो जाती रहेंगी
और ज्ञान हो तो लुप्त हो जाएगा।
9 क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है और हमारी नबूवतें अधूरी है।
10 परन्तु जब सर्व-सिद्ध आएगा तो अधूरापन मिट जाएगा।
11 जब मैं बालक था तो बालक के समान बोलता, बालक के समान सोचता और बालक
के समान समझता था, परन्तु जब सयाना हुआ तब बालकपन की बातें छोड़ दी।

हम यहां चिन्ह और चमत्कारों पर विश्वास करने वाले विश्वासियों पर एक प्राण घातक चोट पाते हैं। यदि इन संदर्भ पदों को पूरी सच्चाई के साथ करिश्माई आंदोलन पर लागू करे तो यह आंदोलन आज ही समाप्त हो जायेगा। पौलुस यहां अन्य–अन्य भाषाओं और चिन्हों की वकालत करने के बदले यह तथ्य प्रकट करता है कि वे समाप्त हो जायेंगे जब 'वह सर्वसिद्ध आयेगा।' वह कौन है जो सर्व सिद्ध है? क्या यह मसीह का वापस आना है? क्या यह पवित्रशास्त्र का पूरा होना है? क्या हम निश्चित रूप में जान सकते हैं?

सबसे पहले यह बात निश्चित है कि 'वह सर्वसिद्ध' मसीह और उसका आगमन नहीं हो सकता। क्यों? क्योंकि 'वह' तटस्थ लिंगी है, यदि यह मसीह होता तो वह तटस्थ लिंगी नहीं परंतु पुल्लिंग होता। तब पद इस प्रकार होती, ''जब वह सर्वसिद्ध पुरुष आयेगा'' – अर्थात यीशु, ऐसा मुद्दा जिसे करिश्माई मतवालों ने गलत ढंग से प्रतिपादित करने का प्रयत्न किया है कि वह सर्वसिद्ध यीशु है।

क्या यह पवित्रशास्त्र के प्रकाशन की पूर्णता है? यदि ऐसा है तो आपको यह निष्कर्ष निकालना होगा कि चिन्ह और चमत्कार आरंभ की एकीकृत कलीसिया का एक भाग था और उसकी अब भी कुछ विश्वसनीयता होगी। इस तथ्य को इतिहास सत्य प्रमाणित नहीं करता। तब इसका क्या अर्थ है?

इफिसियों 4:11–16

11 उसने कुछ को प्रेरित, कुछ को भविष्यद्वक्ता, कुछ को सुसमाचार–प्रचारक, कुछ को
पास्टर और कुछ को शिक्षक नियुक्त करके दे दिया,
12 कि पवित्र लोग सेवा–कार्य के योग्य बनें और मसीह की देह तब तक उन्नति करे,
13 जब तक कि हम सब के सब विश्वास में और परमेश्वर के पुत्र के 'पूर्ण ज्ञान में एक
न हो जाएं, परिपक्व न बन जाएं, अर्थात् मसीह के पूरे डील–डौल तक बढ़ न जाए।
14 अतः हम आगे को बालक न रहें जो मनुष्यों की ठग–विद्या, धूर्तता, भ्रम की युक्ति
और सिद्धान्त–रूपी हवा के हर एक झोंके से उछाले और इधर–उधर घुमाए जाते हों,
15 वरन् प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है अर्थात् मसीह में
बढ़ते जाएं,
16 जिस से सम्पूर्ण देह, प्रत्येक जोड़ में एक साथ बन्धकर और सुगठित होकर, प्रत्येक
अंग के ठीक–ठीक कार्य करने के द्वारा बढ़ती जाती है, और इस प्रकार प्रेम में स्वयं
उसकी उन्नति होती है।

ये संदर्भ पदें स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि 'वह सर्वसिद्ध' कौन है। पद 13 के अनुसार 'विश्वास की एकता', सरल अर्थ में जब विश्वासियों की 'एकीकृत देह' अर्थात कलीसिया, परमेश्वर के

पुत्र का पूर्ण या सिद्ध ज्ञान प्राप्त कर लेती है, और यह परमेश्वर परमेश्वर के पुत्र का आना या प्रकट होना नहीं है। कृपया 1 कुरिन्थियों 13:11 और इफिसियों 4:14 के बीच तुलना पर ध्यान दें, दोनों में लडकपन की बातें कहीं गई है – अर्थात परिवक्वता नहीं है। यहां विचार सुस्पष्ट है। पौलुस अन्य–अन्य भाषाओं की वकालत नहीं कर रहा था, वह इस तथ्य का स्पष्टीकरण दे रहा था कि जब विश्वासीजन मसीह में परिपक्वता प्राप्त कर लेंगे तब चिन्ह समाप्त हो जायेंगे। क्यों? बाइबिल और पौलुस की पत्रियों ने उन्हें समाप्त कर दिया। यही कारण है कि करिश्माई आंदोलन सदैव सुसमाचारों से और प्रे.काम, याकूब और पुराने नियम से धर्मशिक्षा बनाता है। पौलुस की पत्रियां इस आंदोलन पर प्राणघाती चोट है। इफिसियो 4 की पद 14 मेरे विचार से करिश्माई आंदोलन का वर्णन करने वाली सिद्ध पद है। 'मनुष्यों की ठग विद्या, धूर्तता, भ्रम की युक्ति और सिद्धांत रूपी हवा के हर झोंके से उछाले और इधर–उधर घुमाए जाते हों।' 'और वे यही करते हैं।' यह बच्चों (शिशुओं) को बेवकूफ बनाने वाली बात है और उनसे लाभ उठाना है क्योंकि बच्चे या शिशु जीवन की बातों को जानने समझने इंद्रिय संज्ञान का उपयोग करते हैं। ''मैं वही जानता हूं जिसे अनुभव करता हूं'' यही युक्ति करिश्माई आंदोलन की एक स्वर में ललकार है। वास्तविकता में किसी भी आत्मिक बात के लिये भावनायें कभी एक सही मापक नहीं होती। नीचे संदर्भ पदों की एक सूची दी गई है जो सर्वसिद्ध के संदर्भ में 'संतों के सिद्ध बनने' की वकालत करती है। संतों का सिद्ध बनना, आत्मिकता की दशा है, वह एक बड़ी भावना नहीं है।

फिलिप्पियों 3:15

15 अतः हम में से जितने परिपक्व हैं यही विचार रखें, और यदि किसी बात में तुम्हारा मतभेद हो तो परमेश्वर उसे भी तुम पर प्रकट कर देगा।

कुछ सिध्द हैं तो कुछ बढते और परिपक्व हो रहें हैं।

कुलुस्सियों 1:28

28 हम उसी का प्रचार करते हैं, हर एक मनुष्य को चिता देते हैं और समस्त ज्ञान से हर एक को सिखाते हैं, जिससे कि प्रत्येक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित कर सके।

यह पौलुस कि अभिलाषा हैं कि सभी मसीह जन परिपक्व विश्वासियों के रूप मे मसीह से मिलें।

कुलुस्सियों 4:12

12 इपफ्रास, जो तुम में से है और यीशु मसीह का दास है, तुम्हें नमस्कार कहता है और सदैव अपनी प्रार्थनाओं में बड़ी लगन से प्रयास करता है कि तुम परमेश्वर की समस्त इच्छा में परिपक्व और आशवस्त होकर स्थिर रहो।

1 थेस्सलुनीकियों 3:10

10 हम रात-दिन बड़ी लगन से प्रार्थना करते हैं कि तुम्हें देखें, और तुम्हारे विश्वास की घटी पूरी करे।

यह बात रुचिकर है कि पद 10 में पौलुस ने यह विचार दिया है कि इस कलीसिया के विश्वास में कुछ कमी थी और उन्हें ऊपर उठकर 'सिद्ध' बनने की आवश्यकता थी। स्पष्ट रूप में 'वह सर्वसिद्ध' पवित्र शास्त्र में सिद्धता के लिये परिपक्वता है, अर्थात पवित्र शास्त्र की समझ में सिद्धता। करिश्माई लोगों में ऐसा कर दिखने की योग्य अभिलाषा (इच्छा) नहीं है।

1 कुरिन्थियों के 14 अध्याय में पौलुस चिन्हों और उनके महत्व को नये नियम की एकीकृत कलीसिया के संदर्भ में मोहर लगाकर बंद करता है।

1 कुरिन्थियों 14:1-12

1 प्रेम का पीछा करो और आत्मिक वरदानों की धुन में रहो, विशेषकर यह कि तुम भविष्यद्वाणी करो।

2 क्योंकि जो अन्य 'भाषा में बोलता है वह मनुष्यों से नहीं परन्तु परमेश्वर से बातें करता है, क्योंकि उसकी कोई नहीं समझता, परन्तु वह आत्मा में भेद की बातें बोलता है।

3 परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है वह आत्मिक उन्नति, उपदेश तथा सान्त्वना देने के लिए मनुष्यों से बोलता है।

4 जो अन्य भाषा में बोलता है वह अपनी ही उन्नति करता है, परन्तु जो भविष्यद्वाणी करता है वह कलीसिया की उन्नति करता है।

5 अब मैं चाहता तो हूं कि तुम सब अन्य भाषाएं बोलते, परन्तु इस से भी बढ़कर यह कि तुम भविष्यद्वाणी करो, क्योंकि जो भविष्यद्वाणी करता है, वह उस से भी बढ़कर है जो अन्य भाषाओं में बोलता तो है, पर अनुवाद नहीं कर सकता कि कलीसिया की उन्नति हो।

6 भाइयो, यदि मैं तुम्हारे पास आकर अन्य भाषाओं में बोलूं तो मुझ से तुम्हें क्या लाभ होगा जब तक कि मैं प्रकाशन अथवा ज्ञान या नबूवत या शिक्षा की बातें न बोलूं?

7 इसी प्रकार निर्जीव वस्तुएं भी जिनसे ध्वनि निकलती है–चाहे बांसुरी या वीणा–यदि
इनके स्वरों में अन्तर न हो, तो यह कैसे ज्ञात होगा कि बांसुरी या वीणा पर क्या
बजाया जा रहा है?
8 यदि तुरही से अस्पष्ट ध्वनि निकले तो कौन युद्ध के लिए तैयारी करेगा?
9 इसी प्रकार तुम भी, यदि जीभ से साफ–साफ न बोलो तो जो बोला गया वह कैसे
समझा जाएगा? तुम तो हवा से बातें करने वाले ठहरोगे।
10 इस संसार में न जाने कितने प्रकार की भाषाएं हैं, उनमें से कोई भी अर्थहीन नही।
11 यदि मैं किसी भाषा का अर्थ न जानूं तो मैं बोलने वाले के लिए अजनबी तथा
बोलने वाला मेरी दृष्टि में अजनबी ठहरेगा।
12 इसी प्रकार तुम भी, जब कि आत्मिक वरदानों की धुन में हो, कलीसिया की उन्नति
के लिए भरपूर होने का प्रयत्न करो।

प्रथम पद विचार नियत करती है। अभिलाषा यह होनी चाहिये कि कलीसिया में भविष्यद्वाणी की जाये जो सदैव एक ऐसी भाषा में होती है जो सुनने वालों को ज्ञात होती है। (पद 4) 'जो अन्य भाषा में बोलता है वह अपनी ही उन्नति करता है।' पवित्रशास्त्र के अनुसार हमें केवल अपनी ही उन्नति नहीं करनी चाहिये।

रोमियों 15:2

2 हम में से प्रत्येक अपने पड़ोसी को प्रसन्न करे कि उसकी भलाई और उन्नति हो।

हमे दुसरों की भी उन्नती करनी है।

2 कुरिन्थियों 10:8

8 क्योंकि यदि मैं उस अधिकार के विजय में कुछ और भी घमण्ड करूं जिसे प्रभु ने
तुम्हारे बिगाड़ने के लिए नहीं, परन्तु बनाने के लिए हमें दिया, तो मैं लज्जित न
होऊंगा।

पौलुस को जो अधिकार दिया गया था वह कलिसिया के उन्नती के लिए था, न कि उसकी अपनी व्यक्तिगत उन्नती के लिए।

2 कुरिन्थियों 13:10

10 इस कारण मैं तुमसे दूर रहते हुए भी इन बातों को लिख रहा हूं, कि जब मैं तुम्हारे
पास आऊं तो मुझे उस अधिकार से जो प्रभु ने मुझे बिगाड़ने के लिए नहीं परन्तु
बनाने के लिए दिया है, कड़ाई का व्यवहार न करना पड़े।

एक बार फिर देखियें कि प्रभु के द्वारा पौलुस को मिली सामर्थ विश्वासियों की देह की उन्नति के लिये थी, अपने व्यक्तिगत अहं को संतुष्ट करने के लिये नहीं थी।

अब वापस 1 कुरिन्थियों के अध्याय 14 की 5 और 6 पदें पढ़ें। वहां पौलुस ने अन्य–अन्य भाषाओं को कमतर आंका है क्योंकि जो भविष्यवाणी (ज्ञात भाषा) करता है, वह उससे भी बढ़कर है जो अन्य भाषाओं (अज्ञात भाषा) में बोलता है। अध्याय 14 की प्रथम 17 पदों में बात स्पष्ट है कि पौलुस ऐसी किसी बात को महत्व (मूल्य) नहीं देता जो कलीसियाई देह की उन्नति नहीं करती। पद 10 में पौलुस संकेत करते हैं कि अन्य–अन्य भाषाओं के और भी स्त्रोत है और यदि कोई उसे समझा न सके तो अन्य–अन्य भाषा में खतरा है। यह बात स्पष्ट रूप में संकेत करती है कि क्या होता है जब कोई अचानक उठकर अन्य अन्य भाषा में कोई संदेश देता है और उन्हें वह भाषा ज्ञात नहीं होती, जबकि सभा में कोई ऐसा है जो उनकी स्थानीय भाषा में उस संदेश को समझता था, और जो कहा जा रहा था उसे सुनकर आतंकित हो गया। क्या बाइबिल या पवित्र शास्त्र में ऐसा कोई स्थल है जहां ऐसा हुआ था?

1 कुरिन्थियों 12:3

3 इसलिए मैं तुम्हें बताए देता हूं कि परमेश्वर के आत्मा के द्वारा कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं कहता कि "यीशु शापित है" और न पवित्र आत्मा के बिना कोई यह कह सकता है कि "यीशु प्रभु है।"

स्पष्ट है, कुरिन्थ की कलीसिया में यह हुआ था। इस पद के संदर्भ में अवश्य किसी अन्यजाति में अन्यान्य भाषा में वह सब सुना जो ईशनिंदा थी, और उसने गलत अर्थ लगाया कि यह पवित्रात्मा की प्रेरणा से था।

1 कुरिन्थियों 14:18

18. मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि मैं तुम सब से बढ़कर अन्य-अन्य भाषाओं में बोलता हूं।

पृथ्वी पर सभी करिश्माई अभिमत वाले इस पद को 'कोने के सिरे के पत्थर' के समान उपयोग करते हैं और साबित करते हैं कि प्रेरित पौलुस निःसंदेह अन्यान्य भाषा बोलने के अनन्य भक्त थे। सरल रूप में सत्य यह है कि पौलुस कम से कम पांच ज्ञात भाषायें धाराप्रवाह के साथ बोल सकते थे। यहां 'सबसे बढ़कर' बोलने का अभिप्राय 'अज्ञात भाषाओं' की संख्या से नहीं परंतु ज्ञात भाषाओं से है।

1 कुरिन्थियों 14:19-22

19 फिर भी कलीसिया में अन्य भाषा में दस हजार शब्दों की अपेक्षा अपनी बुद्धि से पांच शब्द ही बोलना उत्तम समझता हूं कि दूसरों को भी शिक्षा दे सकूं।

20 भाइयो, अपनी समझ में बच्चे न बनो। वैसे बुराई में तो शिशु बने रहो, परन्तु समझ में सयाने हो जाओ।

21 व्यवस्था में लिखा है कि प्रभु कहता है, "मैं विदेशी भाषा बोलने वाले तथा विदेशियों के होठों से इस जाति से बातें करूंगा, फिर भी ये मेरी नहीं सुनेंगे।"

22 अतः अन्य भाषाएं विश्वासियों के लिए नहीं पर अविश्वासियों के लिए चिह्न है। परन्तु भविष्यद्वाणी अविश्वासियों के लिए नहीं पर विश्वासियों के लिए चिह्न है।

यदि कोई करिश्माई व्यक्ति केवल पद 19 को पढ़े तो वह अपनी त्रुटि सुधार सकता है। ध्यान दें, लिखा है 'कलीसिया में' मै अन्य भाषा में दस हजार शब्दों की अपेक्षा अपनी बुद्धि से पांच शब्द ही बोलना उत्तम समझता हूं। अब 10000 में 5 का अर्थ है 2000 में एक, मुझे आश्चर्य होता है कि इस पद का करिश्माई आंदोलन पर कोई प्रभाव क्यों नहीं पड़ता। यदि मैं किसी सामान्य करिश्माई सम्मेलन में जाऊं और कलीसियाई देह की उन्नति के लिये 10000 शब्दों में एक संदेश दूं, तो मुझ पर कोई ध्यान नहीं देगा, परंतु यदि मैं उसी सभा में 5 शब्दों में ऐसा कुछ कहूं जो सुनने और समझने योग्य न हो, तो वह स्थान उत्साह और गर्मजोशी से उबल पड़ेगा। पौलुस अन्य–अन्य भाषाओं का पक्षधर नहीं था। ध्यान दें, पौलुस क्या कह रहे हैं – मै अन्य अन्य भाषाओं में 10,000 शब्द बोलने की अपेक्षा समझ के साथ 5 शब्द बोलना अधिक उत्तम समझता हुं।

ध्यान दें, पद 20 में पौलुस कुरिन्थ की कलीसिया की बचकानी मानसिकता पर वापस चर्चा करते हैं। पद 21–22 हमें बताती है कि अन्य अन्य भाषायें किसके लिये थी – अर्थात यहूदियों के लिये। 'व्यवस्था में लिखा है कि प्रभु कहता है मैं इस जाति से बातें करूंगा।' निश्चय यह यहूदियों के लिये चिन्ह का पूरा होना है। 'इस जाति' का अभिप्राय निश्चय ही कलीसिया से नहीं था, कलीसिया भविष्यद्वाणी दिये जाने के समय अस्तित्व में नहीं थी। (पद 22) 'अन्य भाषायें विश्वासियों के लिये नहीं पर अविश्वासियों के लिये चिन्ह हैं।' औसतन जिन सभाओं में अन्य अन्य भाषा बोली जाती है, उनमें विश्वासीजन ही उपस्थित रहते हैं।

1 कुरिन्थियों 14:27-33

27 यदि कोई अन्य भाषा में बोले तो दो या अधिक से अधिक तीन जन क्रम से बोलें, तथा एक व्यक्ति अनुवाद करे।

28 परन्तु यदि अनुवादक न हो तो वह कलीसिया में चुप रहे, तथा अपने आप से और परमेश्वर से बोले।

29 नबियों में से दो या तीन बोलें, तथा अन्य लोग परखे।

30 परन्तु यदि बैठे हुओं में से किसी अन्य पर ईश्वरीय प्रकाशन हो तो पहला चुप हो जाए।

31 क्योंकि तुम सब एक-एक करके नबूवत कर सकते हो, जिस से सब सीखें और सब
को शान्ति मिले।
32 नबियों की आत्माएं नबियों के वश में रहती हैं,
33 क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं परन्तु शान्ति का परमेश्वर है, 'जैसा कि पवित्र
लोगों की सब कलीसियाओं में है।

स्पष्ट है कि यदि इस पद का कुछ भी प्रभाव इस आंदोलन पर है तो आज उसे उतर जाना चाहिये। यह पद जो पद्धति बताती है उसका पालन अवश्य किया जाना चाहिये, यदि कलीसिया में वास्तव में अन्य अन्य भाषा बोली जा रही है। सबसे पहली बात बोलने वाले तीन से अधिक नहीं होने चाहिये और कोई एक व्यक्ति अन्य अन्य भाषा को कलीसिया के लिये 'ज्ञात भाषा' में अनुवाद करे। (पद 28) यदि कोई अनुवादक वहां न हो तो 'अन्य अन्य भाषा बोलने वाला कलीसिया में चुप रहे।' मुझे अवसर मिले हैं जब बड़ी करिश्माई सभायें टेलीविजन पर प्रसारित हो रही थी और बीसियों लोग अन्य अन्य भाषाओं में बड़बड़ कर रहे थे जबकि अनुवाद करने वाला कोई वहां उपस्थित नहीं था। पवित्रशास्त्र के निर्देश का संपूर्ण रूप में उल्लंघन करने को किसी भी तरीके से सही नहीं ठहराया जा सकता, परंतु जहां भावनाओं का प्रश्न है वहां उचित ठहराने की आवश्यकता ही नहीं है।

एक स्थानीय करिश्माई आराधना सभा में एक व्यक्ति अचानक सामने आया और बड़ी देर तक अन्य अन्य भाषा में बोलने लगा, उसके बाद वह श्रोताओं को बताने लगा कि उस संदेश का अनुवाद क्या था। उसने सीधे सीधे आरंभ में ही अंग्रेजी में क्यों नहीं बताया? यह मनुष्य धोकेबाज लगता था और उसमें अपनी आत्मिकता का प्रदर्शन करने की अभिलाषा थी, और सब भाईयों के सामने अपनी आत्मिक उन्नति दर्शाना चाहता था।

1 कुरिन्थियों 14:34-40

34 स्त्रियां कलीसियाओं में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है। वे अधीनता
से रहें जैसा कि व्यवस्था भी कहती है।
35 यदि वे कुछ सीखना चाहती हैं तो घर में अपने-अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री के
लिए कलीसिया में बोलना अनुचित है।
36 क्या परमेश्वर का वचन सब से पहले तुम्हीं से निकला? अथवा क्या वह केवल तुम्हीं
तक पहुंचा है?
37 यदि कोई व्यक्ति समझता है कि वह नबी या आत्मिक जन है, तो वह जान ले कि
जो कुछ मैं तुम्हें लिख रहा हूं वह प्रभु की आज्ञा है।
38 परन्तु यदि कोई इसको न माने तो उसकी भी न मानी जाए।

39 इसलिए मेरे भाइयो, नबूवत करने की धुन में रहो परन्तु अन्य भाषाएं बोलने वालों को मत रोको।

40 फिर भी सब बातें उचित रीति से और क्रमानुसार की जाए।

इस समूह की पदों के कारण करिश्माई आंदोलन भीतर तक चोट खाता है। (पद 34) 'स्त्रियां कलीसिया में चुप रहे।' यदि हम इस नियम पर अमल करें तो आंदोलन ही समाप्त हो जायेगा, क्योंकि आरंभ होते ही अंत हो जायेगा।

आंदोलन इस प्रकार की संदर्भ पदों के साथ क्या करता है? वे पौलुस पर स्त्रियों से घृणा करने वाला कहकर आक्रमण करते हैं। वे कहते हैं जैसा लिखा है उसका अभिप्राय वैसा नहीं हो सकता इसलिये समस्या पौलुस में और स्त्रियों के प्रति उसके पक्षपात में है। मत भूलिये कि यही वह पौलुस है जिसकी पद 18 में प्रशंसा की गई है, 'मैं तुम सबसे बढ़कर अन्य अन्य भाषाओं में बोलता हूं।' केवल 17 पदों में ही वह 'नायक' से 'खलनायक' बन गया। दुःखद सत्य है कि यह विचार पौलुस से आरंभ नहीं हुआ था। (पद 34) 'वे आधीनता में रहे जैसा कि व्यवस्था भी कहती है।' व्यवस्था को किसने अधिकार दिया?

पद 37 में उचित स्त्रोत पर ही दोष दिया गया है। 'यदि कोई समझता है कि वह नबी या आत्मिक जन है तो वह जान ले कि जो कुछ मैं तुम्हें लिख रहा हूं वह प्रभु की आज्ञा है।' यदि स्वंय यीशु ने ही कलीसिया में स्त्रियों को चुप रहने की आज्ञा दी है तो यह एक विकल्प नहीं है। तो फिर वे इस बड़ी गलती को कैसे सही ठहराते हैं? वे उसे अनदेखा करने का विकल्प चुनते हैं। आखिरकार आंदोलन को बचाने हम यह नहीं कह सकते – 'हम जानते हैं कि हम क्या अनुभव करते हैं।' निश्चय ऐसा कहना प्रकाशित सत्य को दबाना है, या ऐसा ही प्रतीत होगा।

अंत में, अब हम संभवतः करिश्माई अस्त्र शस्त्रों के भंडार के प्रमुख हथियार पर चर्चा करेंगे। पद 39 में लिखा है, 'अन्य भाषाएं बोलने वालों को मत रोको' इस पद को पवित्र शास्त्र की अन्य पदों से अधिक उपयोग किया जाता है ताकि 'अन्य अन्य भाषाओं की त्रुटि को सही ठहरा सके। किंतु इस पद का अर्थ क्या है? पद 28 के प्रकाश में हम इसे इस प्रकार से कह सकते हैं, 'यदि कोई विदेशी भाषा बोलने वाला कोई परदेशी सभा में है पर उसका अनुवाद कर सकने वाला कोई दूसरा व्यक्ति भी उपस्थित है तो अन्य भाषा बोलने वाले को रोका न जाये, अर्थात उसे कलीसिया के सामने अपनी साक्षी बोलने दी जाये, परंतु पद 28 के अनुसार यदि कोई अनुवाद करने वाला वहां उपस्थित न हो तो वह व्यक्ति सभा में न बोले।'

यह बात निश्चय उन ज्ञात भाषाओं और बोलियों के संबंध में है जो संसार में लोग बोलते हैं। ऐसा एक भी प्रकरण नहीं है जिसमें नये नियम में ऐसी कोई भाषा बोली गई (जिसे केवल परमेश्वर ही समझते हैं) जिसका प्रमाण दिया जा सकता है। वर्षों से मैं चकित होता आया हूं

कि एक पद के इतने छोटे भाग का इतना अधिक उपयोग किया गया है ताकि अन्य भाषा बोलने के मसले को सही ठहराया जा सके, परंतु यह भी सत्य है कि वे और कहां जा सकते हैं? यह बात पौलुस की कही बात का जोड़ है कि 'मैं तुम सबसे बढ़कर अन्य अन्य भाषाओं में बोलता हूं' अर्थात वह वास्तव में अन्य भाषा बोलने का अनन्य पक्षधर था, परंतु वे पौलुस की इस बात को शामिल नहीं करते कि वह अन्यान्य भाषा में 10,000 शब्दों को बोलने की अपेक्षा समझ के साथ 5 शब्दों को बोलना अधिक पसंद करेगा। एक बार फिर स्मरण करे यह 1 और 2000 का अनुपात है। इसी प्रकार पद 34 का प्रथम भाग बहुधा 1 कुरिन्थियों 11:5 से जोड़ा जाता है इस बात को सही प्रमाणित करने के लिये कि स्त्रियाँ स्थानीय कलीसिया में प्रचार और सेवकाई कर सकती हैं।

1 कुरिन्थियो 11:5

5. परंतु जो स्त्री सिर उघाड़े प्रार्थना या नबूवत करती है, अपने सिर का अपमान करती है, क्योंकि वह ऐसी स्त्री के समान है जिसका सिर मूंडा गया हो।

इन समूह वचनों का सन्दर्भ यह विचार प्रस्तुत नहीं करता कि स्त्रियों को अन्यान्य भाषा बोलते और भविष्यद्वाणी करते हुये परमेश्वर की ओर से नया प्रकाशन मिलता है। यह गलतफहमी मूलरूप में इस गलतफहमी से जुड़ी है जिसमें भविष्यद्वाणी क्या है या भविष्यद्वाणी करना क्या है, उसके विषय में गलत धारणा बना ली गई है। कोई भी मसीही जिसे बाइबिल का ज्ञान है वह पूर्ण सटीक रूप में भविष्य की घटनाओं की भविष्यद्वाणी कर सकता है। मैं भविष्य में एक विश्वव्यापि सरकार, अर्थात मसीही विरोधी का प्रकटीकरण, विश्वासियों का स्वर्ग पर उठाया जाना, भविष्य में एक विश्व व्यापी युद्ध, इस्राएल में प्रत्येक यहूदी को मार डालने का भविष्य में प्रयास––– इत्यादि कि भविष्यद्वाणी कर सकता हुं और वह भी 100 प्रतिशत सही! यद्यपि आज के संदर्भ में ये घटनायें भविष्य की है, जो फिर मै कैस सकता हुं? सरल है, प्रत्येक भविष्यद्वक्ता ने जब कभी भी भविष्यद्वाणी की उसने परमेश्वर द्वारा प्रकटित सत्य को बताया था। आज जबकि पवित्रात्मा विश्वासियों में निवास करता है, सब सत्यों तक हमारी तुरंत पहुंच होती है। अब पद 5 के लिखे अनुसार, ''जो स्त्री उघाड़े सिर प्रार्थना या नबूवत करती है'' एक सरल प्रार्थना और बाइबिल की शिक्षा है। पहले से प्रकट किया गया पवित्र शास्त्र हमें प्रकाशन देता है जिनकी भविष्यद्वाणी की जा सकती है। ध्यान दीजिये, इन पदों में यह नहीं कहा गया है कि वह जब यह सब कर रही है तब मंच (पुलपिट) पर है। आप आसानी से देख और समझ सकते हैं कि इन पदों को इस विषय पर अन्य दूसरी पदों के साथ जोड़ने पर यह स्त्रियों की पासबानी के निषेध के विषय पर कोई प्रतिपक्ष या माननीय तर्क प्रस्तुत नहीं करती।

1 तीमुथियुस 2:8-12

8 इसलिए मैं चाहता हूं कि हर स्थान पर पुरूष, बिना क्रोध और विवाद के, पवित्र
हाथों को उठा कर प्रार्थना करे।
9 इसी प्रकार स्त्रियां भी शालीनता और सादगी के साथ उचित वस्त्र से अपने आप को
सुसज्जित करे। वे बाल गूंथने और सोने या मोतियों या बहुमूल्य वस्त्रें से नहीं,
10 वरन् अपने को भले कार्यों से संवारें जैसा कि उन स्त्रियों को शोभा देता है जो अपने
आप को भक्तिन कहती है।
11 प्रत्येक स्त्री चुपचाप और सम्पूर्ण अधीनता से शिक्षा ग्रहण करे।
12 मैं यह अनुमति नहीं देता कि स्त्री उपदेश दे या पुरूष पर अधिकार जताए वह
चुप रहे।

यह वृतान्त स्पष्ट रूप में संकेत देता है कि स्त्रियों की स्थिति क्या है, और भक्त स्त्रियों की वेशभूषा कैसी होनी चाहिये। (पद 9) "इसी प्रकार स्त्रियां भी शालीनता और सादगी के साथ उचित वस्त्रें से अपने आप को सुसज्जित करे। वे बाल गूंथने और सोने या मोतियों या बहुमूल्य वस्त्रें से नहीं।" इस वचन की करिश्माई आंदोलन की रानियों के साथ तुलना कैसे की जाये? (जैन क्राऊच, टैमी फाये बेक्कर इत्यादि)। निश्चय पद 12 के अनुसार पुरुषों को 'शिक्षा न दें' और 'उन पर अधिकार न जतायें' परंतु चुप रहे तब सेवकाई के एक भाग के रूप में शिक्षा देने वाली स्त्रियां कौन होती हैं?

तीतुस 2:3–5

3 इसी प्रकार वृद्ध स्त्रियों का चाल-चलन भी पवित्र हो। वे न तो परनिन्दक हों, न
पियक्कड़, वरन् अच्छी बातें सिखाने वाली हों,
4 जिस से वे युवा स्त्रियों को प्रोत्साहित करें कि वे अपने अपने पति और बच्चों से
प्रेम करें,
5 और वे समझदार, पवित्र, सुगृहिणी, दयालु, पति के अधीन रहने वाली हों, जिससे
कि परमेश्वर के वचन का निरादर न हो।

स्त्रियों का बच्चों को सिखाना या स्त्रियों का स्त्रियों को सिखाना न केवल स्वीकार्य था परंतु उसकी अत्याधिक आवश्यकता भी थी। पद 5 में उन सद्‌गुणों की सूची दी गई है जिन्हें स्त्रियों को आत्मसात करना चाहिये। यह सूची इतनी महत्वपूर्ण क्यों है? क्योंकि परिवार मसीही जगत के केंद्र में है। आज जो बालक है वे कल परमेश्वर के पुरूष बनेंगे, और यह सब माताओं की शिक्षा से आरंभ होता है। मैं इस तथ्य को अच्छी तरह जानता हूं कि ये सभी जिम्मेवारियां वर्तमान युग की आधुनिक सोच रखने वाली स्त्रियों के लिये अत्याधिक अस्वीकार्य है, परंतु फिर भी यह बातें पवित्र शास्त्र में है। क्या होगा यदि यह सूची बदल दी जाये? आप अपने आसपास दृष्टि दौड़ायें। हमें आज्ञाओं की इस सूची का दृढ़ता से परिपालन क्यों करना चाहिये? "ताकि

परमेश्वर के वचन की निंदा न हो।" क्या होगा यदि कोई स्त्री पासबान बनने का निर्णय ले? स्पष्ट है कि इससे परमेश्वर के वचन की निंदा होती है। जब भी कोई पुरुष या स्त्री, पवित्र शास्त्र के द्वारा स्पष्ट रूप में वर्जित बातों को अपने जीवन में स्थापित करें, यह पवित्र शास्त्र की परिभाषा में ईशनिन्दा के तुल्य है।

पवित्र शास्त्र के उल्लघनों का परिक्षण

पेंटिकुस्त की पुनःस्थापना करने के प्रयास में करिश्माई त्रुटि

कोई भी वास्तव में आश्चर्य करेगा यदि पवित्रात्मा दिये जाने की घटनायें जैसा पेंटिकुस्त के दिन हुआ, इस अनुग्रह के काल में पुनः प्रस्तावित करने का विचार भी किया जायेगा। परंतु दुःख की बात है कि करिश्माईयों ने बड़े जोश के साथ तय कर लिया है कि इसे पुनःस्थापित करना मसीही जगत के लिये एक अद्‌भुत बात होगी। प्रश्न उठता है, क्यों? पवित्रात्मा जिसकी प्रतिज्ञा की गयी थी, पहले ही दिया जा चुका है, विश्वासियों पर पहले ही मोहर की जा चुकी है। लगभग 1900 वर्षों से भी अधिक समय से कलीसिया एकीकृत रूप में स्थापित की जा चुकी है। अब कलीसिया को वापस एक पूर्ण यहूदी कलीसिया की घटना में वापस जाने से क्या प्राप्ति होगी जबकि इतिहास बीत चुका है और प्रेरितो के काम 7 में स्वर्ग के राज्य का इंकार किया जा चुका है? आज कलीसिया क्यों यहूदी स्वर्ग के राज्य को दोबारा स्थापित करेगी, जिसके बारे में पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि यह इस्राएल देश के लिये महाक्लेश के अंतिम भाग में स्थापित किया जायेगा?

मरकुस 13:14-27

14 परन्तु जब तुम उस उजाड़ने वाली घृणित वस्तु को वहां खड़ी देखो जहां उसे नहीं होना चाहिए-पाठक समझ लें-तो जो यहूदिया में हों वे पर्वतों पर भाग जाएं
15 और वह जो घर की छत पर हो, नीचे न उतरे और न कुछ लेने के लिए घर के भीतर जाए,
16 और वह जो खेत में हो, अपना चोगा लेने के लिए पीछे न लौटे।
17 परन्तु उनके लिए हाय जो उन दिनों में गर्भवती होंगी और जो शिशुओं को दूध पिलाती होंगी!
18 प्रार्थना करो कि यह शीत ऋतु में न हो।
19 क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश के होंगे जैसे सृष्टि के आरम्भ से जिसे परमेश्वर ने सृजा, अब तक न तो हुए और न फिर कभी होंगे।
20 और यदि प्रभु ने उन दिनों को घटाया न होता तो कोई भी प्राणी न बचता, परन्तु उन चुने हुओं के कारण जिन्हें उसने चुन लिया है, उसने इन दिनों को घटाया।
21 तब यदि कोई तुमसे कहे, 'देखो, मसीह यहां है,' या, 'देखो, वह वहां है,' तो विश्वास न करना

22 क्योंकि झूठे मसीह और झूठे नबी उठ खड़े होंगे, और चिह्न और अद्‌भुत काम दिखाएंगे कि यदि सम्भव हो तो चुने हुओं को भी भटका दे।
23 परन्तु सावधान रहना देखो, मैंने पहले ही तुम्हें सब कुछ बता दिया है।
24 "परन्तु उन दिनों में, उस क्लेश के पश्चात, सूर्य अन्धकारमय हो जाएगा, तथा चन्द्रमा अपना प्रकाश न देगा,
25 और आकाश से तारागण गिरते रहेंगे, तथा आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी।
26 तब लोग मनुष्य के पुत्र को बड़े सामर्थ और महिमा के साथ बादलों में आता हुआ देखेंगे।
27 उस समय वह अपने स्वर्गदूतों को भेजकर, पृथ्वी के इस छोर से लेकर आकाश के उस छोर तक, चारों दिशाओं से अपने चुने हुओं को एकत्रित करेगा।

यह प्रतिज्ञा इस्राएल देश और उन इस्राएलियों के लिये हैं जो इस घटना के घटने के समय इस्राएल देश में जीवित होंगे। अब समस्या केवल इतनी है कि कलीसिया के स्वर्ग पर उठाये जाने पर पवित्रात्मा विश्वासियों में से निकल जायेगा।

2 थिस्सलुनीकियो 2:7-8

7 क्योंकि अधर्म का रहस्य अभी भी कार्यशील है, और जब तक रोकने वाला हटा न दिया जाए तब तक वह उसे रोके रहेगा।
8 तब वह अधर्मी प्रकट किया जाएगा जिसे प्रभु अपने मुंह की फूंक से मार डालेगा और अपने 'आगमन के तेज से भस्म कर देगा।

इस बात को स्मरण रखना चाहिये कि यीशु की भौतिक या सदेह उपस्थिति के समय जबकि स्वर्ग के राज्य की घोषणा की गई थी, पवित्रात्मा नहीं दिया गया था। उसी प्रकार, यीशु के सदेह महिमा में लौटते समय, क्लेश के अंतिम भाग में यहूदी राष्ट्र को संपूर्ण विनाश से बचाने के लिये भी स्वर्ग का राज्य उपस्थित नहीं होगा फिर करिश्माई लोग क्यों कर पेंटिकुस्त का एक नया अनुभव चाहते हैं? पवित्रात्मा किसी भी आराधना में जो बाइबल पर आधारित है, केंद्रीय बिंदु नहीं है।

यूहन्ना 16:13-14

13 परन्तु जब वह, अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो वह तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा और आने वाली बातों को तुम पर प्रकट करेगा।
14 वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों को लेकर तुम पर प्रकट करेगा।

एक बार फिर हम करिश्माई मन का संकीर्ण दर्शन देखते हैं। यह स्पष्ट है किस पर जोर दिया गया है। पवित्र शास्त्र में उनके अनुप्रयोगों के लिये केवल 'प्रेरितो के काम' और 'चार सुसमाचार ही है' जहां वे सीमित क्षेत्र में 'चिन्ह' और 'चमत्कारों' की बात कर सकते हैं। और इस बात से कलीसिया की पत्रियां पूरी तरह इंकार करती है। चिन्ह और चमत्कार अब बीत चुके हैं। प्रेरितों के काम अध्याय 2 के बाद चिन्ह और चमत्कार अगले 50 वर्ष से भी कम समय तक जारी रहे, कलीसिया के इतिहास में यह निश्चित रूप में बहुत छोटा भाग है यदि1900 वर्षों के बिना चिन्ह चमत्कारों के इतिहास से उसकी तुलना की जाये। तब सभी यहूदी चिन्ह और चमत्कारों के साथ पेंटिकुस्त की आग को पुर्नस्थापित करने की क्या आवश्यकता है? वे कहते हैं ऐसा करने पर अंत के दिनों में आत्माओं की बड़ी कटनी काटी जा सकती है। क्या यह बाइबिल की सत्य धर्मशिक्षा है? विश्वास कहां से आता है? परमेश्वर के वचन से या चिन्ह और चमत्कारों के द्वारा?

रोमियो 10:13-17

13 क्योंकि, "जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।"
14 फिर वे उसे क्यों पुकारेंगे जिस पर उन्होंने विश्वास ही नहीं किया? और वे उस पर कैसे विश्वास करेंगे जिसके विषय में उन्होंने सुना ही नहीं? भला वे प्रचारक के बिना कैसे सुनेंगे?
15 और वे प्रचार कैसे करेंगे जब तक कि भेजे न जाएं? ठीक जैसा कि लिखा है, "उनके पांव कैसे सुहावने हैं जो 'भली बातों का सुसमाचार लाते हैं!"
16 परन्तु उन सभी ने सुसमाचार पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि यशायाह कहता है, "हे प्रभु, किसने हमारे सन्देश पर विश्वास किया है?"
17 अतः विश्वास सुनने से, और सुनना 'मसीह के वचन के द्वारा होता है।

जैसा आप ऊपर दी गई पदों में और सामान्य तौर पर कलीसिया की पत्रियों में देखते हैं, अनुग्रह के काल में चिन्ह और चमत्कारों का कोई स्थान नहीं है। शरीर और भावनाओं को दूर कर दिया गया है। भावनाओं के स्थान पर अब विश्वास को मसीहत का आधार माना गया है।

स्त्री पासबान और तलाकशुदा पासबानों और सेवकों (deacons) के विषय में करिश्माई त्रुटि

करिश्माई आंदोलन का पवित्रशास्त्र के सत्य से सर्वाधिक स्वाभाविक पलायन स्त्री पासबानों की नियुक्ति और उनके अनुमोदन में स्पष्ट रूप में प्रदर्शित होता है।

1 तीमुथियुस 3:1-6

1 यह कथन सत्य है कि यदि कोई 'अध्यक्ष बनने के अभिलाषा रखता है तो वह एक भला कार्य करने की इच्छा करता है।
2 इसलिए अवश्य है कि अध्यक्ष निर्दोष हो, एक ही पत्नी का पति हो, संयमी, समझदार, सम्माननीय, अतिथि सत्कार करने वाला और शिक्षा देने में निपुण हो।
3 शराबी या मारपीट करने वाला न हो, परन्तु नम्र हो, झगड़ालू और धन का लोभी न हो।
4 वह घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, अपने बाल-बच्चों को ऐसे अनुशासन में रखता हो कि वे उसका सम्मान करे।
5 यदि कोई व्यक्ति अपने ही घर का प्रबन्ध करना नहीं जानता, तो वह परमेश्वर की कलीसिया की देखभाल कैसे करेगा?
6 वह कोई नया चेला न हो, कहीं ऐसा न हो कि अहंकार में पड़कर वह शैतान के समान दण्ड का भागी हो जाए।

तीतुस 1:5-7

5 मैं तुझे क्रीत में इस कारण छोड़ कर आया कि शेष बातों को सुधारे और मेरे निर्देश के अनुसार प्रत्येक नगर में 'प्राचीनों को नियुक्त करे।
6 प्राचीन निर्दोष हो, एक ही पत्नी का पति हो, तथा उसके बच्चे विश्वासी हों, दुराचारी और निरंकुश न हो।
7 क्योंकि अध्यक्ष को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना आवशयक है वह न तो स्वेच्छाचारी, न क्रोधी, न पियक्कड़, न मारपीट करने वाला और न ही नीच कमाई का लोभी हो।

यहां पवित्र शास्त्र में पासबानों की अर्हताओं का स्पष्ट उल्लेख है और कहा गया है कि "वह एक ही पत्नी का पति हो।" ऐसा कोई तरीका नहीं है कि आप इस सत्य को खींचतान कर स्त्रियों को शामिल करें।

1 तीमुथियुस 2:11-12

11 प्रत्येक स्त्री चुपचाप और सम्पूर्ण अधीनता से शिक्षा ग्रहण करे।

12 मैं यह अनुमति नहीं देता कि स्त्री उपदेश दे या पुरूष पर अधिकार जताए : वह चुप रहे।

1 कुरिन्थियों 14:34-38

34 स्त्रियां कलीसियाओं में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है। वे अधीनता से रहें जैसा कि व्यवस्था भी कहती है।

35 यदि वे कुछ सीखना चाहती हैं तो घर में अपने-अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री के लिए कलीसिया में बोलना अनुचित है।

36 क्या परमेश्वर का वचन सब से पहले तुम्हीं से निकला? अथवा क्या वह केवल तुम्हीं तक पहुंचा है?

37 यदि कोई व्यक्ति समझता है कि वह नबी या आत्मिक जन है, तो वह जान ले कि जो कुछ मैं तुम्हें लिख रहा हूं वह प्रभु की आज्ञा है।

38 परन्तु यदि कोई इसको न माने तो उसकी भी न मानी जाए।

पवित्रशास्त्र न केवल स्त्रियों को पासबान बनने से रोकता है पर उन्हें कठोरता से कलीसिया में पुरुषों पर किसी भी प्रकार से अधिकार जताने की अनुमति नहीं देता। तब कैसे एक पास्टर परमेश्वर के वचन का प्रचार और झुंड की जरूरतों में सेवकाई कर सकता है जबकि उसे इस काम को करने के लिये पवित्र शास्त्रीय अधिकार नहीं दिया गया है। साथ ही जैसा व्यवस्था में लिखा है, 'स्त्रियों को कलीसिया में चुप रहना है।' मित्रों, यह पौलुस की नहीं, परमेश्वर की योजना है, पर स्त्रियों को अनुमति क्यों नहीं है?

इफिसियों 5:22-24

22 हे पत्नियों, अपने-अपने पति के ऐसे अधीन रहो जैसे कि प्रभु के अधीन हो।

23 क्योंकि पति तो पत्नी का सिर है, जिस प्रकार मसीह भी कलीसिया का सिर है और स्वयं देह का उद्धारकर्ता है।

24 पर जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने-अपने पति के अधीन रहे।

कुलुस्सियों 3:18

18 हे पत्नियो, जैसा प्रभु में उचित है, अपने अपने पति के अधीन रहो।

स्त्रियों को अनुमति न देने का कारण सरल है। परमेश्वर ने स्त्रियों को जो भूमिका दी है वह उनके पासबान बनने के लिये उपयुक्त नहीं है। पति की आधीनता और पुरुष का अधिकार

सबसे पहले एक आदर्श है क्योंकि वह स्वयं मसीह की आधीनता में है। कलीसिया एक 'दुल्हन' है और यीशु 'दूल्हा' है, जिनका विवाह 'मेमने के विवाह के भेज' के समय होगा।

2 कुरिन्थियों 11:1-2

1 मैं चाहता हूं कि तुम मेरी थोड़ी-सी मूर्खता सह लेते, परन्तु वास्तव में तुम सह भी रहे हो।

2 क्योंकि मुझे तुम्हारे लिए लगन है, परमेश्वर की सी लगन, क्योंकि मैंने तुम्हारी सगाई एक पति अर्थात् मसीह से की है कि तुम्हें एक पवित्र कुंवारी की भांति उसे सौंप दूं।

कृपया ध्यान दे, पौलुस ने कहा 'मैने तुम्हारी सगाई एक पति' से की है। आप कलीसिया है और मसीह पति है। यह पौलुस को मिले प्रकाशन का एक और उदाहरण है, यह विशेष प्रकाशन अन्य प्रेरितों को नहीं मिला था। यदि आप इस क्रम को उलट दे और स्त्रियों को पासबान बनने की अनुमति दे तब प्रतीक रूप में कलीसिया को मसीह पर अधिकार मिल जायेगा। दूसरा विचार है कि वास्तविकता में पहले ही स्त्री पर पति का अधिकार है, तब समस्या यह होगी कि आदेश कौन देगा। मान लो एक स्त्री पासबान को परमेश्वर की ओर से बुलाहट दी जाती है कि वह विश्व के किसी दूसरे भाग में एक चर्च में जाये, तब परमेश्वर को पहले उसके पति से आज्ञा लेनी होगी कि वह उस बुलाहट के लिये पत्नी को अनुमति दे। क्यों? क्योंकि सबसे पहले तो पत्नी अपने पति के आधीन है और वहीं घर का मुखिया (सिर) होने के कारण निर्देश (अनुमति) देगा। क्या होगा यदि उसका पति उसके जाने से सहमत न हो? परमेश्वर ने पवित्र शास्त्र में कहीं भी स्त्रियों के पासबान बनने का प्रावधान नहीं किया है और न ही आत्मिक मसलों में पुरूष पर कोई अधिकार दिया है, न तो पुराने नियम में और न नये नियम में किसी भी अध्याय में कहीं कोई ऐसी पद नहीं है। एक और कारण है जो पासबान की संतानों से संबंधित है।

1 तीमुथियुस 3:4-5

4 वह घर का अच्छा प्रबन्ध करता हो, अपने बाल-बच्चों को ऐसे अनुशासन में रखता हो कि वे उसका सम्मान करे।

5 यदि कोई व्यक्ति अपने ही घर का प्रबन्ध करना नहीं जानता, तो वह परमेश्वर की कलीसिया की देखभाल कैसे करेगा?

निर्देश है कि पास्टर/पासबान अपनी संतानों को आधीनता या अनुशासन में रखे। परमेश्वर की कलीसिया को सिखाने या प्रबंध करने की क्षमता सीधे तौर पर परिवार में उसकी प्रबंधन-क्षमता से परिलक्षित होती है; आप उसके बच्चों का आचरण देखकर ही जान सकते हैं। यदि बच्चे

विद्रोही और नियंत्रण से बाहर हैं तब यह सही संकेत है कि पासबान में नेतृत्व क्षमता की भारी कमी है। अब 'एक ही पत्नी' का प्रतिबंध क्यों है? यदि किसी तलाकशुदा पासबान की पत्नी दूसरा विवाह कर लेती है, तो उसके बच्चे फिर पासबान की देखभाल में नहीं रहेंगे। दूसरे शब्दों में अब नया पति बच्चों का अनुशासन करेगा। परमेश्वर कहते हैं कि पासबान के सभी बच्चे उसकी अधीनता में रहें, किंतु बच्चों के दो समूह बन जाने पर ऐसा संभव नहीं होगा।

पवित्रात्मा की सेवकाई को लेकर करिश्माईयों की त्रुटि

यदि आप करिश्माईयों के संदेश को सुनें, आप यह विचार बनाएंगे कि पवित्रात्मा (को पाना) सर्वोच्च अनुभव है जो आज कोई व्यक्ति पा सकता है। आंदोलन में "पवित्रात्मा की आत्मिक–जागृति" और "पवित्रात्मा का अभिषेक" जैसे शब्द नियमित रूप में सुने जा सकते हैं। यह विचार कि पवित्रात्मा शैतान को बांध सकता है, और हमें सभी प्रकार की बुराईयों से छुटकारा दे सकता है, इस आंदोलन की प्रमुख धर्मशिक्षा है। क्या पवित्रात्मा की यह सराहना पवित्र शास्त्र के अनुसार है और पवित्रात्मा के कामों के मिशन की स्पष्ट परिभाषा के अनुरूप है? आइयें, हम जांच करे.

यूहन्ना 7:38-39

38 जो मुझपर विश्वास करता है, जैसा कि पवित्रशास्त्र में कहा गया है, 'उसके हृदय में
से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी'।"

39 परन्तु यह उसने पवित्र आत्मा के विषय में कहा, जिसे उसपर विश्वास करने वाले
पाने को थे इसलिए कि पवित्र आत्मा अब तक नहीं दिया गया था, क्योंकि यीशु
अब तक महिमा में नहीं पहुंचा था।

कृपया ध्यान दे कि पवित्रात्मा की प्रतिज्ञा उनके लिये है "जो उस परमेश्वर पर विश्वास करते हैं।" उनके साथ क्या होगा? "उसके हदय में से जीवन के जल की नंदियां बह निकलेगी।" यह जीवन का जल निश्चय ही महिमामय, जी उठे उद्धारकर्ता का संदेश है। इसकी पहचान पद 39 में दी गई है – "जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे।" निश्चित रूप में यह भविष्य की एक घटना की चर्चा थी। क्यों? "पवित्रात्मा तब तक दिया नहीं गया था क्योंकि यीशु तब तक महिमा में नहीं पहुंचा था।" जब हम इन सबको उचित सदर्भ और परिप्रेक्ष्य में समझते है, हम स्पष्ट रूप में देख सकते है कि पवित्रात्मा का दिया जाना महिमामय उद्धारकर्ता के उद्घोष के लिये था। तब पवित्रात्मा कहां दिया गया और उसका मिशन क्या था?

यूहन्ना 15:26

26 जब वह सहायक आएगा जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूँगा, अर्थात् सत्य
का आत्मा जो पिता से निकलता है, वह मेरी साक्षी देगा।

यहां पर हम तुरन्त ही पवित्र आत्मा के कार्य को देख सकतें हैं अर्थात मसीह की महिमा, न कि पवित्र आत्मा की महिमा

यूहन्ना 14:26

26. परन्तु सहायक अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हे सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैने तुमसे कहा है, वह तुम्हे स्मरण कराएगा।

"वह तुम्हे सब बातें सिखाएगा" और "वह तुम्हे सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैने तुमसे कहा है, वह तुम्हे स्मरण कराएगा।" यहां तक हमे केवल यह स्पष्ट करने की अवश्यकता है कि "जो कुछ मैने तुमसे कहा है" का क्या अर्थ है।

2 कुरिन्थियों 12:7

7 प्रकाशनों की अधिकता के कारण मैं घमण्ड न करूं, इसलिए मेरी देह में एक कांटा चुभाया गया है, अर्थात् शैतान का एक दूत, कि वह मुझे दुःख दे और घमण्ड करने से रोके रहे।

मसीह द्वारा पौलुस को दिये गये सत्य के प्रकाशनों के बाद मसीह द्वारा चेलों को यहून्ना 14 में दिये गये प्रकाशनों का महत्व नहीं रह जाता। अब केवल यही प्रश्न बचता है – करिश्माई लोग क्यों यहूदियों को दिये सुसमाचार को चिन्ह और चमत्कारों के साथ इतनी शीघ्रता से आत्म सात करते है और एकीकृत कलीसिया के आधारभूत विकास के लिये मसीह द्वारा पौलुस को सीधे सीधे दिये प्रकाशनों की अनदेखी करते है? बहुत से उदाहरण दिये जा सकते है – पौलुस के प्रकाशन में स्त्री पासबानों की अनुमति नहीं है (1 कुरिन्थियों 14) परन्तु करिश्माई धर्म शिक्षा उसकी प्रशंसा करती है? क्या यीशु ने कलीसिया और उसकी धर्मशिक्षा को वही बल नहीं दिया है जो उसने उन्हें सुसमाचारों में दिया है? एक और प्रमुख उदाहरण – 1 कुरिन्थियों 13:8 है। पौलुस के अनुसार 'भाषाये जाती रहेगी,' और 1800 वर्षों से अधिक समय के इतिहास में यही हुआ। अब वे बदला लेने वापस आ गये है। पौलुस ने कभी नहीं माना कि चिन्ह और चमत्कार भविष्य में कभी दोबारा जन्म लेंगे। कौन सही है, पौलुस या करिश्माई? पवित्रात्मा के दिये जाने के आरंभ से और सदैव उसका सच्चा अभिप्राय गवाही देने के लिये था यही पवित्रात्मा और उसके कार्य का संपूर्ण विचार (ध्येय) है। कहीं भी जहां पवित्रात्मा वास्तव में उपस्थित है, आप उसके नाम का उल्लेख नहीं सुनेंगे। उसका काम मेरी साक्षी देना है या सरल शब्दों में अपनी ओर नहीं परन्तु मसीह की ओर ध्यान आकर्षित करना है।

यहून्ना 16:13-14

13 परन्तु जब वह, अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो वह तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा क्योंकि वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा और आने वाली बातों को तुम पर प्रकट करेगा।

14 वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों को लेकर तुम पर प्रकट करेगा।

''वह अपनी ओर से कुछ नहीं कहेगा'' तब आप कैसे ''पवित्रात्मा की आत्मिक जागृति'' या ''आत्मा से भरा अभिषेक'' पाते हैं जबकि ये दोनों ही बातें मसीह को छोड़कर पवित्रात्मा को महिमान्वित करती है। प्रिय मित्र, मैं आपको स्मरण दिला दूं कि आप पवित्रात्मा पर और उसके चिन्ह और चमत्कारों पर तब तक विश्वास कर सकते हैं, जब तक कि निर्बुद्धि घर नहीं लौटते और सीधे नर्क में नहीं जाते। पवित्रात्मा आपके पापों के लिये नहीं मरा, मसीह मरा था। कुछ वर्ष पहले मुझे अवसर था, मैंने एक करिश्माई आराधना सभा में भाग लिया, उस समय मैंने गिनती की और पाया कि मसीह का नाम 3 बार लिया गया और पवित्रात्मा का 127 बार। इस सभा में किस पर जोर दिया गया यह जानने या गणना करने के लिये आपको 'रॉकेट वैज्ञानिक' की आवश्यकता नहीं है। आप किसी भी बात पर गौर करे जिसमें करिश्माई धर्मशिक्षा है। आप 'कबूतर' का चिन्ह देखते हैं या क्रूस का चिन्ह देखते हैं? ईमानदारी से विचार करें आप जो देखते हैं, वह किसका प्रमाण है। करिश्माई लोगों का संपूर्ण जोर पवित्रात्मा के व्यक्ति पर है जो पवित्रशास्त्र के आधार पर सही नहीं है, और ये बातें ईशनिंदा के अतिनिकट है।

पवित्र शास्त्र के अनुप्रयोग में करिश्माई त्रुटि

एक बार फिर हम करिश्माईयों द्वारा पवित्र शास्त्र का गलत अनुप्रयोग उनके द्वारा नीचे दी गई पदों के त्रुटिपूर्ण भावार्थ निकालने में देख सकते हैं।

मरकुस 16:15-18

15 उसने उनसे कहा, "तुम सम्पूर्ण जगत में जाओ और सारी सृष्टि में सुसमाचार-प्रचार करो।

16 जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले, वह उद्धार पाएगा, परन्तु जो विश्वास न करे वह दोषी ठहराया जाएगा

17 और विश्वास करने वालों में ये चिह्न दिखाई देंगेः मेरे नाम से वे दुष्टात्माओं को निकालेंगे, तथा नई-नई भाषाएं बोलेंगे

18 वे सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राणघातक विष भी पी जाएं तो इससे उनकी हानि न होगी वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे।"

पद 17 को सदैव संदर्भ से बाहर रखकर अन्यान्य भाषाओं और चंगाई को सही ठहराने का एक निर्बल प्रयास किया जाता है। यह दो सुसमाचारों और उनके अनुप्रयोग न हो सकने वाले परिणामों का मिश्रण करने का सही उदाहरण है।

पद 16 इन पदों को स्पष्ट रूप में खतने के सुसमाचार से जोडता है। क्यों? उद्धार के लिये बपतिस्में की आवश्यकता बताई गई है।

लुका 3:3

3 वह यरदन के आस-पास के सारे प्रदेशों में जाकर पापों की क्षमा के लिए मनफिराव के बपतिस्मा का प्रचार करने लगा।

'यहूदी पहले' सुसमाचार में पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना भी आवश्यक था। मरकुस 16:16 में स्पष्ट रूप से यही बात लिखी है। इस बारे में कोई प्रश्न (संदेह) नहीं है। इस कारण, मरकुस 16:17 में, 'विश्वास करने वालों में ये चिन्ह दिखाई देंगे' का अभिप्राय केवल यहूदियों से है (दुष्टात्मायें निकालना, अन्यान्य भाषायें या नई-नई भाषायें बोलना इत्यादि)। यह बात आसानी से समझी जा सकती है क्योंकि तब तक अन्यजातियों का कलीसिया में प्रवेश नहीं हुआ था। प्रेरितों के काम अध्याय10 तक, और इतिहास के उस काल में एकीकृत, गुप्त ज्ञानयुक्त कलीसिया भी अस्तित्व में नहीं थी। बिना खतने का सुसमाचार भविष्य में था, जिसे पौलुस और उसके प्रकाशन ने स्थापित किया। यदि पद 17 कहानी का अंत था, तो

करिश्माईयों के पास उनके धोके का समुचित उत्तर होता परंतु कृपया पद 18 पढ़ें – 'वे सांपों को उठा लेंगे।' यहां ध्यान दें वचन कहता है कि 'यदि वे कोई जहरीली वस्तु/प्राणनाशक विष भी पी जायें' 'वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जायेंगे' मुझे यह बात चकित करती है कि परमेश्वर धोकेबाजी को दूर रखने पवित्र शास्त्र में सदैव एक 'फंदा' रखते हैं। पद 18 को मैंने कभी किसी करिश्माई द्वारा उद्घृत करते या संदर्भ में लाते नहीं सुना। क्यों? क्योंकि इस में प्रेरिताई के दान वरदानों पर आपके दावों को आजमाने और सही साबित करने का सूत्र है, जैसा दावा करिश्माई लोग करते हैं। वे क्यों नहीं विषैले सांपों को उठाते और उन्हें काटने देते हैं? आखिरकार, आपको नुकसान नहीं होगा, ठीक है ना?

प्रेरितों के काम 28:3-5

3 परन्तु जब पौलुस ने लकड़ियों का गट्ठर इकट्ठा कर के आग पर रखा तो आंच पाकर एक सांप निकला और उसके हाथ से लटक गया।

4 जब आदिवासियों ने इस जन्तु को उसके हाथ से लटके हुए देखा तो एक दूसरे से कहने लगे, "निश्चय ही यह मनुष्य हत्यारा है, यद्यपि यह समुद्र से तो बच गया, फिर भी न्याय ने उसे जीवित रहने न दिया।"

5 तब उसने जन्तु, को आग में झटक दिया और उसे कोई हानि नहीं पहुंची।

पौलुस यह कर सका, वे क्यों नहीं कर सकते? यह आपके वरदान को साबित करने का एक आसान तरीका होगा यदि आप सार्वजनिक रूप में एक तीव्र विष पीने का प्रदर्शन करें और तब आपको कोई नुकसान नहीं होगा। पवित्र शास्त्र में दिये इन अति आसान तरीकों की अनदेखी क्यों जबकि वे आपके चिन्ह और वरदानों की पुष्टि कर सकते हैं? विश्वास से चंगाई करने वाला पृथ्वी पर कोई भी व्यक्ति वास्तव में यह विश्वास नहीं करता कि वह विष पीकर जीवित रह सकता है। यह महान विश्वास कहा है जो बड़ी–बड़ी चंगाई सभाओं में लोगों की भीड़ को चंगा कर सकता है, परंतु विष पीने से डरता है? सच्चाई यह है कि पद 18 में केवल चंगाई ही एकमात्र है जिसे झूठे रूप में बताया जा सकता है। जाते जाते एक और विचार, वास्तविक बाइबिल सम्मत चंगाई सभी को चंगा करती है, केवल उनको नहीं जिनकी बीमारियों को देखा परखा नहीं जा सकता।

प्रेरितों के काम 5:16

16 यरूशलेम के आस-पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों तथा दुष्टात्माओं से पीड़ित लोगों को लाया करते थे और वे सब बीमार चंगे हो जाते थे।

वे तो मुर्दों को भी जिन्दा नहीं करते।

प्रेरितों के काम 20:9-12

9 यूतुखुस नाम का एक युवक था जो खिड़की पर बैठा हुआ नींद के झोंके में था। जब पौलुस देर तक बोलता रहा तो उसे नींद आ गई और वह तिमंजिले से नीचे गिर पड़ा और मरा हुआ उठाया गया।

10 परन्तु पौलुस नीचे उतरा और उस पर झुक गया। फिर उसने उसे गले से लिपटा कर कहा, ''घबराओ मत, क्योंकि उसका प्राण उसी में है।"

11 फिर उसने ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर उनसे इतनी देर तक बातें करता रहा कि भोर हो गई, फिर वह चला गया।

12 वे उस युवक को जीवित ले आए और उन्हें बहुत चैन मिला।

प्रश्न यह है कि आज हम वे ही चिन्ह क्यों देखते हैं जिनकी ईमानदारी से जांच संभव नहीं है, परंतु वही देखतें है जिन्हें झूठे रूप में आसानी से दर्शाया जा सकता है, और वे चिन्ह जो निश्चित रूप में साबित करते हैं कि इन्हें अमल या प्रयास में नहीं लाया जाता। चंगाई और अन्यान्य भाषाएं आसानी से झूठी हो सकती है, परंतु विष पीना, सांपों को उठाना और मृतकों को जिलाना जैसी बातें विचारणीय विषयों की सूची में नहीं होते हैं। क्यों? क्योंकि इनमें विश्वास के वास्तविक प्रदर्शन की आवश्यकता है। चिन्हां के द्वारा 'केवल यहूदियों' के लिये जो बातें इतिहास में बीत चुकी है, और वे एकीकृत गुप्त ज्ञान युक्त कलीसिया के लिये कभी नहीं थी, प्रदर्शित की जाती है। बेहतर होगा कि सभी चिन्हों का प्रदर्शन करें अन्यथा किसी भी चिन्ह का प्रदर्शन न करे।

स्वर्गदूतों की भाषाओं को लेकर करिश्माई त्रुटि

1 कुरिन्थियों 13:1

1 यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाएं बोलूं पर प्रेम न रखूं तो मैं ठनठनाती घंटी और झनझनाती झांझ हूं।

जिसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता उसे प्रमाणित करने का एक व्यर्थ प्रयास यह कहना है कि आज के समय में बोली जाने वाली अन्यान्य भाषाओं में स्वर्गदूतों की कुछ विशेष भाषायें हैं जिनको परमेश्वर ने अनुमति दी है कि मसीही जन उन भाषाओं को बोले ताकि शैतान उन्हें समझ न सके कि प्रार्थना में क्या बोला जा रहा है। शैतान स्वयं ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है। मुझे लगता है कि कोई भी स्वर्गदूत, भले ही स्वर्ग से गिरा दिया गया है, अपनी भाषा को बखूबी समझेगा। साथ ही यह भी सत्य है कि शैतान जो वास्तव में एक अधिक ऊंचे पद का स्वर्गदूत है जिसे करूब कहते हैं, साधारण स्वर्गदूतों की अपेक्षा अधिक समझेगा।

रोमियो 8:26-27

26 इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि हमें प्रार्थना किस प्रकार करना चाहिए, परन्तु आत्मा स्वयं भी ऐसी आहें भर-भर कर जो अवर्णनीय हैं, हमारे लिए विनती करता है,

27 और हृदयों को जांचने वाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है, क्योंकि वह 'पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर के इच्छानुसार विनती करता है।

इन पदों को सदैव अज्ञात भाषा बोलने से जोडा जाता है कि आज यह विश्वासियों के लिये कितना आवश्यक है। क्या पवित्रशास्त्र में इसका कोई आधार है? यदि आप इसको अंग्रेजी में पढ़ें "परंतु आत्मा स्वयं भी ऐसी आहें भर भर जो अवर्णनीय है, हमारे लिये विनती करता है।" शब्द 'अवर्णनीय' स्पष्ट करता है कि हम शब्दों में ऐसी अभिव्यक्ति नहीं कर सकते जिसे समझा जा सके क्यों? यह हमारी शारीरिक सीमाओं के बाहर एक आत्मिक प्रकटीकरण है। कृपया ध्यान दे कि इन पदों में ऐसा कुछ भी वर्णन नहीं किया गया है जिसे हम पवित्रात्मा द्वारा स्वर्गदूतों की भाषाओं में बोलना कह सके। ये आंहें जिन्हें हम 'अभिव्यक्त' नही कर पाते स्वर्गदूतों की भाषायें नहीं है। इन्हें कब दान वरदानों की सूची में रखा गया है?

प्रेरितों के काम 2:8

8. यह कैसी बात है कि हममें से प्रत्येक अपनी ही मातृभाषा में उन्हें बोलते हुये सुनता है?

बाइबल में दिया तरीका सुस्पष्ट है। उन्होंने उन्हें अपनी अपनी मातृभाषा में सुना। हमने कब और कहां उन्हें बदलकर विशेष करिश्माई भाषायें बना दिया? एक और प्रश्न है जिसका उत्तर मिलना चाहिये कि यदि यह स्वर्गदूतों की विशेष भाषा है, जैसा कहा जाता है, तो पवित्रशास्त्र में कब किसी स्वर्गदूत ने इसका प्रदर्शन किया?

मत्ती 2:13

13 जब वे चले गये तो देखो, प्रभु के दूत ने स्वप्न में यूसुफ को दिखाई देकर कहा, "उठ और बालक तथा उसकी माता को लेकर मिस्र को भाग जा, और जब तक मैं न कहूँ वहीं रहना क्योंकि हेरोदेस इस बालक को खोजने पर है कि उसे मरवा डाले।

लुका 1:34-35

34 मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, "यह कैसे हो सकता है, क्योंकि मैं तो 'कुँवारी ही हूँ?

35 स्वर्गदूत ने उससे कहा, "पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रधान का सामर्थ तुझपर आच्छादित होगा। इसी कारण वह 'पवित्र जो उत्पन्न होगा, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।

लुका 2:8-10

8 उसी प्रदेश में कुछ चरवाहे थे जो रात के समय मैदान में रहकर अपने झुण्ड की रखवाली कर रहे थे।

9 और प्रभु का एक दूत सहसा उनके सामने आ खड़ा हुआ, प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमका और वे अत्यन्त भयभीत हो गए।

प्रेरितों के काम 12:7

7 और देखो, प्रभु का एक स्वर्गदूत एका एक प्रकट हुआ और उस कोठरी में ज्योति चमकी, और उसने पतरस की पसली पर हाथ मारकर उसे जगाया और कहा 'जल्दी उठ' और उसके हाथों से जंजीरें गिर पड़ी।

मैं एक भी ऐसे स्वर्गदूत का उदाहरण पवित्र शास्त्र में नहीं पाता, जिसने किसी कारणवश मनुष्यों से बातें की और ऐसी भाषा में कहा जो वे नहीं समझते थे। मैं एक भी ऐसा उदाहरण नहीं पाता जब उन्होंने ऐसी भाषा में प्रार्थनायें की जिसे वे नहीं समझते थे। तब ये अनूठे विचार कहां से आये? अच्छा प्रश्न है!

2 तिमुथियुस 4:3-4

3 क्योंकि समय आएगा जब वे खरी शिक्षा को सहन नहीं करेंगे, परन्तु अपने कानों की खुजलाहट के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार ही अपने लिए बहुत से गुरु बटोर लेंगे।

4 वे सत्य की ओर से अपने कानों को फेर लेंगे और कल्पित-कथाओं में मन लगाएंगे।

आर्थिक प्रबंध के संबंध में करिश्माई - त्रुटि

यह अवधारणा है कि 'बीज रूप में दान करके' आप अपनी हार्दिक अभिलाषायें पा सकते हैं। क्या परमेश्वर सभी मसीहियों को आर्थिक रूप में समृद्ध बनाना चाहते हैं? इस सबंध में उपयोग की जाने वाली पदों पर नीचे विचार किया गया है।

यूहन्ना 14:13-14

13 और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही करूँगा कि पुत्र में पिता की महिमा हो।

14 यदि तुम मुझसे मेरे नाम में कुछ भी मांगोगे तो मैं उसे करूँगा।

मत्ती 18:18-19

18 मैं तुमसे कहता हूँ, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे, वह स्वर्ग में बँधेगा। और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा।

19 मैं तुमसे फिर कहता हूँ, यदि तुममें से दो जन पृथ्वी पर किसी विनती के लिए एकमत हों, तो वह मेरे स्वर्गीय पिता की ओर से उनके लिए पूरी हो जाएगी।

हम तुरंत समझ सकते हैं कि इन पदों में कहां खींचतान की गई है। निश्चय ही ये पदें उन पुस्तकों में नहीं है जो एकीकृत कलीसिया के लिये है परंतु केवल यहूदियों के सुसमाचारों की व्यवस्था में है। उस समय उपस्थित मसीहा ने यहूदियों को 'स्वर्ग के राज्य' की पहली बार घोषणा करते समय यह कहा था। क्या बाद में कलीसिया की पुस्तकें परमेश्वर और आपकी समृद्धि के उसके विचार या आशा से सहमति रखती है?

1 तिमुथियुस 6:5-10

5 और उन मनुष्यों के मध्य निरन्तर झगड़े उत्पन्न होते हैं जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है, जो सत्य से दूर हो गए है और जो भक्ति को लाभ का साधन मानते है।

6 परन्तु सन्तोष सहित भक्ति वास्तव में महान् कमाई है।

7 क्योंकि न तो हम संसार में कुछ लाए हैं, न यहां से कुछ ले जाएंगे।

8 यदि हमारे पास भोजन और वस्त्र हैं तो इन्हीं से हम संतुष्ट रहेंगे।

9 परन्तु जो धनवान होना चाहते है, वे प्रलोभन, फन्दे में, और अनेक मूर्खतापूर्ण और हानिकारक लालसाओं में पड़ जाते हैं जो मनुष्य को पतन तथा विनाश के गर्त में गिरा देती है।

10 क्योंकि धन का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है। कुछ लोगों ने इसकी लालसा
में विश्वास से भटक कर अपने आप को अनेक दुखों से छलनी बना डाला है।

समृद्धि का सुसमाचार निश्चय ही पौलुस के लिये अनजाना था। पौलुस न केवल इनके पक्ष में नहीं था परंतु उसने ऐसे किसी व्यक्ति या संस्थान के विरुद्ध हमें चेतावनी दी है जो ऐसी गलत धर्मशिक्षा पर विश्वास करते हैं या गलत रूप में अमल करते हैं। (पद 5) ''उन मनुष्यों के मध्य निरंतर झगड़े उत्पन्न होते है जिनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है।'' यहां पौलुस ऐसी धर्मशिक्षा का स्त्रोत बताते हैं। अब प्रश्न है, हम इनका क्या करें? 'सत्य से दूर जो भक्ति को लाभ साधन मानते हैं,' ऐसों से दूर रह। सरल शब्दों में पौलुस का कथन है कि जो यह शिक्षा देते हैं कि अधिक भक्ति का प्रमाण अधिक धन या समृद्धि है 'सत्य से दूर' हैं। ऐसी शिक्षाओं से स्वयं को अलग कर लें। क्यों? क्योंकि पदें 6, 7 और 8, मसीही जीवन के वास्तविक धन को प्रकट करती है 'संतोष सहित भक्ति वास्तव में महान कमाई है।' यह नहीं लिखा है कि 'बड़ी समृद्धि सहित भक्ति।' तब क्या आशा की जाये? (पद 8) यदि हमारे पास भोजन और वस्त्र है तो इन्हीं से हम संतुष्ट रहेंगे। पद 9–10 पर ध्यान दें जिसमें अधिक धन, संपत्ति के विरोध में चिताया गया है। यह संदेश करिश्माईयों और उनकी धन–लोलुपता की धर्मशिक्षाओं से सर्वथा विपरीत है। आप पायेंगे कि धन संपत्ति की बातें कलीसिया की पुस्तकों में नहीं है। यही कारण है कि पौलुस की पुस्तकों में करिश्माई धर्मविज्ञान की शैली का उल्लेख नहीं है। 'रुपयों का लोभ सब बुराईयों की जड़ है।' ऐसा ही है और सदैव रहेगा।

मैं कुछ करिश्माई व्यक्तियों को जानता हूं जिन्होंने वास्तव में मत्ती और यूहन्ना में दी गई प्रतिज्ञाओं पर दावे किये और 100 प्रतिशत वृद्धि के लिये अपनी निर्धनता के बावजूद 'बीज धन' सुसमाचार प्रचारकों को भेजा, वे अब भी संघर्ष कर रहे हैं, उनकी निर्धनता (आर्थिक रूप में) अब भी जारी है। क्यों? मेरे पास टी. बी. एन. नेटवर्क के लिये और अगली बार दान के वचन या प्रतिज्ञा पत्र के लिये एक उपाय है। 'बीज' के लिये प्रयास करने के बदले जिसके द्वारा परमेश्वर आर्थिक कटनी (उपज) को भेजेंगे, और वह क्यों भेजेंगे, यह भी तब पता चलता है जब लोग अनजाने कारणवश धनराशि भेज देते है, वे टी. बी. एन. से एक करोड़ डॉलर लेकर हमारी कलीसिया में निवेश क्यों नहीं करते। हमें यह संसाधन पाकर खुशी होगी और परमेश्वर 90 दिनों के भीतर टी. बी. एन. को दस करोड़ डॉलर की वृद्धि देगे। कितना आसान तरीका है जिसमें प्रतिज्ञा पत्रों की आवश्यकता नहीं होगी। यह 'बीज' का विचार कहां से आया।

2 कुरिन्थियों 9:6–12

6 अब मैं यह कहता हूं कि जो थोड़ा बोएगा वह थोड़ा ही काटेगा, और जो अधिक
बोएगा वह अधिक काटेगा।

7 प्रत्येक जन जैसा उसने अपने मन में निश्चित किया है वैसा ही करे, न कुढ़-कुढ़ कर और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम करता है।
8 और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है, जिससे कि तुम सदैव, सब बातों में परिपूर्ण रहो, और हर भले कार्य के लिए तुम्हारे पास भरपूरी से हो।
9 जैसा लिखा है, ''उसने चारों और बिखेरा, उसने दरिद्रों को दिया, उसकी धार्मिकता सदा बनी रहती है।"
10 अब वह जो बोने वाले को बीज और भोजन के लिए रोटी देता है, बोने के लिए तुम्हें बीज देगा और तुम्हारे बीज को बढ़ाएगा और तुम्हारी धार्मिकता की फसल की वृद्धि करेगा।
11 तुम सब प्रत्येक बात में धनी किए जाओगे कि उदार बनो जिस से हमारे द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो।
12 क्योंकि इस सेवा-कार्य के द्वारा न केवल पवित्र लोगों की घटियां पूरी होती हैं, वरन् परमेश्वर को बहुत धन्यवाद देने की भावना उमण्डती रहती है।

यह मिशनों या सुसमाचार प्रचारकों को दिया जाने वाला दान नहीं था। परंतु यरूशलेम के उन पवित्रजनों को राहत देने के लिये दिया गया दान था जो निर्धनता में थे। इसका आधार 1 कुरिन्थियों की पत्री है।

1 कुरिन्थियों 16:3

3 और जब मैं आऊंगा तो जिन्हें तुम चाहोगे उन्हें पत्र देकर भेज दूंगा कि तुम्हारा दान यरूशलेम पहुँचा दे।

पौलुस यरूशलेम के निर्धन पवित्रजनों को राहत पहुंचाने के एक अभियान में काम कर रहा था, जिन्होंने स्वर्ग के राज्य (प्रेरितों के काम अध्याय 2) की द्वितीय घोषणा में अपना पूरा धन और संपत्ति खर्च कर दी थी।

प्रेरितों के काम 2:44-45

44 सब विश्वासी मिल-जुलकर रहते थे और उनकी सब वस्तुएं साझे की थी।
45 वे अपनी सम्पत्ति और सामान बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी सब को बांट दिया करते थे।

प्रेरितों के काम 4:32-35

32 विश्वासियों का समुदाय एक मन और एक प्राण था। उनमें से कोई भी अपनी सम्पत्ति को अपनी नहीं कहता था, परन्तु उनका सब कुछ साझे का था।

33 और प्रेरित बड़े सामर्थ के साथ प्रभु यीशु के पुनर्थान की साक्षी देते थे, और उन
सब पर बड़ा अनुग्रह था।
34 उनमें से कोई भी गरीब नहीं था। वे सब लोग जो भूमि या घरों के स्वामी थे अपनी
भूमि या घरों को बेच-बेचकर उनका मूल्य लाते,
35 तथा उन्हें प्रेरितों के चरणों में रख देते थे। तब जैसी जिनकी आवशकता होती थी,
उसके अनुसार उन्हें बांट देते थे।

जब स्वर्ग का राज्य प्रेरितों के काम अध्याय 7 में स्तिफनुस के पथराव और मृत्यु के समय अस्वीकार कर दिया गया, इन विश्वासियों के पास कुछ नहीं बचा था। 2 कुरिन्थियो में ध्यान दे कि यह दान किसे मिलना था।

2 कुरिन्थियों 9:1

1 यह आवश्यक नहीं कि पवित्र लोगों के लिए की जाने वाली दान की सेवा के विषय
में मैं तुम्हें लिखूं।

2 कुरिन्थियों 9 में पूरी पद की सम्पूर्ण विषय वस्तु में समृद्धि का उल्लेख तक नहीं है। आप केवल एक शब्द पर्याप्त पाते हैं। उदारता और दबाव, इन दोनों शब्दों में बड़ा अंतर है। (पद 5) यह दान दबाव के कारण नहीं परंतु उदारता से दिया (और लिया) जाना चाहिये।

2 कुरिन्थियों 8:12-15

12 क्योंकि यदि मन की तैयारी हो तो मनुष्य के पास जो कुछ है उसके अनुसार दान
ग्रहणयोग्य होता है, न कि उसके अनुसार जो उसके पास नहीं है।
13 क्योंकि यह दूसरों के सुख और तुम्हारे कष्ट के लिए नहीं, परन्तु समानता के विचार
से है -
14 तुम्हारी बहुतायत इस समय उनके अभाव की पूर्ति करे कि उनकी बहुतायत भी तुम्हारे
अभाव के समय पूर्ति बन जाए जिससे कि समानता उत्पन्न हो।
15 जैसा लिखा है, "जिसने अधिक बटोरा उसका बहुत अधिक न हुआ, और जिसने कम
बटोरा उसे कुछ घटी न हुई।"

आप इस बीज (दान) का अभिप्राय स्पष्ट देख सकते हैं। यह दूसरों के सुख (समृद्धि) और तुम्हारे अभाव के लिये नहीं है। (पद 15) यह समस्त कलीसिया की पर्याप्तता के लिये है। इन पदों में कही भी यह संकेत नहीं है कि यह बीज रूपी दान 'धन' था। संभव है यह अतिरिक्त भोजन, अतिरिक्त कपड़े इत्यादि कुछ हो, जो यरूशलेम के पवित्रजनों के काम आ सके। सघन सताव के उन दिनों में कलीसिया को सताने वाले धन (रूपया-पैसा) तुरंत उनसे छीन सकते थे।

गलातियों 6:10

10 इसलिए जहां तक अवसर मिले सब के साथ भलाई करें, विशेषकर विश्वासी भाइयों के साथ।

यदि करिश्माई व्यक्ति सही है और बाइबिल के उसके अनुप्रयोग वैध है, तो सभी प्रेरित क्योंकर निर्धनता में थे, और विश्वास के अंतिम कार्य के रूप में जो भी उनके पास बचा था, अतिशय निर्धनता के बावजूद उन्होंने सब क्यों दे दिया? यूहन्ना को छोड़कर सबने अपने प्राण दिये। रूस और चीन में जो मसीही है उन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है। वे धनी लोग हैं। ''यदि आप परमेश्वर से कुछ चाहते है, मुझे कुछ धन राशि भेजिये'' इसका अर्थ है, परमेश्वर मेरे द्वारा काम करते और आशीष देते हैं। बिना मेरे आपके पास आशीष आने का कोई मार्ग नहीं है। मुझे व्यक्तिगत स्तर पर सहायता देने की परमेश्वर की योग्यता के बारे में विचारणीय कथन है।

फिलिप्पियो 4:19

19. मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुम्हारी प्रत्येक आवश्यकता पूरी करेगा।

स्पष्ट है कि यह प्रतिज्ञा टी. बी. एन. के माध्यम से है।

विश्वासियों की सहभागिता के संबंध में करिश्माई त्रुटि

करिश्माई आंदोलन बड़ी आसानी से सहभागिता के लिये सभी पंथों या संप्रदायों से मिलना स्वीकार करता है यदि वे मसीह पर विश्वास करते हैं, फिर आप चाहे जो भी विश्वास करें। निश्चय विश्वासियों की इस संभावित सूची में कैथोलिक, यहोवा के साक्षी, मॉरमन, चर्च ऑफ क्राइस्ट, और ऐसे अन्य सभी गुट हैं जो मसीह में विश्वास करते हैं। चिन्ह और चमत्कारों को छोड़कर सब धर्मशिक्षा स्वीकार्य है। प्रश्न यह है, क्या यह परमेश्वर की इच्छा है कि सभी जो मसीह में विश्वास करते हैं एक ही सभा में संगठित हों? मेरा ऐसा मानना नहीं है। यदि पौलुस को जो अन्यजातियों का प्रेरित था, कलीसिया की स्थापना के लिये और प्रकट की गई धर्मशिक्षाओं की स्थापना के लिये 'मसीह पर विश्वास' करना ही विशेष धर्मशिक्षा है तब क्या यह धर्मशिक्षा महत्वपूर्ण नहीं है? परंतु ऐसा नहीं है।

1 तिमुथियुस 4:16

16 अपने ऊपर और अपनी शिक्षा पर विशेष ध्यान दे और इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि ऐसा करने से तू अपने और अपने सुनने वालों के भी उद्धार का कारण होगा।

1 तिमुथियुस 6:1

1 जितने लोग जूए के नीचे अर्थात् दास हैं, वे अपने स्वामियों को पूर्ण सम्मान के योग्य समझें, जिस से परमेश्वर के नाम तथा हमारी शिक्षा की निन्दा न की जाए।

तीतुस 2:1

1 पर तू ऐसी बातें कहा कर जो खरी शिक्षा के अनुसार है।

1 तिमुथियुस 1:3-4

3 जैसा मैंने मैसीडोनिया जाते समय तुझ से इफिसुस में रहने का आग्रह किया था अब भी वहीं रह, जिस से तू वहाँ कुछ लोगों को आदेश दे सके कि वे अन्य प्रकार की शिक्षा न दें,

4 न उन दन्तकथाओं और असीमित वंशावलियों पर ध्यान दें, जो केवल निरर्थक विवाद को ही बढ़ाते हैं और परमेश्वरकी उस योजना को पूर्ण नहीं करते जो विश्वास पर आधारित है।

रोमियो 16:17-18

17 अब हे भाइयों मैं तुमसे विनती करता हूँ कि जो शिक्षा तुमने पाई है, उस शिक्षा के विपरीत जो लोग उसमें फूट और 'रुकावट डालते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो।

18 क्योंकि ये मनुष्य हमारे प्रभु यीशु मसीह के नहीं, परन्तु अपने पेट के दास हैंय और अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से सीधे-सादे लोगों को बहका देते है।

यहां रोमियो की पत्री में हमसे कहा गया है "जो लोग फूट और रुकावट डालते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो।" और एक बार उनकी पहचान करने के बाद 'उनसे दूर रहो।' यहां ऐसा नहीं लगता कि पौलुस किसी भी धर्मशिक्षा वालों के साथ जिनमें त्रुटियां हों, संगति करने का विचार रखता था, भले ही वे मसीह पर विश्वास रखने का दावा करते हो।

लुका 12:51-53

51 क्या तुम सोचते हो कि मैं पृथ्वी पर मेल कराने आया हूँ? मैं तुमसे कहता हूँ, नहीं, वरन् फूट डालने आया हूँ।

52 क्योंकि अब से जिस घर में पांच सदस्य हों उनमें परस्पर विरोध होगा तीन, दो के विरुद्ध और दो, तीन के।

53 वे एक दूसरे के विरुद्ध होंगे, पिता, पुत्र के और पुत्र, पिता के, माँ, बेटी के और बेटी माँ के, सास बहू के और बहू, सास के विरुद्ध होगी।"

मसीह इस संसार में एकता लाने नहीं परंतु विभाजन लाने आया था। इसी प्रकार कलीसिया में पौलुस की मनसा झूठी धर्मशिक्षा पर चलने वालों के साथ एकता रखने की नहीं थी। कारण अति स्पष्ट है। कोई भी मसीह पर विश्वास रखने का दावा कर सकता है परंतु यह आपकी प्रकट धर्मशिक्षा है जो आपके दावे को साबित करती है। यदि बाइबिल एक स्पष्ट धर्मशिक्षा का आधार देती है तब हम पवित्र शास्त्र द्वारा बाध्य है कि उन परिवर्तनों को करें। विश्वास कहे जा सकते हैं, पर धर्मशिक्षा पर जीवन में अमल करना पड़ता है। ऐसा प्रतीत होता है कि मुख्य धारा के मसीहियों में, मसीहपर विश्वास करने वाली कलीसियाओं में किसी अन्य की अपेक्षा केवल कैथोलिक कलीसिया पर अधिक जोर दिया जाता है, कारण सरल है, लाखों कैथोलिकों को सहभागिता में शामिल करने पर हमारी पहुंच उन लाखों डॉलरों तक होती है – जिसके वे प्रतिनिधि हैं। आइये, हम पवित्र शास्त्र के प्रकाश में इस सर्वाधिक सकारात्मक संभावना का परीक्षण करें।

1 तीमुथियुस 4:2-3

2 ऐसा उन झूठे लोगों के पाखण्ड के कारण होगा जिनका विवेक मानो जलते लोहे से दागा गया हो,

3 जो विवाह न करने और भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की शिक्षा देंगे, जिन्हें परमेश्वर ने इसलिए बनाया है कि विश्वासी और सत्य को पहिचानने वाले धन्यवाद के साथ खाए।

मेरे अनुसार इन पदों का संबंध केवल कैथोलिक धर्म के तंत्र से हो सकता है। "झूठे लोगों के पाखण्ड के कारण" – अर्थात वह कहना जो सब सुनना चाहते हैं पर करना वहीं जो अपनी परम्परा है। (पद 3) "विवाह न करने" अर्थात अविवाहीत रहने की धर्मशिक्षा जो बाइबल सम्मत नहीं है। "भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की शिक्षा।" अभी कुछ वर्षों पहले तक कैथोलिक शुक्रवार के दिन मांस खाने से मना करते थे। कैथोलिक तंत्र ने सदैव मसीह पर विश्वास करने का दावा किया है परंतु मैं आपको सावधान करना चाहता हूं कि सुधारवाद के पूर्वकाल में लाखों मसीहियों की हत्या करते समय भी वे जी उठे मसीह पर विश्वास का दावा करते थे, जबकि वे धर्मशिक्षा से जुड़े कारणोंवश परमेश्वर के लोगों की हत्या करने में सक्रिय थे। स्पष्ट रूप में वे मसीह के हिंसक शत्रु थे परंतु साथ ही एकमात्र सच्ची मसीही कलीसिया भी कहलाना चाहते थे। क्या उनका यह दावा बदल गया है? नहीं, वे अब भी विश्वास करते हैं कि पोप पृथ्वी पर मसीह के स्थान (पद) पर है, और कैथोलिक कलीसिया की सदस्यता और उनके संस्कारों में शामिल हुये बिना उद्धार की प्राप्ति संभव नहीं है। अब पौलुस ऐसे अविश्वास करने वाले तंत्र के साथ सहभागिता रखने के बारे में क्या शिक्षा देते हैं? एक और निश्चित विचार बिंदु यह है कि हम कैथोलिक तंत्र को प्रकाशितवाक्य 17 में पूरी तरह क्रियाशील पाते हैं। यह वह समय है जब प्रकाशितवाक्य 4 में वास्तविक कलीसिया स्वर्ग पर उठाई जा चुकी है, और यह कालखण्ड उसके बहुत बाद का है। यह प्रकाशितवाक्य 17 में क्यों है?

2 कुरिन्थियों 6:14-18

14 अविश्वासियों के साथ असमान जुए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता का अधर्म से क्या मेल? या ज्योति की अन्धकार से क्या संगति?

15 और मसीह का बलियाल से क्या लगाव? या विश्वासी का अविश्वासी से क्या सम्बन्ध?

16 या मूर्तियों से परमेश्वर के मन्दिर का क्या समझौता? क्योंकि हम तो जीवित परमेश्वर के मन्दिर हैं, जैसा कि परमेश्वर ने कहा, "मैं उन में निवास करूंगा और उनमें चला-फिरा करूंगा और मैं उनका परमेश्वर होऊंगा और वे मेरे लोग होंगे।"

17 इसलिए प्रभु कहता है, "उनमें से निकलो और अलग हो जाओ, और जो कुछ अशुद्ध है उसे न छुओ तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा
18 और मैं तुम्हारा पिता होऊंगा और तुम मेरे बेटे और बेटियां होगे।" सर्वशक्तिमान प्रभु यह कहता है।

(वचन 15) 'बलियाल' का यह तंत्र क्या है जिससे हमे दुर रहना है और 'उन मे से निकलना' है?

प्रकाशितवाक्य 17:4-9

4 वह स्त्री बैंजनी और किरमिजी रंग के वस्त्र पहिने तथा सोने, बहुमूल्य रत्नों और मोतियों से सुसज्जित थी, और वह अपने हाथ में एक सोने का कटोरा लिए थी जो उसके व्यभिचार की अशुद्ध और घृणित वस्तुओं से भरा था।
5 उसके माथे पर एक नाम अर्थात् एक भेद लिखा था, "महान् बाबुलः वेश्याओं और पृथ्वी की घृणित वस्तुओं की जननी।"
6 मैंने उस स्त्री को पवित्र लोगों के लहू और यीशु के साक्षियों के लहू से मतवाली देखा। उसे देखकर मैं अत्यन्त चकित हुआ।
7 तब उस स्वर्गदूत ने मुझ से कहा, "तू क्यों चकित होता है? मैं तुझे उस स्त्री और उस पशु का, जिस पर वह सवार है, जिसके सात सिर और दस सींग हैं, रहस्य बताऊंगा।
8 जिस पशु को तू ने देखा, वह था तो, परन्तु अब नहीं है। वह अथाह कुंड से अपने विनाश के लिए निकलने वाला है। पर पृथ्वी के निवासी जिनके नाम जगत की उत्पत्ति से जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गए, उस पशु को जो था और अब नहीं है पर आनेवाला है, देखकर अचंभा करेंगे।
9 बुद्धि की बात तो यह है कि वे सातों सिर सात पर्वत हैं जिन पर वह स्त्री बैठी है।

(पद 4) "वह स्त्री बैंजनी और किरमिजी रंग के वस्त्र पहने थी।" प्रमुख रंग कैथोलिक चर्च के हैं। "सोने, बहुमूल्य रत्नों और मोतियों से सुसज्जित थी" – वेटिकन समस्त विश्व में सबसे अधिक धनवान संगठन के रूप में जाना जाता है। (पद 5) उसका नाम 'भेद भरा बेबीलोन' बलियाल की धर्मशिक्षा है जिससे हमें बाहर निकलना है। (पद 6) "मैंने उस स्त्री को पवित्र लोगों के लहू और यीशु के साक्षियों के लहू से मतवाली देखा" – पृथ्वी पर कैथोलिक कलीसिया से अधिक किसी और संगठन ने मसीहियों का संहार नहीं किया है, शाब्दिक अर्थ में वह पवित्रजनों के लोहू से मतवाली है। अंतिम निष्कर्ष के लिये पद 9 पढ़ें "बुद्धि की बात तो यह है कि वे सातों सिर सात पर्वत है जिन पर वह स्त्री बैठी है।"

पृथ्वी पर एक ही नगर है जिसे ''सात पर्वतों की नगरी'' कहा जाता है, और वह नगर रोम है जो इटली में है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्रकाशितवाक्य 17 में वर्णित तंत्र कैथोलिक कलीसिया है। तब क्या परमेश्वर हमसे आशा करते हैं कि हम ऐसे तंत्र के साथ एकता के सूत्र में बंधे जिसका इतिहास इस संगठन से जुड़ा है? नहीं, पवित्र शास्त्र के अनुसार आप किसी भी प्रकार से ऐसा नहीं कर सकते। एक विश्वासी वह व्यक्ति है जो परमेश्वर के वचन के सत्य पर विश्वास करता है, केवल मसीह पर ही नहीं।

2 कुरिन्थियों 6:17

17 इसलिए प्रभु कहता है, "उनमें से निकलो और अलग हो जाओ, और जो कुछ अशुद्ध
है उसे न छुओ तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा।

उन मे से निकलो, न कि उनमे शामिल हों।

चंगाई के बारे में करिश्माई त्रुटि

चंगाई के विषय पर करिश्माई लोग दो पहलुओं पर अधिक जोर देते हैं। एक, परमेश्वर सबको चंगा करना चाहते हैं, और दूसरा, यदि आप बीमार है तो यह आपकी गलती है, सामान्य रूप से यह आपकी ओर से विश्वास की कमी के कारण है। प्रश्नः क्या यह परमेश्वर की इच्छा है कि सब को चंगाई मिले?

2 कुरिन्थियों 12:7-10

7 प्रकाशनों की अधिकता के कारण मैं घमण्ड न करूं, इसलिए मेरी देह में एक कांटा चुभाया गया है, अर्थात् शैतान का एक दूत, कि वह मुझे दुःख दे और घमण्ड करने से रोके रहे।

8 मैंने इसके विषय में प्रभु से तीन बार प्रार्थना की कि यह मुझ से दूर हो जाए।

9 और उसने मुझ से कहा, "मेरा अनुग्रह तेरे लिए पर्याप्त है, क्योंकि मेरा सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होता है।" अतः मैं सहर्ष अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा। जिससे कि मसीह का सामर्थ् मुझमें निवास करे।

10 इस कारण मैं मसीह के लिए निर्बलताओं, अपमानों, दुःखों, सतावों और कठिनाइयों में प्रसन्न हूं, क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं तभी सामर्थी होता हूं।

एक बार फिर हम प्रेरित पौलुस को आधुनिक करिश्माइयों के विपरीत में पाते हैं। पौलुस जिसे विशेष प्रकाशन के द्वारा एकीकृत अन्यजातीय कलीसिया के लिये अलग किया गया था वह अपने आपके लिये चंगाई नहीं पा सका। (पद 8) "मैंने इसके विषय में प्रभु से तीन बार प्रार्थना की कि यह मुझ से दूर हो जाए।" पौलुस ने न केवल चंगाई के लिये प्रार्थना की परंतु तीन बार अलग–अलग समय पर प्रार्थना की थी, पर प्रार्थनायें सुनी नहीं गई। (पद 9) "मेरा अनुग्रह तेरे लिये पर्याप्त है, क्योंकि मेरा सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होता है।" ध्यान दे, प्रभु ने यह नहीं कहा कि "तेरे विश्वास की कमी के कारण।" सरल शब्दों में कोई भी बीमारी विश्वास करने वाले के लिये लाभ देती है। बाइबल के किसी भी पात्र (व्यक्ति) में पौलुस से बढ़कर (अधिक) विश्वास नहीं था। तब पौलुस क्यों चंगा नहीं हुआ? यदि आप रोमियों अध्याय 1 से लेकर प्रकाशित वाक्य 22 तक पवित्र शास्त्र के प्रकाशनों पर ध्यान दे कुल 22 पुस्तकें हैं उनमें से स्वयं पौलुस ने 14 पत्रियां लिखी हैं। आप पौलुस, पतरस, यूहन्ना या यहूदा में एक भी ऐसा आश्चर्यकर्म नहीं पाते हैं, जैसे सुसमाचारों और प्रेरितों के काम में पाते हैं। अब यदि चंगाई और अन्यान्य भाषा आज की कलीसिया के लिये है, जो पौलुस के प्रकाशनों के आधार पर स्थापित की गयी है, तो क्या हुआ? पौलुस ने प्रेरितों के काम में बीमारों को चंगा

किया, मृतकों को जिलाया, परंतु रोमियों की पत्री से पवित्रशास्त्रीय अभिलेख नहीं है जिसमें पौलुस ने कभी चंगाई की, अन्यान्य भाषायें बोली, मृतकों को जिलाया, या चिन्ह के किसी दान वरदान का उपयोग किया। तब 1 कुरिन्थियों 14:8 के कथन से क्या समझे "मैं तुम सब से बढ़कर अन्य अन्य भाषा को बोलता हूं"? पौलुस ने यही किया था। वह पांच ज्ञात भाषायें बोलता था अन्यान्य भाषायें तब उसकी विदेशी भाषायें थी और यह बाइबल की सभी अज्ञात भाषाओं के लिये सत्य है।

प्रेरितों के काम 19:11-12

11 और पौलुस के हाथों से परमेश्वर अद्‌भुत सामर्थ के काम दिखाता था,

12 यहां तक कि उसकी देह से स्पर्श किए हुए रूमाल और अंगोछे रोगियों पर डाल दिए जाते थे और उनकी बीमारियां दूर हो जाती थीं, और दुष्टात्माएं उनमें से निकल जाया करती थी।

प्रेरितों के काम 20:9-10

9 यूतुखुस नाम का एक युवक था जो खिड़की पर बैठा हुआ नींद के झोंके में था। जब पौलुस देर तक बोलता रहा तो उसे नींद आ गई और वह तिमंजिले से नीचे गिर पड़ा और मरा हुआ उठाया गया।

10 परन्तु पौलुस नीचे उतरा और उस पर झुक गया। फिर उसने उसे गले से लिपटा कर कहा, "घबराओ मत, क्योंकि उसका प्राण उसी में है।"

प्रेरितों के काम 28:4-5

4 जब आदिवासियों ने इस जन्तु को उसके हाथ से लटके हुए देखा तो एक दूसरे से कहने लगे, "निश्चय ही यह मनुष्य हत्यारा है, यद्यपि यह समुद्र से तो बच गया, फिर भी न्याय ने उसे जीवित रहने न दिया।"

5 तब उसने जन्तु, को आग में झटक दिया और उसे कोई हानि नहीं पहुंची।

प्रेरितों के काम 28:8-9

8 फिर ऐसा हुआ कि पुबलियुस का पिता ज्वर और आंव से पीड़ित पड़ा हुआ था। पौलुस उसे देखने भीतर गया और उसने प्रार्थना कर के अपने हाथ उस पर रखे और उसे चंगा कर दिया।

9 इस घटना के पश्चात् द्वीप के शेज रोगी भी आकर चंगे होने लगे और उन्होंने हमारा विभिन्न प्रकार से आदर-सत्कार किया। जब हम उस स्थान से जाने को थे तो उन्होंने हमारी आवश्यकता की सारी वस्तुएं जहाज पर लाद दी।

प्रेरितों के काम के अंतिम भाग में पौलुस बहुत से आश्यर्चकर्म कर सका और उसने किये। तब रोमियों की पत्री के बाद से वह इतना सामर्थहीन कैसे बन गया? हम 1 तीमुथियुस में पौलुस को तीमुथियुस के पेट की बीमारी के बारे में चर्चा करते हुआ पाते हैं, वह पौलुस का सबसे अधिक प्रिय मित्र था।

1 तीमुथियुस 5:23

23. अब से केवल जल ही न पी, परंतु पेट और बारम्बार होने वाले रोग के कारण थोड़े दाखरस का भी उपयोग कर।

पौलुस के लिये कितना आसान था कि तीमुथियुस वहां आता और चंगाई का आश्चयकर्म पाता और पेट की बार–बार होने वाली गड़बड़ियों से छुटकारा पा लेता। सत्य यह है कि यदि वह पा सकता, वह आश्चर्यकर्म पा लेता। कृपया समझे मैं विश्वास करता हूं कि परमेश्वर आज भी किसी को आश्चर्यकर्म की चंगाई दे सकता है। परन्तु मैं यह काम विश्वास द्वारा चंगाई देने वालों के द्वारा संपन्न होता हुआ नहीं देखता। कृपया इस बात को समझे, मैं विश्वास करता हूं कि परमेश्वर आज भी किसी को भी चमत्कार के द्वारा चंगा कर सकता है। परन्तु मै उसे यह चंगाई विश्वास से चंगाई करने वाले किसी व्यक्ति–विशेष के द्वारा करते हुए नहीं पाता हुं। मै चंगाई पर विश्वास करता हुं। मैं यह नहीं मानता कि एकीकृत कलीसिया को विश्वास द्वारा चंगाई देने वालों का अनुप्रयोग करने के निर्देश दिये गये हैं, जैसे की विश्वास से चंगाई, हां मैं मानता हूं, पर विश्वास से चंगा करने वालों के द्वारा नहीं। तब हम कैसे तय कर सकते हैं कि आज की जाने वाली चंगाई वैध है? वास्तव में यह अत्याधिक आसान है, पवित्र शास्त्र के आधार पर जांच करे। आप कहीं भी चंगाई का ऐसा उदाहरण नहीं पा सकते, जहां चंगाई पाने वाले ने विश्वास की कमी के कारण अपनी चंगाई खो दी हो। यह वास्तव में ऐसी त्रुटि है जो स्वाभाविक तौर पर आज के झूठे चंगा करने वालों में प्रकट होती है। मैंने करिश्माई चंगाई सभाओं में कभी नहीं देखा कि किसी ऐसे व्यक्ति ने चंगाई पाई जिसकी चंगाई पाने की आवश्यकता दिखाई देती थी। यह सदैव ऐसी बात होती है जो दिखाई नहीं देती – जैसे कि, पीठ का दर्द, हृदय रोग, या नशे की लत, जिनके पहले, गर्माहट का अनुभव होता है। मित्रों, सुसमाचारों में जांच करें, और मसीह और प्रेरितों की चंगाई सेवकाइयों पर ध्यान दें। उनमें से एक में भी चंगाई से पहले किसी प्रकार की भावनायें (गर्माहट इत्यादी) नहीं थी। आज वे जिन्होंने चंगाई प्राप्त की है वे एक गर्माहट का अनुभव करने के बाद वे बताते हैं कि वे अगली सुबह उठने पर वही बीमारी अनुभव करते हैं। तब दोष किसे दिया जाये? उसे जिसे चंगाई मिली है! क्यों? क्योंकि उसमें विश्वास की कमी थी! विश्वास से चंगाई देने वाला जिम्मेवारी से मुक्त है। इस धोकाधड़ी का दुःखद पहलू यह है कि यह उनको नष्ट करती है जो वास्तव

में विश्वास कर लेते हैं कि झूठी चंगाई वास्तव में वैध थी, और वे समझते हैं कि विश्वास की कमी के कारण वे अपना आश्चर्यकर्म नही पा सके। इस प्रकार की बेवकूफी अपराध से कम नहीं है। यदि आपको लगता है कि मैं आधारहीन बातें करता हूं तो कृपया टी. बी. एन. देखें और स्वयं जांच कर लें।

इस झूठी धर्मशिक्षा के कारण वास्तव में एक बहुत दुःखद घटना दो वर्ष पहले घटी। मेरे दो मित्र थे, बहुत ही प्यारे और बहुत पसंद आने वाले दो लड़के, दोनों एक बहुत अच्छे परिवार से थे। अचानक बिना चेतावनी उन्हें एक बुरा समाचार मिला कि उनकी मां को एक जानलेवा कैंसर था। ये जवान एक करिश्माई कलीसिया के सदस्य थे जिसमे दान वरदानों का उपयोग (अमल) किया जाता था। जैसे–जैसे समय बीता, कलीसिया ने इस प्रिय मां की चंगाई के लिये प्रयास किये। सुसमाचार प्रचारक द्वारा हाथों को रखने और प्रार्थना करने के बाद यह मान लिया गया कि मां महिमामय रूप में चंगी हो चुकी थी। प्रमाण था गर्माहट का अनुभव। लड़कों से कहा गया चंगाई में बने रहने के लिये बस विश्वास रखे। मैं जब इन लड़कों से पूछ गया कि आपकी मां कैसी है? उत्तर सदैव सकारात्मक मिलता – "वे पूर्ण रूप में चंगी हो चुकी है!" तीन महीने बाद मुझे उस बेशकीमती मां की मृत्यु का समाचार मिला। उसके बाद क्या हुआ, कम से कम शब्दों में कहे तो दुःखद था। लड़के इतनी दोष भावना से भर गये कि आपको विश्वास नहीं होगा। क्योंकि उनका विश्वास इतना बलवन्त नहीं था, वे मानने लगे कि उनकी मां की मृत्यु के लिये वे भी कुछ अंशों में जिम्मेवार हैं। मित्रों, मैं नहीं जानता कि कोई व्यक्ति उन लड़कों के साथ इससे बढ़कर भी क्रूरता कर सकता था। मैं प्रतीती दे सकता हूं कि परमेश्वर जो हमारी और हमारे बारे में इतनी परवाह करते हैं, उनके बारे में उन लड़कों की धारणा में बहुत बड़ा बदलाव आया। वे लोग जो बिना आशा के लोगों से प्रतिज्ञा करते हैं और उन बातों की प्रतिज्ञा करते हैं जो पवित्र शास्त्र नहीं कहता, मेरे अनुसार असहाय लोगों के विरुद्ध सबसे निम्न स्तर की धोकाधड़ी करने के दोषी लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

मत्ती 7:18-23

18 अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं दे सकता और न ही निकम्मा पेड़ अच्छा फल दे
सकता है।
19 प्रत्येक पेड़ जो अच्छा फल नहीं देता, काटा और आग में झोंक दिया जाता है।
20 अतः तुम उनके फलों से उन्हें पहचान लोगे।
21 प्रत्येक जो मुझ से, 'हे प्रभु! हे प्रभु!', कहता है, स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा,
परन्तु जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है वही प्रवेश करेगा।

22 उस दिन बहुत लोग मुझ से कहेंगे, 'हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हमने तेरे नाम से
भविष्यवाणी नहीं की और तेरे नाम से दुष्ट आत्माओं को नहीं निकाला और तेरे नाम
से बहुत-से आश्चर्यकर्म नहीं किए?'
23 तब मैं उनसे स्पष्ट कहूँगा, 'मैंने तुम को कभी नहीं जाना हे कुकर्मियों, मुझ से दूर
हटो।'

अभिषेक प्राप्त करने में करिश्माई त्रुटि

यह एकीकृत कलीसिया में पवित्रात्मा दिये जाने और उसके निवास करने के महत्व को न समझने का एक प्रमुख उदाहरण है। करिश्माईयों ने गलत धारणा बना ली है कि पुराने नियम और सुसमाचारों में प्रदर्शित 'पवित्रात्मा के अभिषेक' का आज भी पीछा करने की आवश्यकता है। क्या यह वास्तव में सही है? एक सरल शब्दकोष में दी गई परिभाषा आपके इस प्रश्न का पूर्ण रूप में सही उत्तर देगी कि यदि उसे उचित रूप में लागू करें। अभिषेक को वेबस्टर शब्दकोष यह परिभाषा देता है – "तेल उण्डेलना, जैसा धार्मिक अनुष्ठानों में होता है।" यह गलत विचार कि जैसा सुसमाचारों और प्रेरितों के काम में वर्णन है, सामर्थ के लिये आज भी पवित्रात्मा को लोगों पर उण्डेले जाने की आवश्यकता है कलीसिया की वैध धर्मशिक्षा नहीं है। वास्तविकता यह है कि एकीकृत कलीसिया के युग में सभी उद्धार पाये हुये व्यक्तियों को 'अभिषेक' प्राप्त है। तब कलीसिया के युग में अभिषेक क्या है?

2 कुरिन्थियों 1:21-22

21 अब जो तुम्हारे साथ हमें मसीह में दृढ़ करता है और जिसने हमारा अभिषेक किया वह परमेश्वर है,

22 जिसने हम पर मुहर भी लगाई और पवित्र आत्मा को बयाने में हमारे हृदयों में दिया।

यहां हम स्पष्ट देख सकते हैं कि अभिषेक विश्वासियों में भीतर निवास करने वाली पवित्रात्मा द्वारा उन्हें मोहर करने में संपन्न होता है। यह तथ्य 1 यूहन्ना में स्पष्ट तौर पर प्रदर्शित किया गया है।

1 यूहन्ना 2:27

27 पर जहां तक तुम्हारा सम्बन्ध है, वह अभिषेक जो तुमने उस से प्राप्त किया है, तुम में बना रहता है, और तुम्हें इस बात की आवश्यकता नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए परन्तु जिस प्रकार उसका वह अभिषेक तुम्हें सब बातों के विषय में सिखाता है, और सत्य है और झूठ नहीं, और जैसा की तुम्हे उसने सिखाया है, तुम उसमें बने रहो।

आज कलीसिया के लिए अभिषेक पवित्रात्मा का दिया जाना है जो सभी विश्वासियों के भीतर निवास करता है। कृपया ध्यान दें "वह अभिषेक तुम्हें सब बातों के विषय में सिखाता है।" अब हमें इस अभिषेक की प्रतिज्ञा कहां मिलती है जो हमें सिखाता है?

यूहन्ना 14:26

26 परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम में भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और सब कुछ जो मैंने तुमसे कहा, तुम्हें स्मरण कराएगा।

स्पष्ट रूप में स्वयं यीशु के कथन में इस भविष्य की कलीसिया के अभिषेक की प्रकृति परिभाषित की गई है। निश्चित तौर पर यह अभिषेक वह नहीं है जिसका वर्णन पुराने नियम और सुसमाचारों की पुस्तकों में है। क्यों? सीधी सी बात है क्योंकि उन दिनों में किसी में भी पवित्रात्मा का स्थाई निवास नहीं था।

यूहन्ना 14:17

17. अर्थात सत्य का आत्मा जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता क्योंकि वह उसे न देखता है और न जानता हे, परंतु तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और तुम में होगा।

इस प्रतिज्ञा पर ध्यान दें, 'वह तुम्हारे साथ रहता है।' यह संकेत है कि स्वर्ग के राज्य के चिन्ह और चमत्कार उसकी उपस्थिति से चालित है, पर "तुम में होगा" निश्चय ही भविष्य की बात है। परमेश्वर के आत्मा का भीतर निवास तब तक नहीं हुआ था जब तक कि प्रेरितों के काम, अध्याय 10 में, अन्यजातियां प्रवेश नहीं कर गई। भीतर निवास करने वाला आत्मा हमें कलीसिया के मिशन–कार्य को पूरी तरह हासिल करने की अनुमति देता है, उसके कारण हमारे द्वारा 'आत्मा के फल' को प्रदर्शित करने पर संसार मसीह को देख सकता है। और यह पवित्र आत्मा के वरदानों के प्रदर्शन के कारण नहीं होगा। फल एक वृक्ष का उत्पाद है जो वह अपनी जीन संरचना के कारण उत्पन्न करने बाध्य है।

इफिसियों 2:10

10 हम उसके हाथों की कारीगरी है, जो मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गये हैं जिन्हें परमेश्वर ने प्रारंभ से ही तैयार किया कि हम उन्हें करें।

हम मसीह में सृजे गये हैं कि उन भले कामों को करें जिनमें निश्चित तौर पर 'आत्मा का फल' शामिल है क्योंकि हम वास्तव में वही हैं और अन्य कुछ नहीं है। अंतर केवल इतना है कि आत्मा के दान–वरदान बाहरी है, और आत्मा का फल आंतरिक प्रकटीकरण है और यह चिन्हों में नहीं पर जीवनों में प्रदर्शित होता है। प्रत्येक मसीही आज आत्मा के फलों को दर्शा सकता है परंतु हर एक मसीही में पवित्र आत्मा के वरदान नहीं है और न ही कहीं उन्हें खोजने के लिये कहा गया है।

1 कुरिन्थियों 2:9-16

9 पर जैसा लिखा है, "जिन बातों को आंख ने नहीं देखा और न कान ने सुना, और
जो मनुष्य के हृदय में नहीं समाई, उन्हीं को परमेश्वर ने अपने प्रेम करने वालों के
लिए तैयार किया है।"
10 परन्तु परमेश्वर ने उन्हें आत्मा द्वारा हम पर प्रकट किया, क्योंकि आत्मा सब बातों,
यहां तक परमेश्वर की गूढ़ बातों को खोजता है।
11 मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य के विचारों को जानता है, केवल उस मनुष्य की
आत्मा के जो उसमें है? इसी प्रकार परमेश्वर के आत्मा को छोड़ परमेश्वर के विचार
कोई नहीं जानता।
12 हमने संसार की आत्मा नहीं परन्तु वह आत्मा पायी है जो परमेश्वर की ओर से है
जिससे कि हम उन बातों को जान सकें जिन्हें परमेश्वर ने हमें सेंतमेंत दिया है।
13 उन्हीं को हम मनुष्यों के ज्ञान के सिखाए हुए शब्दों में नहीं, परन्तु आत्मा के द्वारा
सिखाए हुए शब्दों में, अर्थात् आत्मिक विचारों को आत्मिक शब्दों से मिलाकर व्यक्त
करते है।
14 परन्तु शरीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातों को ग्रहण नहीं करता, क्योंकि
वे उसके लिए मूर्खतापूर्ण हैं और वह उन्हें समझ नहीं सकता क्योंकि उनकी परख
आत्मिक रीति से होती है।
15 आत्मिक जन सब कुछ परखता है, परन्तु वह स्वयं किसी मनुष्य के द्वारा परखा नहीं
जाता।
16 क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है कि उसे सिखाए? परन्तु हम में मसीह का
मन है।

यहां हम पाते हैं कि विश्वासियों के अभिषेक को पूर्ण रूप में दर्शाया गया है। इस कारण आज जो मसीहीजन है, उनमें प्रेरितों के काम 2 से कही उच्चतर अभिषेक है। क्यों? यदि आप प्रेरितों के काम पुस्तक पढ़ें तो आप पाएंगे कि उपरौठी कोठरी में मिला अभिषेक स्थायी नहीं था।

प्रेरितों के काम 4:31

31 जब वे प्रार्थना कर चुके तो वह स्थान जहाँ वे एकत्रित थे हिल गया, और वे सब
पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन निर्भीकता से सुनाने लगे।

पवित्र आत्मा को विश्वासियों के इस दल को फिर से भरना पड़ा ताकि उन्हें साक्षी देने की सामर्थ मिले। यह एक ऐसा विचार बिंदु है, जो मैं समझता हूं कि करिश्माई आंदोलन के भीतर श्रेणियों में अधिक दुःख और अवसाद लाता है। जब आप वरदान पाते हैं, आत्मा में उत्साह अवर्णनीय होता है, आनंद की सीमा नहीं होती पर जब उसे खो देते हैं, अवसाद और दोष

भाव आता है कि मैंने क्या किया है जो इसे खो दिया है, वह अत्याधिक और हृदय पर छा जाने वाला होता है। कुछ लोग जो खो चुके हैं, झूठे रूप में दिखाते हैं और यह आत्मसम्मान और आत्म मूल्यांकन की समस्यायें खड़ी करता है। और यह सब अनावश्यक है। कलीसिया का वास्तविक अभिषेक स्थायी होता है।

इफिसियों 4:30

30 परमेश्वर के पवित्र आत्मा को - शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है।

''छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है।'' वास्तव में हम में एक वास्तविक और बना रहने वाला अभिषेक दिया गया है कि हम क्लेश में आनंदित (महिमामय) रहे।

2 कुरिन्थियों 12:9-10

9 और उसने मुझ से कहा, "मेरा अनुग्रह तेरे लिए पर्याप्त है, क्योंकि मेरा सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होता है।" अतः मैं सहर्ज अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा। जिससे कि मसीह का सामर्थ मुझमें निवास करे।

10 इस कारण मैं मसीह के लिए निर्बलताओं, अपमानों, दुःखों, सतावों और कठिनाइयों में प्रसन्न हूं, क्योंकि जब मैं निर्बल होता हूं तभी सामर्थी होता हू।

यह सत्य हमे हर परिस्थिती मे आनन्द करने का अवसर देता है

फिलिप्पियों 4:11-12

11 मैं अपने किसी अभाव के कारण यह नहीं कहता, क्योंकि मैंने प्रत्येक परिस्थिति में सन्तुष्ट रहना सीख लिया है।

12 मैं दीन-हीन दशा तथा सम्पन्नता में भी रहना जानता हूं, हर बात और प्रत्येक परिस्थिति में मैंने तृप्त होना, भूखा रहना, और घटना-बढ़ना सीख लिया है।

भीतर निवास करने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा दिया गया अभिषेक हमें एक स्थिर और त्रुटि न करने वाला मसीही जीवन बनाकर रखने की सामर्थ देता है, परंतु उसमें भावुकता और संवेदनशीलता (शारीरिक स्तर पर) नहीं होती, दोनों ही मसीहत के अति निर्बल सूचक हैं। निष्कर्ष के लिये यदि आप कलीसियाई पत्रियों की विषयवस्तु की जांच करें आप शब्द 'अभिषेक' को अनुपस्थित पाएंगे। शब्द 'अभिषेक' कलीसिया की पुस्तकों में नही मिलता, यहां तक कि 1 कुरिन्थियो की पत्री में भी नहीं, जहां से करिश्माई अपनी अधिकतर धर्मशिक्षा बनाते हैं। शब्द 'अभिषेक' बस एक बार 2 कुरिन्थियो 1:21 में आया है। शब्द 'अभिषेक' कलीसिया की पुस्तकों में नहीं है और शब्द 'अभिषेक' केवल एक बार गैर कलीसिया की पुस्तक (1 यूहन्ना 2:2)

में आया है, और वहां उसका अभिप्राय मोहर करने से है। जब आप 'अभिषेक', 'अभिषेक किया' और 'अभिषेक करता है' जैसे शब्दों पर उत्पत्ति से लेकर कलीसिया की पुस्तकों तक विचार करेंगे, इनका उल्लेख 155 बार आया है परंतु आपको यह सोचना अजीब लगेगा कि जब पौलुस जो अन्यजातियों के लिये प्रेरित था, एकीकृत चर्च के लिये लिखता है, वह अभिषेक खोजने के संपूर्ण विचार पर चर्चा तक नहीं करता, जैसा करिश्माई भीड़ में (द्वारा) प्रचार किया जाता है। यदि अभिषेक खोजने और उण्डेले जाने में कोई वैधानिकता है जैसा करिश्माई प्रचारकों द्वारा प्रचार किया जाता है, तो पौलुस को इस प्रकाशन में सहभागी होना चाहिये था, पर वह नहीं है।

आज मसीह की सदेह उपस्थिति को लेकर करिश्माईयों की त्रुटि

मुझे बड़ा कष्ट होता है जब करिश्माई आंदोलन के बहुत से लोग बताते हैं कि उन्होंने वर्तमान में यीशु को सदेह देखा है। ओरल रॉबर्ट्स ने अपने बिस्तर के पैताने यीशु को लगभग 20 फुट ऊंचा देखा। बेनी हिन भी मसीह की झलक देखने का दावा कर चुके हैं। लोगों ने उनकी किसी किसी सभा में यीशु को बेनीहिन के पीछे की ओर चलते–फिरते देखा है, जब बेनी हिन प्रचार कर रहे थे, और यीशु उनकी बातें सुनकर स्वीकृति में मुस्कुरा रहे थे। कम से कम एक अवसर पर कोई व्यक्ति पुस्तक लिखता और वर्णन करता है कि यीशु के मार्गदर्शन में वह स्वर्ग में घूमफिर रहा था। क्या ऐसी घटनाओं के घटने की संभावना है?

1 तीमुथियुस 6:14-16

14 कि हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रकट होने तक इस आज्ञा का निष्कलंक व निर्दोष रूप से पालन कर,

15 जिसे वह उचित समय पर प्रकट करेगा-वह जो परमधन्य है और एकमात्र सम्राट, राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु,

16 जो अमरता का एकमात्र अधिकारी है और अगम्य ज्योति में निवास करता है, जिसे किसी मनुष्य ने न तो देखा है और न देख सकता है। उसी का सम्मान और प्रभुत्व अनन्तकाल तक होता रहे। आमीन।

पद 16 इस तथ्य की स्पष्ट पहचान कराता है कि आज महिमामय मसीह, सुसमाचारों में वर्णित साधारण रूपरंग और व्यक्तित्व का साधारण दिखने वाला उद्धारकर्ता नहीं है। ध्यान दें, लिखा है, "अगम्य ज्योति में निवास करता है, जिसे किसी मनुष्य ने न तो देखा है और न देख सकता है।" अब वह कैसा दिखता है?

प्रकाशितवाक्य 1:13-17

13 और उन दीपदानों के मध्य मनुष्य के पुत्र सदृश एक पुरूष को देखा जो पैरों तक चोगा पहिने और छाती पर एक सुनहरा पट्टा बांधे हुए था।

14 उसका सिर तथा उसके बाल ऊन सदृश श्वेत और हिम के समान उज्ज्वल थे, और उसकी आंखे आग की ज्वाला के सदृश थी।

15 उसके पैर ऐसे चमकदार पीतल के समान थे जो भट्ठी में तपाकर चमकाया गया हो। उसकी वाणी महाजलनाद जैसी थी।

16 वह दाहिने हाथ में सात तारे लिए था, और उसके मुख से दोधारी तेज तलवार
निकलती थी उसका मुख-मण्डल मध्यान के सूर्य के सदृश दमक रहा था।
17 जब मैंने उसे देखा तो मृतक के समान उसके पैरों पर गिर पड़ा। तब उसने अपना
दाहिना हाथ मुझ पर रखा और कहा, "भयभीत न हो मैं ही प्रथम, अन्तिम और
जीवित हूं।

पद 16 पर ध्यान दें, ''उसका मुख मण्डल मध्याह्न के सूर्य के सदृश दमक रहा था।'' मैं आश्वती दे सकता हूं कि इस मसीह को ओरल रॉबर्टस ने अपने बिस्तर के पैंताने खड़े नहीं देखा। करिश्माईयों को यह समझने की आवश्यकता है कि साधारण लगने वाला उद्धारकर्ता अब न्याय करने वाला सामर्थी परमेश्वर है। (पद 17) ''जब मैंने उसे देखा तो मृतक के समान उसके पैरों पर गिर पड़ा।'' आज भी यदि कोई उसे देखेगा तो ठीक यही होगा।

मत्ती 17:2-6

2 उनके सामने उसका रूपान्तर हुआ। और उसका मुख सूर्य के समान चमक उठा,
और उसके वस्त्र प्रकाश के समान भवेत हो गए।
3 और देखो, मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए।
4 पतरस ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, हमारे लिए यहां रहना अच्छा है। यदि तेरी इच्छा हो
तो मैं यहां तीन मण्डप बनाऊं-एक तेरे लिए, एक मूसा के लिए और एक एलिय्याह
के लिए।"
5 वह बोल ही रहा था कि देखो, एक उज्ज्वल बादल ने उन्हें छा लिया। और देखो,
बादल में से यह वाणी हुई: "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।
इसकी सुनो!"
6 जब चेलों ने यह सुना तो वे मुंह के बल गिरे और अत्यन्त डर गए।

मरकुस 9:2

2 यीशु छः दिन के बाद पतरस और याकूब और यूहन्ना को अपने साथ लेकर एक
ऊंचे पर्वत पर एकान्त में आया और उनके सामने उसका रूपान्तर हुआ।

सुसमाचारों मे उसके रूपांतरण के विवरण मे हम देख सकते हैं कि यीशु की महीमा बेनी हिन की सभाओं मे उपस्थित यीशु की महीमा से पुरी तरह भिन्न है।

प्रेरितों के काम 7:55

55 परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर एकटक देखा तथा परमेश्वर
की महिमा की और यीशु को, परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा देखा।

यह पद स्पष्ट करती है कि मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ स्वर्ग में है। उसने पवित्र आत्मा को 'सहायक' के रूप में इस कलीसिया के युग में भेजा है। वह स्वयं तब तक नहीं दिखाई देगा जब तक वह प्रकाशितवाक्य के महाक्लेश के बाद अपने साम्राज्य को स्थापित करने वापस नहीं आयेगा।

यूहन्ना 16:7-10

7 परन्तु मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिए लाभदायक है, क्योंकि यदि मैं न जाऊँ तो वह सहायक तुम्हारे पास नहीं आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊँ तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा।

8 और जब वह आएगा तो संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विजय में निरुत्तर करेगा।

9 पाप के विजय में, इसलिए कि वे मुझपर विश्वास नहीं करते,

10 और धार्मिकता के विजय, में इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूँ, और तुम मुझे फिर नहीं देखोगे।

(पद 10) 'तुम मुझे फिर नहीं देखोगे' यह कितना सुस्पष्ट है। यदि यीशु वास्तव में लौट आये हैं और स्वयं को दिखा रहे हैं, जैसा करिश्माईयों का अनुभव है, तो फिर कलीसिया स्वर्ग पर उठाई जा चुकी है और हम सबने उस अनुभव को खो दिया है। यह एक और उदाहरण है जहां लगता है कि पवित्रशास्त्र में लिखी बातों को महत्व नहीं दिया जा रहा है। और हम हमारे मन के अनुसार करते हैं।

पहली और अंतिम वर्षा के संबंध में करिश्माई त्रुटि

यहां हम एक बार फिर पाते हैं कि पवित्र शास्त्र में से ही कुछ खोजकर हम जो विश्वास करते हैं उसे सत्य साबित करने के लिये उपयोग करने का प्रयास किया जाये। जबकि होना यह चाहिये कि पवित्र शास्त्र में वर्णित सत्य को हम अपने विश्वास पर अमल करने का मानक माने। स्पष्ट रूप में योएल यह भविष्यद्वाणी अन्यजातीय एकीकृत कलीसिया के लिये नहीं परंतु इस्राएल देश के लिये कर रहा था।

योएल 2:23

23 हे सिय्योन के लोगो, आनन्द मनाओ। अपने परमेश्वर यहोवा में मग्न हो, क्योंकि तुम्हें स्वीकार करने के प्रमाण स्वरूप उसने पहली बरसात दी है, पूर्वकाल के समान उसने वर्षा अर्थात् पहली और पिछली बरसात भेजी है।

स्पष्ट तौर पर यह भविष्यद्वाणी यहूदियों के लिये है, 'हे सिय्योन के लोगों', यह संबोधन किसी भी प्रकार से एकीकृत कलीसिया के लिये नहीं हो सकता। ध्यान दें, इसमें दो वर्षाओं का वर्णन है।

योएल 2:27-32

27 इस प्रकार तुम जान लोगे कि मैं इस्राएल के मध्य हूं और मैं ही तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं, और कोई नही। मेरी प्रजा कभी लज्जित न होगी।

28 और इसके बाद मैं सब लोगों पर अपना आत्मा उंडेलूंगा। तुम्हारे पुत्र और पुत्रियां नबूवत करेंगी। तुम्हारे वृद्ध जन स्वप्न देखेंगे और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे।

29 मैं अपने दासों और दासियों पर भी उन दिनों में अपना आत्मा उंडेलूंगा।

30 मैं आकाश में और पृथ्वी पर अद्‌भुत कार्य करूंगा अर्थात् लहू और अग्नि तथा धुएं के खम्भे दिखाऊंगा।

31 यहोवा के महान् और भयानक दिन के आने से पहले सूर्य अन्धकार में और चन्द्रमा लहू में बदल जाएगा।

32 और ऐसा होगा कि जो कोई यहोवा का नाम लेगा वह उद्धार पाएगा, क्योंकि सिय्योन पर्वत पर और यरूशलेम में, जैसा यहोवा ने कहा है, 'उद्धार पाने वाले होंगे, अर्थात् बचने वाले जिन्हें यहोवा ने बुलाया है।

इन वर्षाओं को समझने के लिये हमें यह समझना होगा कि यहूदियों को दिये किसी भी प्रकाशन से पहले चिन्ह मिलते थे। 'यहूदीजन चिन्ह ढूंढते हैं।' प्रथम वर्षा पूर्ण यहूदी कलीसिया को प्रतिज्ञा की कटनी (फसल) की तैयारी के लिये दी गयी थी।

प्रेरितों के काम 2:16-22

16 परन्तु यह वह बात है जो योएल नबी के द्वारा कही गयी थी।

17 परमेश्वर कहता है, 'अन्तिम दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब लोगों पर उण्डेलूँगा। तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियाँ नबूवत करेंगी। तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे और तुम्हारे वृद्ध-जन स्वप्न देखेंगे।

18 मैं अपने दासों और दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उण्डेलूँगा और वे नबूवत करेंगे।

19 मैं ऊपर आकाश में अद्‌भुत कार्य और नीचे पृथ्वी पर चिह्न, अर्थात् लहू और अग्नि तथा धुएं का बादल दिखाऊंगा।

20 प्रभु के महान और महिमामय दिन के आने से पहिले सूर्य अन्धकार में और चन्द्रमा लहू में बदल जाएगा।

21 और ऐसा होगा कि जो कोई प्रभु का नाम लेगा वह उद्धार पाएगा।'

22 हे इस्रालियो, इन बातों को सुनोः यीशु नासरी एक ऐसा मनुष्य था जिसको परमेश्वर ने सामर्थ्य के कार्य, आश्चर्यकर्मो और चिह्नों से, जो उसने उसके द्वारा तुम्हारे समक्ष किये, तुम पर प्रकट किया, जैसा कि तुम स्वयं जानते हो।

हम देख सकते हैं कि प्रथम वर्षा फसल की तैयारी के लिये थी। इतिहास के इस काल में, प्रेरितों के काम 2 में 'मुख्य फसल' जो कि एक रहस्य (गुप्तज्ञान) है, जो पौलुस पर प्रकट किया है, यह अन्यजातीय 'एकीकृत' कलीसिया है। (प्रे.काम 2:22) 'हे इस्राएलियों अर्थात केवल यहूदीजन जो चिन्हों द्वारा पहचाने जाते हैं। अब जो दूसरी (अंतिम) वर्षा है, वह उस फसल के लिये है जो क्लेश के अंत में 'बचे हुये यहूदीयों के लिए है', चिन्ह अति स्पष्ट है। योएल और प्रेरितों के काम दोनों ही अंतिम वर्षा के आरंभ के चिन्हों की प्रकृति बताते हैं। (पद 19) 'लहू और अग्नि तथा धुएं का बादल, सूर्य अंधकार में और चंद्रमा लहू में बदल जायेगा।' ये चिन्ह यहां प्रभु का दिन प्रकट होने के चिन्ह हैं। क्या ये चिन्ह प्रेरितो के काम 2 में थे, जब पवित्रात्मा दिया गया। हां, कुछ अंश में थे। पवित्रात्मा का उण्डेला जाना एक निश्चित चिन्ह था, परंतु अंतिम वर्षा के चिन्ह–लहू और सूर्य का अंधेरा और चंद्रमा का लहू हो जाना, इत्यादि, तब पूरे नहीं हुये थे। क्यों? यद्यपि मसीह राज्य की संभावना की घोषणा प्रेरितो के काम 7 तक करते हैं, पर तब तक वे वापस लौटकर नहीं आये थे जैसा कि इन चिन्हों से पहले होना अवश्य है, जो प्रभु के दिन की पहचान कराते हैं। तब प्रभु का दिन क्या है?

लुका 21:24-28

24 वे तलवार से घात किए जाएंगे और सब देशों में बन्दी बनाकर पहुँचाए जाएंगे। जब तक गैरयहूदियों का समय पूरा न हो, यरूशलेम गैरयहूदियों के पैरों के नीचे रौंदा जाएगा।

25 "सूर्य, चन्द्रमा और तारों में चिह्न दिखाई देंगे, और पृथ्वी पर जातियों के मध्य त्रस और समुद्र की गरज और लहरों के कोलाहल से उनमें घबराहट होगी,

26 भय और संसार पर घटित होने वाली बातों की प्रतीक्षा करते-करते मुनष्यों के हाथ-पैर ढीले पड़ जाएंगे क्योंकि आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी।

27 तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ के साथ बादलों पर बड़ी महिमा के साथ आते हुए देखेंगे।

28 परन्तु जब ये घटनाएं घटने लगें तो सीधे होकर अपने सिर उठाना, क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट होगा।"

आप समझ सकते हैं कि योएल 2 में दिये गये चिन्ह मसीह के यहूदियों पर दोबारा प्रकट होने (द्वितीय आगमन) से मेल खाते हैं। यह घटना कलीसिया के उठाये जाने के 7 वर्ष बाद की है। मसीह का लौटकर आना और तब शेष बचे हुये यहूदियों का उद्धार करना ही योएल की भविष्यद्वाणी में बताया गया है। प्रेरितों के काम 2 में 'स्वर्ग के राज्य' की पहली घोषणा है, उसमें प्रथम वर्षा नहीं आई, परंतु उसने गुप्तज्ञान की एकीकृत कलीसिया को पौलुस और उसके प्रकाशनों के द्वारा उत्पन्न किया। यह कलीसिया और उसकी पूर्ण फसल प्रथम वर्षा के संदर्भ में यहूदी कलीसिया ने तैयार की।

प्रकाशितवाक्य 6:12-17

12 जब उसने छठ्वीं मुहर खोली, तब मैंने देखा कि एक बड़ा भूकम्प हुआ, और बाल से बने कम्बल के समान सूर्य काला और सम्पूर्ण चन्द्रमा लहू के सदृश हो गया।

13 आकाश के तारे पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े जैसे बड़ी आंधी से हिलकर अंजीर के वृक्ष से कच्चे फल गिर पड़ते है।

14 आकाश फटकर ऐसे हट गया जैसे चर्म-पत्र लिपट जाता है, और प्रत्येक पर्वत तथा द्वीप अपने स्थान से हट गया।

15 तब पृथ्वी के राजा, प्रधान, सेनापति, धनवान, सामर्थी, और प्रत्येक दास और प्रत्येक स्वतंत्र व्यक्ति पहाड़ों की गुफाओं और चट्टानों में जा छिपे।

16 और पर्वतों तथा चट्टानों से कहने लगे, "हम पर गिर पड़ो और हमें उसकी दृष्टि से जो सिंहासन पर बैठा है, तथा मेमने के प्रकोप से छिपा लो,

17 क्योंकि उनके प्रकोप का भयानक दिन आ गया है, और कौन है जो उनका सामना कर सकता है?"

यहां स्पष्ट प्रमाण मिलता है कि प्रभु का दिन कैसा और कहां होगा। स्मरण रखें, चिन्ह मेल खाने चाहिये। अब करिश्माई मानते हैं कि अंतिम वर्षा कॅलिफोर्निया के लॉस एन्जेल्स में इस शताब्दी के आरंभ में शुरू हुई। कहा जाने लगा कि अन्य – अन्य भाषायें बोलना इसका प्रथम प्रकटीकरण था। प्रथम प्रश्न यह है कि लोहू, चंद्रमा में लोहू और सूर्य के अंधेरा होने के चिन्ह कहां थे? दूसरा प्रश्न – यदि कलीसिया का पृथ्वी पर अन्यजातीय स्वरूप है, तो एक फसल जो पहले ही तैयार हो चुकी है, उसमें 'वर्षा' की क्या आवश्यकता है? अंतिम वर्षा इस्राएल के विनष्ट देश में बचे हुये उन लोगों के लिये है जो महाक्लेश के अंत में 'प्रभु के दिन' में होगी, वे बचे लोग अंत में 'स्वर्ग के राज्य' को स्थापित करेंगे और मसीह तब उसके शारीरिक पिता अर्थात दाऊद के सिंहासन से राज्य करेगा। करिश्माई त्रुटि के कारण एक गलत तथ्य प्रतिपादित होता है कि हम जो अभी अन्यजातीय एकीकृत कलीसिया में है, वे यहूदी है और उनकी सभी प्रतिज्ञाओं पर दावा कर सकते हैं। अब परमेश्वर यहूदियों के द्वारा काम नहीं करते और अन्य जातियां यहूदी नहीं है और न कभी होंगी।

प्रकाशितवाक्य 2:9

9 मैं तेरे क्लेश और दरिद्रता को जानता हूं-पर तू धनवान है-तथा उनकी ईश-निन्दा को भी जानता हूं जो अपने को यहूदी कहते हैं पर हैं नहीं, वरन् शैतान के सभागृह है।

ऐसे 25 प्रश्न जिनके उत्तर दिए जाने चाहिये

1. बाइबिल में 'आत्मा द्वारा पीछे की ओर गिरने' का उदाहरण कहां हैं?
2. सुधारवादियों की महान् आत्मिक जागृतियां बिना 'अन्य–अन्य भाषा और चिन्हों' के क्यों थी?
3. बाइबिल से पता करें कि क्या किसी ने चंगाई पाने के बाद 'विश्वास की कमी' के कारण वह चंगाई खो दी?
4. कलीसिया की 13 पत्रियों में से एक उदाहरण बताइये जिस से पौलुस ने 'आश्चर्यकर्म' या 'अन्य–अन्य भाषा' का प्रदर्शन किया था?
5. पौलुस स्वयं अपने लिये चंगाई क्यों नहीं पा सका (2 कुरिन्थियो में)?
6. प्रेरितो के काम 10:45–46 के अपवाद को छोड़कर जहां यहूदीजन उपस्थित थे, एक उदाहरण बताये जब पवित्रात्मा के दान वरदान केवल अन्यजातीयों में उपस्थित थे?
7. करिश्माई लोग अपने मिशन के छात्रों को विदेश भाषा क्यों सिखाते हैं? यदि उन्हें अन्य भाषा का वरदान मिला है, तो यह अनावश्यक है।
8. पवित्र शास्त्र के संपूर्ण प्रकाशन में, सभी 66 पुस्तके यहूदियों के द्वारा लिखी गई, परमेश्वर ने कब किसी अन्यजाति व्यक्ति को नये प्रकाशन दिये?
9. यदि अन्य–अन्य भाषा एक नया प्रकाशन है, कौन उनके संदेश को अन्य कलीसियाओं के पढ़ने और उन्नति करने के लिये लिख रहा है?
10. क्या पवित्रशास्त्र में किसी स्त्री द्वारा अन्य–अन्य भाषा में बोलने का उदाहरण दिया गया है?
11. क्या एक भी ऐसा उदाहरण मिलता है जिसमें 'मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाएं' परमेश्वर को छोड़ अन्य सभी के लिये अज्ञात थी?
12. क्या एक भी ऐसा उदाहरण है जब किसी स्त्री को पासबान के रूप में अधिकार (पद) दिया गया?
13. परमेश्वर आत्मिक प्रकाशनों को प्रदर्शित करने के लिये कुरिन्थ की कलीसिया का क्यों उपयोग करेंगे, जबकि वास्तविकता यह है कि वह सभी कलीसियाओं में सबसे अधिक भ्रष्ट कलीसिया थी?
14. परमेश्वर ने कब 'गर्माहट के अनुभव' के साथ चंगाई दिये जाने की पुष्टि की है।
15. यदि पुराने नियम में योएल की पुस्तक की प्रतिज्ञायें आज के लिये हैं, तो इस्राएल को यह जानकारी क्यों नहीं है? इस्राएल में अंतिम वर्षा नहीं है जिसकी प्रतिज्ञा उनसे की गई थी।

16. चंगाईयां केवल कलीसियाई सभाओं में ही क्यों होती है जहां दान एकत्रित किया जाता है? घर–घर जाकर या अस्पताल जाकर क्यों नहीं जहां वास्तव में आवश्यकता है? यीशु ने किया, आप क्यों नहीं करते?
17. यीशु ने हमारे लिये उदाहरण के रूप में अन्य–अन्य भाषायें क्यों नहीं बोली?
18. क्या ऐसा एक भी उदाहरण है जब किसी से अन्य–अन्य भाषा बोलने के लिए कहा गया था?
19. क्या ऐसा एक भी उदाहरण है जब किसी को अन्य–अन्य भाषा बोलने का वरदान पाने से पहले 'जीभ के खुलने' में सहायता की आवश्यकता थी?
20. ऐसा क्यों होता है जब कोई मुख्यधारा की कलीसिया करिश्माई मत स्वीकार करती है, उनके नाम बदलकर गैर धर्मशिक्षा के नाम रख दिये जाते हैं, जैसे कि आराधना केंद्र, पॉटर्स हाऊस, कारपेंटर हाऊस इत्यादि? केवल एक ही अपवाद कैथोलिक कलीसिया है जो सदैव एक सी रहती है।
21. सम्मानीय बाइबल के संस्करण, किंग जेम्स संस्कारण से हटकर त्रुटिपूर्ण, कांट छांट युक्त, नये संस्करणों (नाम चाहे जो भी हो) के उपयोग पर (निर्भरता) क्यों?
22. पत्रियों में कहां किसी मसीही के धनवान होने या बनने को उदाहरण के रूप में बताया गया है?
23. पत्रियों में ऐसा एक उदाहरण कहां हैं जिसमें बीज निवेश के कारण 100 प्रतिशत आशीषें मिली हैं?
24. ऐसा एक भी उदाहरण कहां है जहां पौलुस ने संकेत किया है कि केवल मसीह में सरल विश्वास पर्याप्त है और हम ऐसा विश्वास करने वाले किंतु त्रुटिपूर्ण धर्मशिक्षा रखने या मानने वालों के साथ शामिल हो सकते हैं?
25. यीशु के स्वार्गरोहण के बाद क्या ऐसा एक भी उदाहरण है कि यीशु को किसी ने देखा? केवल पौलुस एक अपवाद है (1 कुरिन्थियो 15:8)। करिश्माई नियमित रूप में प्रदर्शित करते हैं कि विभिन्न समयों पर यीशु को देखा गया है। कुछेक यीशु के दिशा निर्देशन में स्वर्ग की सैर भी कर आये हैं।

इन प्रश्नों को पूछने में संकोच न करें, परंतु अनुभव दर्शाता है कि उत्तर आसानी से नहीं मिलते, धीमी गति से आते हैं। समापन के समय एक विचार प्रस्तुत है, जब आपको उत्तर मिले ध्यान दीजिये कि वे किसी के अभिमत द्वारा नहीं परंतु पवित्रशास्त्र के आधार पर प्रमाणित हो। शुभकामनायें।

निष्कर्ष

करिश्माई आंदोलन क्या है? क्या यह वहीं आवश्यक मार्ग है जिससे परमेश्वर मसीही इतिहास की सबसे महानतम आत्मिक घटनाओं को ला रहे हैं या फिर यह प्रकट रूप में धोकाधड़ी है जिसका लक्ष्य भविष्य की कलीसिया में कार्य करना और वह सब हासिल करना है जो ख्रीस्ट्र विरोधी और उसके एक विश्व शासन तंत्र का अंग है, जिसे झूठे नबियों के द्वारा प्राप्त किया जाना है? इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिये आपको एक प्रश्न पूछना चाहिये! क्या परमेश्वर कभी अपने प्रकाशित वचन के विपरीत जायेगा, या जा सकता है? उत्तर है नहीं। मैंने अनेक अवसरों पर करिश्माईयों का सामना किया है जहां पवित्र शास्त्र में प्रकट सत्य तोड़े मरोड़े और संदर्भ से बाहर उपयोग किये गये हैं ताकि किसी ऐसे विचार बिंदु को सही ठहराये, जो पवित्र शास्त्र का स्पष्ट उल्लंघन है। सदैव यही तर्क दिया जाता है। "परमेश्वर तो परमेश्वर है, वे जो चाहे, वह कर सकते हैं।" यद्यपि यह तर्क उनके आधार की पुष्टि करता दिखाई पडता है परंतु यह पूर्णतः सत्यविहीन है। क्या आप परमेश्वर के लिखित वचन पर विश्वास कर सकते हैं जो भावना के हर दौर में बदल सकता है? क्या परमेश्वर अपने वचन को बदलते हैं कि करिश्माई इस सप्ताह जो भी करे उसमें सही बैठे? नहीं!

भजन. 119:89-90

89 हे यहोवा, तेरा वचन आकाश में सदा तक स्थिर रहता है।

90 तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती हैय तूने पृथ्वी को स्थापित किया, और वह स्थिर है।

परमेश्वर नहीं बदलता, बाइबिल का प्रकाशन पूर्ण हो चुका है। अब किसी नये प्रकाशन के लिये जगह नहीं है जो पहले से प्रकट सत्य में कुछ भी बदलाव करे। यदि पवित्रशास्त्र का प्रकाशन आंदोलन की गतिविधियों के साथ बदलता है तो समस्या क्या है?

2 कुरिन्थियों 2:17

17 हम तो उन अनेक लोगों के समान नहीं हैं, जो परमेश्वर के वचन में हेरा-फेरी करते हैं, परन्तु हम मन की सच्चाई से परमेश्वर की ओर से और परमेश्वर की उपस्थिति जानकर मसीह में बोलते है।

2 कुरिन्थियों 4:2

2 परन्तु हमने लज्जा के गुप्त कार्यों को त्याग दिया है और धूर्तता से नहीं चलते, न परमेश्वर के वचन में मिलावट करते है। परन्तु सत्य को प्रकट करने के द्वारा हम, परमेश्वर के सम्मुख प्रत्येक मनुष्य के विवेक मे अपने आप को भला ठहराते हैं।

इब्रानियों 5:12-14

12 तुम्हें अब तक तो शिक्षक हो जाना चाहिए था, फिर भी यह आवश्यक हो गया है कि कोई तुम्हें फिर से परमेश्वर के वचन की प्रारम्भिक शिक्षा दे। तुम्हें तो ठोस भोजन की नहीं पर दूध की आवश्यकता है।

13 प्रत्येक जो दूध ही पीता है, वह धार्मिकता के वचन का अभ्यस्त नहीं, क्योंकि वह बालक है।

14 परन्तु ठोस भोजन तो बड़ों के लिए है, जिनकी ज्ञानेन्द्रियां अभ्यास के कारण भले-बुरे की पहिचान करने में निपुण हो गई है।

इफिसियों 4:14

14 अतः हम आगे को बालक न रहें जो मनुष्यों की ठग-विघा, धूर्तता, भ्रम की युक्ति और सिद्धान्त-रूपी हवा के हर एक झोंके से उछाले और इधर-उधर घुमाए जाते हों,

तीतुस 1:11-14

11 इनका मुंह अवशय ही बन्द किया जाना चाहिए, क्योंकि ये नीच कमाई के लिए अनुचित बातें सिखा कर घर के घर बिगाड़ रहे है।

12 उन में से एक ने अर्थात् उन्हीं के एक 'नबी ने कहा है, "क्रीतवासी सदैव झूठे, हिंसक पशु, और आलसी पेटू होते है।"

13 यह गवाही सत्य है। इस कारण उन्हें कड़ाई से ताड़ना दिया कर कि वे विश्वास में पक्के हो जाएं,

14 और यहूदियों की कल्पित-कथाओं तथा उन लोगों के आदेशों पर ध्यान न दें जो सत्य से भटक जाते है।

समस्या एक सामान्य समस्या है। नियुक्त प्रचारक के अपने ईश्वरप्रदत्त पदों का उपयोग करके वे पौलुस को मिले प्रकाशनों में तोड़ मरोड़ और बदलाव कर रहे हैं, और उसमें यहूदी सुसमाचार, व्यवस्था, और नये–नये आविष्कृत चिन्ह, जैसे बीज निवेश की धर्मशिक्षा का ऐसा प्राणघातक घालमेल कर रहे हैं, जो मसीही उन्नति और परिपक्वता में वृद्धि नहीं करता परंतु उसे पूरी तरह समाप्त करता है। इस पहुंच का कारण स्पष्ट है। यदि लोगों को समुचित रूप में विश्लेषित और उचित अनुप्रयोग के पवित्रशास्त्र का ज्ञान नहीं होगा, वे मसीह में सदैव शिशु बने रहेंगे। उद्धार तो पायेंगे पर परिपक्वता नहीं पायेंगे। इस प्रकार की धर्मशिक्षा का परिणाम

यह होगा, यदि मसीह और कलीसिया के लिये भावुकता आधार बनेगी, तो कोई भी उसमें प्रवेश की अहर्ता रखेगा। यही इस संपूर्ण तंत्र की जमा पूंजी है। स्पष्ट रूप में यह ख्रीष्ट विरोधी के धार्मिक तंत्र की अग्रधावक है इसमें धर्मशिक्षा पर बनी कोई संरचना नहीं है। इसमें केवल मसीह को एक ऐतिहासिक व्यक्ति मानकर विश्वास करना है और चिन्हों और दान वरदानों को मानना है। जिस प्रकार, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने मसीह और उसके आगमन के लिये मार्ग बनाया, उसी प्रकार, करिश्माई ख्रीष्ट विरोधी के लिए मार्ग बना रहे है। यह कथन कठोर है परंतु सिद्ध किया जा सकता है।

2 थेस्सलुनीकियों 2:2-12

2 कि तुम किसी आत्मा, वचन या ऐसे पत्र के द्वारा जो मानो हमारी ओर से यह
प्रकट करता हो कि प्रभु का दिन आ गया है, अपने मन में विचलित न होना, और
न घबराना।
3 कोई तुम्हें किसी भी तरह धोखा न देने पाए, क्योंकि वह दिन उस समय तक न
आएगा जब तक कि पहिले धर्म का परित्याग न हो और 'पाप-पुरूष अर्थात् विनाश
का पुत्र प्रकट न हो जाए,
4 जो तथाकथित ईश्वर या पूज्य कहलाने वाली प्रत्येक वस्तु का विरोध करता और
अपने आप को उन सब से ऊँचा ठहराता है, यहाँ तक कि वह परमेश्वर के मन्दिर
में बैठकर स्वयं को ईश्वर प्रदर्शित करता है।
5 क्या तुम्हें स्मरण नहीं कि जब मैं तुम्हारे साथ था, तब ये बातें तुम्हें बताया करता था?
6 तुम तो जानते हो कि अपने ही समय में प्रकट होने के लिए अभी उसे क्या रोके
हुए है।
7 क्योंकि अधर्म का रहस्य अभी भी कार्यशील है, और जब तक रोकने वाला हटा न
दिया जाए तब तक वह उसे रोके रहेगा।
8 तब वह अधर्मी प्रकट किया जाएगा जिसे प्रभु अपने मुंह की फूंक से मार डालेगा
और अपने 'आगमन के तेज से भस्म कर देगा।
9, 10 उस अधर्मी का आना नाश होने वालों के लिए, शैतान की गतिविधि के अनुसार
सम्पूर्ण सामर्थ, चिह्नों, झूठे आश्चर्य-कर्मों और दुष्टता के हर धोखे के साथ होगा,
क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया कि उनका उध्दार हो।
11 इसी कारण परमेश्वर उन पर भरमाने वाले सामर्थ् को भेजेगा कि वे झूठ की प्रतीति
करें,
12 जिससे कि वे सब जिन्होंने सत्य की प्रतीति नहीं की परन्तु दुष्टता में मग्न रहे, दण्ड पाएं।

सदा की भांति, पौलुस ने यहां इस विषय पर निश्चित जानकारी प्रदान की है। पौलुस इन पदों में ख्रीष्ट विरोधी के प्रकट होने के समय संसार की जो स्थिति होगी, उसे दर्शाया रहा है। (पद 3) ''वह दिन उस समय तक न आयेगा जब तक कि पहले धर्म का परित्याग न हो।'' यह धर्म का परित्याग क्या है?

2 तिमुथियुस 4:2-4

2 कि वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, बड़े धैर्य से शिक्षा देते हुए ताड़ना दे, डांट और समझा।

3 क्योंकि समय आएगा जब वे खरी शिक्षा को सहन नहीं करेंगे, परन्तु अपने कानों की खुजलाहट के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार ही अपने लिए बहुत से गुरु बटोर लेंगे।

4 वे सत्य की ओर से अपने कानों को फेर लेंगे और कल्पित-कथाओं में मन लगाएंगे।

धर्म का परित्याग स्पष्ट रूप में प्रकट धर्मशिक्षा का त्याग करना है। (पद 3) ''क्योंकि समय आयेगा, जब वे खरी शिक्षा को सहन नहीं करेंगे।'' हम करिश्माई आंदोलन में इसी स्थान पर है। वाक्यांश 'अपनी अभिलाषाओं के अनुसार' का स्पष्ट अर्थ भावुकता या भावना के अनुसार है। धर्मशिक्षा की ओर लोगों की भावना नहीं है। (पद 4) 'वे सत्य की ओर से अपने कानों को फेर लेंगे।' यह सत्य निःसंदेह पौलुस के सुसमाचार और उसकी मांगो की अनदेखी करना है। ध्यान दें, 'वे सहन नहीं करेंगे' यह नहीं लिखा है कि वे सुनेंगे नहीं। (पद 9) परमेश्वर होने के उसके दावे की सत्यता प्रमाणित करने का तरीका क्या है 'चिन्ह और झूठे चमत्कार।' कृपया ध्यान दें वह चिन्ह के रूप में विशुद्ध धर्मशिक्षा के साथ नहीं आ रहा है। करिश्माई इस पद्धति या नमूने में सही बैठते हैं। चिन्ह और चमत्कार क्यों? क्योंकि इस तरीके के दो कारण हैं। चिन्ह और चमत्कारों का परीक्षण सदैव भावुकता से होता है, और शैतान भी इन्हें दे सकता है। इस कारण धर्मशिक्षा पर जोर नहीं दिया जाता। दूसरा कारण भी सरल है, उसे यहूदियों को मूर्ख बनाना है कि वही मसीहा है। बिना चिन्ह और आश्चर्यकर्मों के वे तुरंत पहचान लंगे कि वह झूठा है। स्वर्ग के राज्य का यहूदी सुसमाचार चिन्ह और चमत्कारों के द्वारा पूरी तरह प्रमाणित किया गया था। जब आप पवित्र शास्त्र के पदों की तुलना करते हैं, आप अन्य कोई निष्कर्ष नहीं निकाल सकते, केवल यह तथ्य कि करिश्माई आंदोलन वर्तमान समय में मार्ग बना रहा है जिसमें चिन्ह और आश्चर्य चिन्हों (चमत्कारों) के साथ साथ वे धर्मशिक्षा की दृष्टि से दिवालिया हो चुके सभी धर्मों के साथ मेल करके उन्हें 'झूठे चिन्ह और चमत्कारों' की छतरी के नीचे स्थापित कर रहे हैं। अब संभवतः पौलुस के लेखन में दी गयी सबसे खतरनाक चेतावनी पर विचार करे। (पद 10) ये लोग क्यों नाश हो रहे हैं? 'क्योंकि उन्होंने सत्य के प्रेम को

ग्रहण नहीं किया कि वे उद्धार पायें।' यहां यह नहीं कहा गया है कि उन्होंने सत्य को ग्रहण नहीं किया। यहां उनका पाप 'सत्य का प्रेम' ग्रहण न करना है। कितनी बार मैंने यह सुना है मुझे परवाह नहीं कि बाइबल क्या करती है, मुझे पता है मैंने कैसा अनुभव किया, इस कारण, वे जो सत्य से अधिक भावनाओं को महत्व देते हैं, वे वास्तव में बहुत, बहुत बड़े खतरे में हैं। क्यों? 'परमेश्वर उन्हें भ्रम में डाल देगा कि वे असत्य (झूठ) पर विश्वास कर लें' जब सत्य का इन्कार किया जाता है तब परमेश्वर निर्णय करने में निष्क्रिय नहीं रहता। इस बात का क्या अर्थ है? इसका सीधा और सरल अर्थ है कि बहुतों ने पवित्र शास्त्र के सत्य का इन्कार किया और वे भ्रम में इतने अधिक लिप्त हैं कि ख्रीष्ट विरोधी का तंत्र जिसका अब आरंभ हो चुका है वह कलीसिया के उठाये जाने के बाद भी निर्बाध रूप में जारी रहेगा।

2 कुरिन्थियों 11:13-15

13 क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित और धूर्त कार्यकर्ता हैं, तथा मसीह के प्रेरित होने का
सा रूप धारण करते है।

14 इसमें कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि शैतान भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण
करता है।

15 इसलिए यदि उसके सेवक भी धार्मिकता के सेवक होने का रूप धारण करते हैं तो
इसमें कोई आश्चर्य नहीं, और उनका अन्त उनके कार्यों के अनुसार होगा।

GOSPEL'S POWER & MESSAGE

PAUL WASHER

"Praise God for the gospel and books like this that help us know, understand, and love it more deeply."

- Voddie Baucham -

ALETHIA Publications

For more information please call 9561912734, or visit our website:
www.alethiabooks.com

If You Bite & Devour One Another

Alexander Strauch

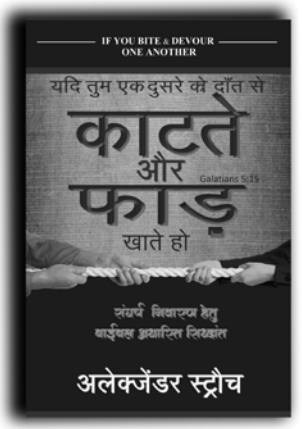

Conflict is all too common where two or more people are present. The church is no different. If You Bite & Devour One Another is perhaps the only Christian book of its kind dealing with conflicts in the church.

ALETHIA Publications

For more information please call 9561912734, or visit our website:
www.alethiabooks.com

Biblical Eldership

Alexander Strauch

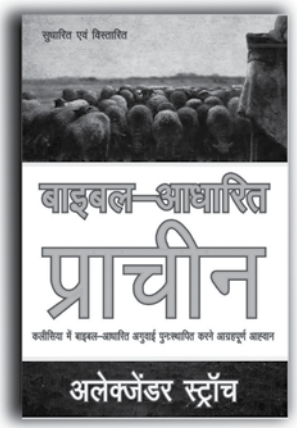

Do you want a Biblical Church? It all starts with Biblical leadership. With over 200 000 English copies sold, this comprehensive look at the role and function of elders/pastors shows us from scripture how your church can achieve this.

ALETHIA Publications

For more information please call 9561912734, or visit our website:
www.alethiabooks.com

THE GOSPEL CALL & TRUE CONVERSION

PAUL WASHER

"In *The Gospel Call and True Conversion*, Paul Washer brilliantly and clearly helps the reader understand truth, carefully opening the Scriptures and explaining how the power of the gospel ought to impact our lives as Christians."

Greg Gilbert, author & senior pastor of Third Avenue Baptist Church

ALETHIA Publications

For more information about our publications, or to order, please visit our website:
www.alethiabookshop.com